महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री कयामतनामा (बड़ा)

श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री कयामतनामा (बड़ा)

खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमिनो कयामत आई ।
केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ॥ १

महामति श्रीप्राणनाथजीने महाराजा छत्रसालसे कहा, स्वयंको श्रेष्ठ समुदाय (खास उमत) में कहने वालों (औरङ्गजेब आदि) से जाकर कहो; हे मोमिनो ! उठो, कयामतका समय आ गया है. मैं तुम्हारे समक्ष कुरानके अनुसार कयामतका विवरण दे रहा हूँ.

जो कोई खास उमत सिरदार, खडे रहो होए हुसियार ।
वसीयतनामे देवें साख, अग्यारैं सदी होसी बेबाक ॥ २

जो स्वयंको श्रेष्ठ समुदायके शिरोमणि कहते हैं, वे सतर्क होकर खड़े हो जाएँ. मक्कासे भेजे गए वसीयतनामोंने साक्षी दी है कि ग्यारहवीं सदीमें सभी जीवोंका हिसाब-किताब चुकता कर दिया जाएगा.

बरकत दुनियां और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान ।
ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान ॥ ३

मक्काकी दरगाहसे आए हुए वसीयतनामामें यह विवरण है कि जिब्रील

फरिश्ता यहाँसे दुनियाँको मिली विश्वासकी शक्ति (बरकत), कुरानका महत्त्व एवं सन्तों (फकीर) का आशीर्वाद आदिको लेकर अपने स्थान भारतवर्ष चला जाएगा.

और तिन दिन होसी अंधा धुंध, द्वार तोबा के होसी बंध ।
कह्या होसी और रबेस, तब कोई किसी का नाहीं खेस ॥ ४

हदीस आदि ग्रन्थोंकी भविष्यवाणीके अनुसार कयामतके समयमें चारों ओर अन्धाधुन्धी छा जाएगी अर्थात् विभिन्न धर्मावलम्बियोंकी रूढ़ीवादी आस्थामें खलबली मचेगी. प्रायश्चित्त (क्षमा माँगनेसे अपराधसे मुक्ति मिल जाने) का द्वार बन्द हो जाएगा अर्थात् कर्मकाण्ड (शराअ) का महत्त्व नहीं रहेगा. लोगोंकी रीति-भाँतिमें अन्तर पड़ेगा. उस समय कोई किसीका मित्र नहीं रहेगा (ब्रह्मज्ञानके कारण संसारका मोह भङ्ग हो जाएगा).

अब कहोजी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कह्या ।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस ॥ ५

अब कहो, कयामतके सङ्केत प्रकट होनेमें क्या शेष रह गया है. सभी सङ्केत प्रकट हो गए हैं. कुरानके अठ्ठाईसवें सिपारेमें लिखा है, उस समय चालीस वर्ष तक ईसा रूहअल्लाहका साम्राज्य चलेगा.

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान ।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन ॥ ६

उस समय क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सभी एक ही स्थान (निष्कलङ्क बुद्ध) पर विश्वास लाएँगे. मक्कामें कुरानके प्रति आस्था उठ जानेका क्या परिणाम होगा. इस बात पर हृदयपूर्वक विचार करो.

[मक्कासे उठकर कुरानका भारत वर्षमें आ जानेका तात्पर्य कुरानके गूढ़ार्थ भारतमें खुलना है.]

नव सै नब्बे हुए बितीत, तब हजरत ईसा आए इत ।
सो लिख्या अग्यारहें सिपारे माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें ॥ ७

रसूल मुहम्मदके पश्चात् नौ सौ नब्बे वर्ष व्यतीत होने पर सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (हजरत ईसा) भारत वर्षमें प्रकट हुए. कुरानके ग्यारहवें

सिपारेमें इस प्रसङ्गका उल्लेख है. मैं उससे विरूद्ध बात नहीं कर रहा हूँ.

रूहअल्ला पेहेने जामें दोए, ए लिख्या कुरानमें सोई होए ।
ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखेवाला जाए देखे ताहें ॥ ८

कुरानमें यह उल्लेख है कि श्रीश्यामाजी (रूहअल्लाह) इस जगतमें प्रकट होकर दो शरीर धारण करेंगी. छठे सिपारेमें यह विवरण दिया है जिसको इस पर सन्देह हो वह वहाँ पर देख सकता है.

ए जो वरस ईसा की कही, तिनकी तफसीर कर देऊं सही ।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही वरस चालीस ॥ ९

ईसा रूहअल्लाहके साम्राज्यकी जो बात कही है उसका विवरण भी स्पष्ट कर देता हूँ. ग्यारहवीं शताब्दीके अन्तिम दस वर्ष एवं बारहवीं शताब्दीके प्रारम्भके तीस वर्ष इस प्रकार कुल मिलाकर चालीस वर्ष पर्यन्त सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (ईसा रूहअल्लाह) का साम्राज्य कहा गया है.

सत्तर वरस और जो रहे, सो तो पुल सरात के कहे ।
मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी भी घोडेकी भांत ॥ १०

बारहवीं शताब्दीके शेष सत्तर वर्षको पुलेसिरात (तलवारके धार सदृश तीक्ष्ण मार्ग) के वर्ष कहा गया है. इस समय ब्रह्मात्माएँ बिजलीकी भाँति एवं ईश्वरीसृष्टि (मुतकी) घोड़ेकी भाँति दौड़ कर इसे पार करेंगी.

और जो जाहेरी उमत रही, दस विध तिनको दोजक कही ।
पुलसरात कही खांडे की धार, गिरें कटें नहीं पावें पार ॥ ११

शेष संसारी जीवोंको उनके कर्मानुसार दस प्रकारके नरकोंकी प्राप्ति होगी. पुलेसिरातका मार्ग तलवारकी धारके समान तीक्ष्ण है जो लोग अशुभ कर्म करते हैं वे इस पर गिर कर कट जाते हैं. वे इससे पार नहीं हो सकते.

अमेतसालुनमें कह्या ए, जाए देखो दीदे दिलके ।
ए जाहेर कह्या बयान, पर दिलके अंधे न सके पहेचान ॥ १२

कुरानके तीसरे सिपारेके प्रथम अध्याय अमेतसालुनमें यह प्रसङ्ग स्पष्ट उल्लेख है, अपनी अन्तर्दृष्टिको खोल कर उसे देख लो. वहाँ पर इसका स्पष्ट विवरण

है. किन्तु हृदयके अन्धे लोग उसकी पहचान नहीं कर सकते हैं.

दसईं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम ।
ए लिखा बीच सिपारे आम, तीसमां सिपारा जाको नाम ॥ १३

कुरानका तीसवाँ सिपारा जिसे अम्म सिपारा कहते हैं, वहाँ पर यह स्पष्ट उल्लेख है कि मुहम्मदी दसवीं शताब्दीमें ईसा रूहअल्लाह एवं ग्यारहवीं शताब्दीमें इमाम महदी प्रकट होंगे तथा बारहवीं शताब्दीमें सर्वत्र उनके ज्ञानका प्रकाश फैलेगा.

आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम ।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी ॥ १४

उस भविष्यवाणीके अनुसार ईसा, मुहम्मद एवं इमाम महदी सभी प्रकट हो गए हैं. अब सब कोई आकर उनको नमन करें. मात्र बाह्यदृष्टिसे उन्हें न देख कर अन्तर्दृष्टिसे हृदयपूर्वक उनके दर्शन करें (उनके मात्र बाह्यवेशको ही न देख कर अन्तरकी शक्तिको देखें).

अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद ।
सेजदे किए तिनें बेहद, सो सारेही हुए रद ॥ १५

जिस प्रकार अजाजील फरिश्ताने आदमके मात्र बाह्यशरीरको देखकर उसे नमन नहीं किया और खुदाके आदेशका उल्लंघन किया. इससे खुदाके समक्ष किए गए उसके असंख्य नमन निरर्थक सिद्ध हुए.

जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुवार ।
तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुसमन ॥ १६

आजाजीलने आदमकी बाह्य आकृतिको ही देखा. इसीलिए उसे धिक्कार मिली और वह अपमानित हुआ. उसे ज्ञात हुआ कि यह आदम ही मेरा शत्रु है तब उसने खुदासे अपने नमनका वरदान माँगा.

इनकी औलाद की मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारे में जाहेर कही ॥ १७

'मैं आदमके सभी वंशजोंको पथभ्रष्ट कर दूँ. उनके हृदय पर मेरा साम्राज्य

रहे.' इस प्रकार आदम और अजाजीलकी शत्रुता हुई. कुरानके आठवें सिपारेमें इसका स्पष्ट विवरण है.

फेर तुम लेत वाहीकी अकल, पर क्या करो तुम जो वाहीकी नसल ।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढत, वह दिल पर बैठा ले लानत ॥ १८

यह सब जानकर भी तुम उसीकी बुद्धिके अनुसार चल रहे हो. तुम कर भी क्या सकते हो. तुम भी तो उसीके वंशज हो. तुम नास्तिकतारूपी दज्जालको बाहर ढूँढ़ रहे हो. वह तो बहिश्तसे बहिष्कृत होकर तुम्हारे हृदयमें आकर बैठ गया है.

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिलके कान ।
हमेसा आवत हैं ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों ॥ १९

धर्मग्रन्थोंका मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करने पर यथार्थकी पहचान नहीं होगी. इसीलिए तुम हृदयके श्रवणसे मेरी बात सुनो. परमात्माकी शक्ति सर्वदा जिस रीतिसे आती रही है अभी भी उसी प्रकार प्रकट हुई है.

सब पैगंमर जहूद खिलके, विचार देखो दिदे दिलके ।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान ॥ २०

अन्तर्दृष्टिको खोलकर इस तथ्य पर विचार करो. पूर्वमें भी सभी पैगम्बर यहूदी समुदायमें अवतरित हुए हैं. इस समयमें भी वे हिन्दुओंमें प्रकट हो गए हैं जिनको तुम नास्तिक (काफर) कहते हो.

तुम ढूंढो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें ।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सब की करसी सिफात ॥ २१

तुम अपनी जाति (मुस्लिमों) में उन्हें ढूँढ़ रहे हो किन्तु तुम्हारे समुदायमें परमात्मा अवतरित नहीं हुए हैं. जिस हिन्दू जातिको तुम नास्तिक कहते हो वही सभी जीवोंकी अनुशंसा (सिफारिश) कर उन्हें बहिश्तमें पहुँचाएगी.

रब्ब ना रखे किसी का गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान ।
परदा लिख्या हजरत के रूह पर, तिन की क्या तुम को नहीं खबर ॥ २२

परमात्मा किसीका गर्व सहन नहीं करते. वे तो विनम्र (गरीब) लोगों पर

दया करते हैं. कुरानमें उल्लेख है कि जब परमात्मा सद्‌गुरुके रूपमें इस जगतमें प्रकट होंगे उस समय उनके मुख पर परदा होगा. क्या इस प्रसङ्गकी जानकारी तुम्हें नहीं है ?

[पूर्वकालमें भी याकूबके वंशजोंको गर्व हुआ कि पैगम्बर उन्हींकी जातिमें अवतरित होते हैं इसलिए रसूल मुहम्मद इस्माईल परिवारमें आए. इस प्रकार खुदाने उनके गर्वका हनन किया. इसी प्रकार रसूल मुहम्मदके अनुयायी यह समझते हैं कि परमात्मा हमारे समुदायमें ही प्रकट होंगे किन्तु वे हिन्दुओंमें प्रकट हुए. इस प्रकार उनकी गर्वयुक्त अवधारणा असत्य सिद्ध हुई.]

परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओ मांहे, ए पढे इसारत समझत नाहें ।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर ॥ २३

कुरानमें उनके अवतरण पर मुख पर परदा होनेका उल्लेख इसीलिए हुआ है कि उनका अवतरण हिन्दुओंमें होना है. लोग कुरानको तो पढ़ते हैं किन्तु उसके सङ्केतोंको समझ नहीं पाते. जो लोग मात्र शब्दोंकी मात्राओं (जेर-जबर) पर ही विचार करते हैं वे यथार्थताको कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

ऐसी हिंदुओंकी कही सिफात, आखर हिंदुओंमें मुलक नबुवत ।
और आप हजरत रसालत पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह ॥ २४

कुरान और हदीस ग्रन्थोंमें हिन्दुओंकी महिमा इस प्रकार गाई गई है कि अन्तिम समयमें सभी अवतार उनमें प्रकट होंगे और भारतभूमि अवतारोंकी भूमि कहलाएगी. स्वयं रसूल मुहम्मद भी यहूदी सन्तोंमें शिरोमणि रहे हैं इसी प्रकार श्रीप्राणनाथजी ब्रह्मात्माओंके शिरोमणि हैं.

पांचमें सिपारे एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान ।
और हिंदवी किताबों में यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही ॥ २५

कुरानके पाँचवें सिपारेमें यह वर्णन है. जो इस बात पर विश्वास नहीं करते हैं वे कुरानको खोलकर देखें. इसी प्रकार हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें भी उल्लेख है कि बुद्ध निष्कलङ्क अवतार होंगे.

सो आए के करसी एक रस, मसरक मगरब होसी वस ।
कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निवेर ॥ २६

वे अवतरित होकर सबको एक रस करेंगे तब पूर्व और पश्चिमकी ओर मुख कर उपासना करने वाले हिन्दू अथवा मुस्लिम सभी उनकी शरणमें आएँगे. इस प्रसङ्गको लेकर कतिपय लोग सन्देह करेंगे कि क्या दोनों (बुद्धनिष्कलङ्क एवं इमाम महदी)एक ही समयमें एक साथ प्रकट होंगे ? उनके सन्देहका भी निवारण कर देते हैं.

ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी न पाइए सुध ।
घोडे को लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर ॥ २७

जागृत बुद्धिके ज्ञान (तारतम ज्ञान) से ये सङ्केत स्पष्ट होते हैं. सद्गुरुके मार्गदर्शनके बिना इन रहस्योंकी सुधि प्राप्त नहीं होती है. विभिन्न मनीषियोंने घोड़ेको ही कल्कि (कलंकी) कहकर लिखा है, उस पर आरोहण करने वाले (बुद्ध निष्कलङ्क) की सुधि किसीको भी नहीं हुई है.

जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुग को करसी निकंद ।
अंजीर कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक ॥ २८

ज्योतिषियोंने भी यही भविष्यवाणी की है कि विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलङ्क अवतरित होकर सम्पूर्ण आसुरी वृत्तियों (कलियुग) को निर्मूल करेंगे. बाईबिलमें भी कहा है कि श्रेष्ठ ईसा पुनः प्रकट होकर सत्य (धर्म) की स्थापना करेंगे.

जहूद कहें मुसा बडा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए ।
यों सारोंने रसम जुदी कर लई, सबे बुजरकी धनी की कही ॥ २९

यहूदी भी यही कहते हैं कि अन्तिम समयमें मूसा अवतरित होंगे. उनके हाथोंसे सभीको मुक्ति प्राप्त होगी. इस प्रकार सभी लोगोंने अपने-अपने धर्मग्रन्थोंकी भविष्यवाणीको लेकर उसे समझनेकी रीति भिन्न-भिन्न मानी है किन्तु यह सम्पूर्ण कथन बुद्ध निष्कलङ्कके रूपमें अवतरित पूर्णब्रह्म परमात्माके लिए है.

ओ उरझे जुदे नाम धर, रब्ब आलम का आया आखर ।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब ॥ ३०

इस प्रकार परमात्माके अवतरणके विषयमें उनके अलग-अलग नाम लेकर सभी लोग उलझे रहे. विश्व ब्रह्माण्डके स्वामी परब्रह्म परमात्मा इस अन्तिम समयमें प्रकट हो गए हैं. उनके उपदेश अनुसार सभी लोग अपने-अपने धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट समझ रहे हैं. अब कोई भी किसीसे भिन्न नहीं रह गया है.

सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख ।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाए के दिए ॥ ३१

सभी धर्मग्रन्थोंने परमात्माके अवतरणकी साक्षी दी है. इसलिए विभिन्न भाषाओंमें उनके भिन्न-भिन्न नाम लिखे गए हैं. अब ब्रह्म (तारतम) ज्ञानने सत्य और असत्यको अलग-अलग स्पष्ट कर माया एवं ब्रह्मकी यथार्थ पहचान करवा दी है.

दोनों जहान में थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन ।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन ॥ ३२

हिन्दू अथवा मुस्लिम दोनों समुदायोंमें उलझनें बढ़ी हुईं थीं. दोनों ही कर्मकाण्ड अथवा शराअके मार्ग पर चल रहे थे. बुद्ध निष्कलङ्कने प्रकट होकर तारतम ज्ञानके द्वारा धर्मग्रन्थोंके यथार्थ ज्ञान एवं विज्ञान (मारिफत) को प्रकाशित किया जिससे पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त निर्मलता छा गई.

ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप ।
ग्वाही खुदाकी खुदा देवें, करें बयान हुकम सिर लेवें ॥ ३३

उन्होंने आकर इस ब्रह्माण्डमें प्रचलित विरुद्ध भावनाओंका निवारण किया एवं सभी समुदायोंका मिलन करवाया. कुरानमें कहा है कि परमात्माकी साक्षी स्वयं परमात्मा देते हैं. इस प्रकार परमात्मास्वरूप सद्गुरुका आदेश लेकर महामति श्रीप्राणनाथजी यह विवरण दे रहे हैं.

सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत ।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अरस अजीम के द्वारे ॥ ३४

कुरानमें यह उल्लेख है कि उस समय सभी समुदायके लोग उनको अपने परमात्मा समझ कर उनकी पूजा करेंगे. यह समय आ गया है. तीसरे सिपारेमें यह उल्लेख है कि परमात्मा प्रकट होकर पारके द्वार खोल देंगे.

लैलत कदर के तीन तकरार, तीसरे फजरमें कारगुजार ।
रूहों फिरस्तों वजूद धरे, लैलत कदरके माहें उतरे ॥ ३५

कुरानमें महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीन खण्डोंका उल्लेख है. उसके तीसरे खण्डमें प्रभातका उदय होने पर कयामतके सम्पूर्ण वचन सिद्ध होंगे. इस समय ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि नश्वर तन धारण कर इस रात्रिके तीनों खण्डोंमें अवतरित हुई हैं.

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार ।
हुकम दिया साहेबे इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥ ३६

इन दोनों श्रेष्ठ समुदायों (ब्रह्मसृष्टि एवं ईश्वरीसृष्टियों) में हजार महीने पर्यन्त परमात्माकी कृपाकी वर्षा हुई है. परमात्माने इनको ही अपना आदेश दिया है, जिसके कारण सृष्टिके समस्त जीव इनके संरक्षणमें अखण्ड मुक्ति प्राप्त करेंगे.

[हजार महीने तक परमात्माकी कृपाकी वर्षका तात्पर्य तारतम ज्ञान एवं तारतम सागररूपी ब्रह्मवाणीके अवतरणसे है.]

यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलनामें एह बयान ।
तीसरे तकरारकी भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर ॥ ३७

इस प्रकार कुरानकी कितनी साक्षी दें. इन्ना इन्जुल्ना नामक अध्यायमें यह विवरण है. महिमामयी रात्रिके तीसरे खण्डमें ब्रह्मज्ञानके प्रभातका वर्णन है जो ग्यारहवीं सदीके लिए कहा गया है. अपनी अन्तर्दृष्टि खोलकर इस पर विचार करो.

और पेहेले सिपारे में जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी ।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहीए सोए ॥ ३८

कुरानके प्रथम सिपारेमें जो कुछ उल्लेख है क्या उसे तुमने नहीं देखा ? खुदाने 'हो जा' (कुन) कह कर जिस सृष्टिकी रचना की है वह जिसके लिए की गई है उसकी साक्षी जो दे उसीको श्रेष्ठ समुदायका कहना चाहिए.

अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित ।
उडाए गफलत हो सावधान, छोडो पढोंका गुमान ॥ ३९

अब जो लोग स्वयंको श्रेष्ठ समुदायमें-से समझते हैं वे इस(कुन)की साक्षी दें ताकि कुरानमें निर्दिष्ट बात सत्य सिद्ध हो जाए. अब अज्ञानरूप भ्रान्तिको छोड़ कर सचेत हो जाओ और कुरानके शब्दज्ञानके अहङ्कारको छोड़ दो.

हकुलयकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए ।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब ॥ ४०

जो लोग परमात्माके प्रति आस्था रखनेवाले और ब्रह्मज्ञान सुनते ही विश्वास करने वाले होंगे वे ही सर्वप्रथम इस समयमें अवतरित परमात्माके प्रति आस्था प्रकट करेंगे. बादमें तो परमात्माके अवतरणकी बात सर्वत्र प्रकट हो जाएगी तब तो सभी लोग उन पर विश्वास कर लेंगे.

भिस्त दोजक जाहेर भई, नफा किसी को न देवे कोई ।
ले हिरदें हादीके पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥ ४१

अब मुक्तिस्थल (बहिश्त) एवं नरक (दोजक) दोनोंका स्पष्ट विवरण हो चुका है. प्रायश्चित्तके द्वार बन्द होने पर किसीको भी कोई लाभ नहीं पहुँचा पाएगा. छत्रसाल अपने सद्गुरुके चरणोंको हृदयमें धारण कर यह घोषणा कर रहे हैं.

प्रकरण १ चौपाई ४१

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम ।
दूजे तो इसारत कही, इत हुजत काहू की ना रही ॥ १

कुरानको एक तो अल्लाहकलाम (ब्राह्मीवचन) कहा गया है. इसलिए उसके

मात्र बाह्य अर्थोंका ग्रहण करनेसे कार्य सिद्ध नहीं होता. दूसरा उसमें सङ्केतोंके द्वारा ज्ञान दिया गया है इसलिए कोई भी उसको यथार्थ रूपमें समझनेका दावा नहीं कर सकता.

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर ।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें ॥ २

तीसरा उसमें विभिन्न अध्यायोंमें अलग-अलग रूपमें गूढ़ बातें कही गईं हैं. इसलिए चौदह लोकोंके जीव उसका मर्म समझनेमें सक्षम नहीं हुए. कुरानकी इन कड़ियोंको एक दूसरसे मिलाकर मोतियोंमें पिरोना है (मोती स्वरूपा ब्रह्मात्माओंको उसका गूढ़ार्थ समझाना है). यह कार्य करनेका दायित्व स्वयं परमात्माके बिना अन्य कोई नहीं ले सकता.

केहेलावें काजी पढे कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान ।
ना कुरान ना आप चिन्हार, एहेल किताब यों कहावें दीनदार ॥ ३

अनेक लोग कुरान पढ़ कर स्वयं काजी कहलाते हैं. किन्तु उन्हें अल्लाहके रसूल तथा उनके समुदायकी पहचान नहीं है. उनको न कुरानके गूढ़ अर्थ अवगत हैं और न ही स्वयंकी पहचान है. कुरानके ऐसे तथाकथित उत्तराधिकारी स्वयंको धार्मिक समझते हैं.

जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर ।
ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई ॥ ४

जो लोग मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण करते हैं वे अज्ञानरूप अन्धकारमें रहते हैं, कुरानमें ऐसे लोगोंको बार-बार धिक्कारा गया है क्योंकि वे उसके ज्ञानके प्रकाशके छिपानेका प्रयत्न करते हैं. उनके हृदयमें बैठा हुआ दुष्ट इब्लीसने उनको यही सिखाया है.

दिल पर दुसमन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह ।
हुए हिरस हवाके बंदे, किए सैताने देखीते अंधे ॥ ५

ऐसे लोगोंके हृदयमें दुष्ट इब्लीसका साम्राज्य है. उसने सदैव धर्मका मार्ग अवरुद्ध किया है. इसलिए ये लोग मोह-माया तथा कामनाओंके दास बने

हुए हैं. दुष्ट इब्लीसने उन्हें आँखों वाले होते हुए भी अन्धेके समान बना दिया है.

सब अंगों बैठा दुसमन जोर, दिलके दीदे दिए फोर ।
दुसमनें न छोड्या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर ॥ ६

ऐसे लोगोंके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें दुष्ट इब्लीसका आधिपत्य है. उसने इनकी अन्तर्दृष्टिको नष्ट कर दिया है. इस दुष्टने कोई स्थान नहीं छोड़ा है. चौदह लोकोंमें सर्वत्र इसीका शासन चल रहा है.

उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फिरस्तोंकी इत ।
जिनमें इमाम हुआ आखरी, हिन्दू फकीरोंमें पातसाही करी ॥ ७

एक ब्रह्मात्माओंका समुदाय ही इसके प्रभावसे मुक्त हुआ है. दूसरा ईश्वरीसृष्टियोंका समुदाय भी इससे बचा हुआ है. इसी समुदायमें अन्तिम (कयामतके) समयके धर्मगुरु प्रकट हुए हैं और वे धर्मके प्रति समर्पित हिन्दू भक्तों (ब्रह्मात्माओं) के हृदयके सम्राट बने हुए हैं.

देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबोंका दिया भान ।
ल्याया नहीं जो यकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन ॥ ८

उन्होंने तौरात और कुरानका मार्ग प्रशस्त करते हुए कलश और सनन्ध ग्रन्थके द्वारा उपदेश दिया और सभीके हृदयकी भ्रान्तिको मिटा दिया. जिन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया वे नरककी अग्निमें जलकर शुद्ध होकर सत्यधर्ममें प्रविष्ट हुए.

जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर ।
कराया सबों को सेजदा, जाहेर किया जो साहेब हैं सदा ॥ ९

इन चौदह लोकोंमें चारों ओर अज्ञानरूप अन्धकार छाया हुआ था. ऐसेमें सद्गुरुने प्रकट होकर नास्तिकता एवं उद्दण्ड प्रवृत्तियोंको मिटा कर जन्म और मृत्युके विपरीत चक्रसे मानवोंको मुक्ति दिलाई. उन्होंने अखण्ड अविनाशी पूर्णब्रह्म परमात्माके स्वरूपको प्रकट कर सभी जीवोंको उनके चरणोंमें नमन कराया.

खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई ।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही ॥ १०

उन्होंने ब्रह्मात्माओंके श्रेष्ठ समुदायको अक्षरातीत परमधाममें पहुँचाया और दूसरे समुदाय ईश्वरीसृष्टिको अक्षरधाममें पहुँचाया. तीसरी सृष्टि नश्वर जगतके जीवोंको अक्षरब्रह्मकी दृष्टि (हृदय) में अङ्कित कर अखण्ड किया.

भिस्तां बांट दइयां इन विध, काम सबोंके किए यों सिध ।
कहे छता पेहेलें जो ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान ॥ ११

इस प्रकार उन्होंने सभीको विभिन्न मुक्तिस्थलोंमें पहुँचा दिया और सबके कार्य सिद्ध किए. छत्रसाल कहते हैं, इन सद्गुरुके चरणोंमें जो सर्वप्रथम निष्ठा व्यक्त करेंगे उनको ही श्रेष्ठ समुदायमें समझना चाहिए.

प्रकरण २ चौपाई ५२

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे ।
कहे मके के काफर, आराम करते बीच घर ॥ १

कुरानके चौथे सिपारेमें उल्लेख है, परब्रह्म परमात्माके परमधामके सभी सुख उनकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंको प्राप्त हैं किन्तु जो लोग मक्काको खुदाका घर मानते हैं एवं उसके उत्तराधिकारी होनेका दावा करते हैं वे नास्तिक कहलाते हैं. उनको धर्मकी कोई चिन्ता नहीं है इसलिए वे अपने घरोंमें सुख चैनसे बैठते हैं (विहारीजी चाकला मन्दिरको ही सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजका घर मान कर स्वयंको उसके उत्तराधिकारी मानते हैं. उनको धर्मके प्रचार-प्रसारके प्रति चिन्ता नहीं है).

जो पूजें मके के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर ।
और जिनको खुदाएकी पेहेचान, सहें दुख न छोडें ईमान ॥ २

जो लोग परमात्मासे विमुख होकर मक्काके पत्थरकी पूजा करते हैं, उन्होंने उसीको सत्य मान लिया है. किन्तु जिनको परमात्माकी पहचान है वे सांसारिक दुःख कष्टोंका सहन करते हुए उनके प्रति विश्वास भङ्ग होने नहीं देते हैं. (जो लोग पाषाणकी भाँति कठोर हृदयवाले विहारीजीको ही सच्चे सद्गुरु मानकर उनकी पूजा करते हैं उन्होंने उनको ही परमात्मास्वरूप सद्गुरु

माना है किन्तु जिनको श्रीप्राणनाथजीके अन्दर ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुकी पहचान हुई है वे दुःख कष्टोंको सहन करते हुए भी उनका साथ नहीं छोड़ते हैं.)

तिनकी तसल्लीके कारन, महंमद को हुआ इजन ।
और इसलाम कहे दुरवेस, कही खास उमत इन भेस ॥ ३

उन धर्मनिष्ठ आत्माओंको विश्वास दिलानेके लिए रसूल मुहम्मदको खुदाका आदेश प्राप्त हुआ. कुरानमें जिनको इस्लामका दरबेस अर्थात् खुदासे प्रेम करनेवाले फकीर कहा गया है, उन श्रेष्ठ आत्माओंने वही वेश धारण किया है. (जो ब्रह्मात्माएँ श्रीप्राणनाथजीके साथ चली हैं. उनको विश्वास दिलानेके लिए श्रीप्राणनाथजीको तारतमसागररूप ब्रह्मवाणीके उपदेशका आदेश प्राप्त हुआ. इन ब्रह्मात्माओंको ही जगतसे विमुख एवं परमात्माके प्रति उन्मुख श्रेष्ठ आत्माओंका समुदाय कहा गया है).

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम ।
कोई कर ना सके भेव, जो महंमदको देवें फरेब ॥ ४

कुरानमें इस प्रकार कहा है, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओंको धर्मके प्रति निष्ठा रखनेकी इच्छा होती है जो लोग रसूलके वचनोंका मर्म (रहस्य) नहीं समझ सकते हैं वे उनको धोखा देते हैं. (ब्रह्मात्माएँ धर्मके प्रचार प्रसारकी भावना रखतीं हैं किन्तु जो लोग श्रीप्राणनाथजीके वचनोंका रहस्य समझते नहीं हैं वे उनको चमत्कारी कहकर दोष देते हैं.)

बीच आवें जाएं सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर ।
काफर होए सिताबी दूर, मोमन साहेब के हजूर ॥ ५

धर्मगोष्ठियोंमें ऐसे व्यापारी लोग भी आते हैं जो सांसारिक नश्वर वस्तुओं अर्थात् चमत्कार प्राप्त करना चाहते हैं. ऐसे अविश्वासी लोग शीघ्र ही धर्म मार्गसे दूर हट जाते हैं जबकि ब्रह्मात्माएँ सदैव अपने धनीके चरणोंमें रहतीं हैं.

सो काफर पडे माहें दोजक, आखर को जो ल्यावें सक ।
जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार ॥ ६

ऐसे अविश्वासी लोग नारकीय यातनाओंको भोगते हैं जो अन्तिम समयमें

अवतरित परमात्माके प्रति सन्देह करते हैं. जो ब्रह्मात्माएँ धर्ममें सचेत रहतीं हैं वे परमात्माके प्रति अपना विश्वास कम न हो इस लिए डरती रहतीं हैं.

बीच आखरत के बुजरकी, हुई है इस उमतकी ।
सांची गिरो जो हैं हक, तहां बाग भिस्त बुजरक ॥ ७

कुरानमें उल्लेख है कि क्यामतके समयमें ऐसी आत्माओंके समुदायको महत्ता प्राप्त होगी. परब्रह्म परमात्माकी अङ्ग स्वरूपा इन सत्य आत्माओंको परमधामके श्रेष्ठ वन-उपवनोंका आनन्द प्राप्त है.

दूध सेहेतकी नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तलें ।
हैं इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदाकी मेहेरबानी ॥ ८

परमधामके वन-उपवनमें वृक्षोंके नीचे दूध और मधु (शहद) की नदियाँ बहतीं हैं. परमात्माके प्रति समर्पित आत्माओंको उनका आतिथ्य एवं अपार कृपा प्राप्त होती है.

जहां विध विधकी हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त ।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेबके हजूर ॥ ९

दिव्य परमधाममें मेवा-मिष्टान्न आदि विभिन्न अलौकिक सम्पदाएँ हैं. ब्रह्मात्माएँ अक्षरब्रह्म द्वारा निर्मित नश्वर जगतके खेलको देखकर धामधनीके चरणोंमें रहती हुई इन सुखोंका अनुभव करेंगी.

जो हमेसा दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाएके ।
और जाहेद जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदार की कस्त ॥ १०

जो अखण्ड परमाधामकी आत्माएँ हैं वे सर्वदा परमात्माके चरणोंमें रहतीं हैं. बाह्य आचरण वाले नश्वर जगतके जीव भी ब्रह्मधामके सुखोंकी चाहना रखते हैं. अनुरागिणी आत्माएँ नश्वर जगतमें भी अपने प्रियतम धनीके दर्शनके लिए प्रयत्न करतीं हैं.

जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार ।
जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार ॥ ११

जिन आत्माओंको कुरानमें श्रेष्ठ कार्य करनेवाली कहा है, उनको कयामतके

समयमें अवतरित सद्गुरुमें परमात्माके दर्शन प्राप्त हुए हैं. जो उनके आदेशका पालन करती हुई चलतीं हैं उन श्रेष्ठ आत्माओंके समुदायको शिरोमणि कहा है.

ए जो कहीं किताबें तीन, तिनपर है हक का यकीन ।
सिफत जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाए का डर ॥ १२

जो तीन पुस्तकें (अंजील, तौरात एवं कुरान) ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी कही गई हैं, उनमें परमात्माके प्रति विश्वास रखनेका उपदेश दिया है. उनमें अन्तिम समयमें आनेवाले पैगम्बरकी प्रशंसा लिखी गई है और यह भी कहा है कि तुम सदैव परमात्माका डर रखते रहना.

अंजीर तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान ।
जो हबसे का पातसाह, पाई इन किताबों से राह ॥ १३

अंजील तौरात और कुरान इन तीनों ग्रन्थोंमें खुदाका सन्देश आया है. कुरानमें जिनको हब्साका बादशाह कहा है वे श्रीप्राणनाथजी हैं. उनके द्वारा अभिव्यक्त रास, कलश एवं सनन्ध आदि धर्मग्रन्थोंसे ब्रह्मात्माओंको परमधामका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है.

इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद ।
जो कहे दोस्त साहेब महल, नजीक खुदाए के खासे फैल ॥ १४

जो ब्रह्मात्माएँ इन धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको समझनेकी अभिलाषा रखतीं हैं उनको ही धर्मका गूढ़ रहस्य प्राप्त होता है. जिन आत्माओंको परमात्माके मित्र कहा है एवं जिनके हृदयमें परमात्माका सिंहासन है, वे ही परमात्माकी निकटताका अनुभव कर शुभ कार्योंमें प्रवृत्त होतीं हैं.

सबद न छोडे ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद ।
वास्ते नेकी आखरत, कबूं न छोडें खास उमत ॥ १५

ये ब्रह्मात्माएँ नश्वर जगतके सुखोंकी अवहेलना करते हुए अपने मार्गदर्शक श्रीप्राणनाथजीके वचनोंको ग्रहण करना नहीं छोड़तीं हैं. अन्तिम समयमें इन ब्रह्मात्माओंको बड़ा लाभ प्राप्त होना है. इसलिए ब्रह्मात्माएँ अपने सद्गुरुके चरणकमलको कदापि नहीं छोड़तीं हैं

अदा हुए सब फरज, तब सिरसे छूट्या करज ।
खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी ॥ १६

श्रीप्राणनाथजीसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर ब्रह्मात्माएँ कर्मकाण्ड आदि लोक धर्मसे निवृत्त हुईं. उनसे कर्मकाण्डरूपी लोक व्यवहारका ऋण छूट गया. इन्होंने इन लौकिक सम्पदाओंके स्थान पर परमधामकी अपनी अखण्ड सम्पदा प्राप्त की है. इसलिए इनको बड़ी प्रसन्नता होगी.

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाएके हिसाब ।
सब बंदगी एही मोमन, जो अंदर के मारे दुसमन ॥ १७

परमात्माके समक्ष इन ब्रह्मात्माओंके कर्तव्योंका लेखा तत्काल किया जाएगा. ब्रह्मात्माओंकी पूजा ही यही है कि वे अन्तरके काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दुर्गुणरूपी शत्रुओंको मिटा देतीं हैं.

एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत ।
आप रखो पांउं उस्तवार, मैदान लडाई हो हुसियार ॥ १८

मैंने तुम्हें (कुरानके चौथे सिपारेकी) यथार्थता स्पष्ट की है. अब परमात्माकी प्राप्तिका मार्ग (उनका आदेश) स्वीकार करो. परमधामके मार्ग पर चलनेके लिए प्रेम, सेवाके द्वारा दृढ़तापूर्वक कदम रखो. इस मार्ग पर चलते हुए रुकावट डालनेवाले गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके साथ सतर्कतापूर्वक युद्ध करो.

ए जो बैठा माहें सबन, एही खुदाए का है दुसमन ।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर ॥ १९

सब लोगोंके हृदयमें बैठा हुआ दुष्ट इब्लीस सभीका शत्रु बनकर परमात्मा प्राप्तिके मार्ग पर चलने नहीं देता है. नास्तिक लोग कितने ही शोर मचाएँ किन्तु ब्रह्मात्माओं पर उनका वश नहीं चलता है.

बाजे नजीक अरज निमाज, और डरें नहीं हुकम अवाज ।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाए का तुम राखो डर ॥ २०

अनेक लोग ऐसे हैं जो परमात्माके निकट पहुँचनेके लिए पूजा एवं प्रार्थना करते हैं. किन्तु उनके आदेशसे नहीं डरते हैं. कुरानमें इस प्रकार कहा गया है, नमाज भी पढ़ो और खुदाका भय भी रखो.

फुरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए ।
जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों यों कह्या दिल धर ॥ २१

जो लोग परमात्माके आदेशका पालन करते हैं वे तत्काल जन्ममृत्युके बन्धनसे मुक्ति प्राप्त करते हैं. जिन्होंने कुरानके गूढ़ रहस्य समझ लिए हैं ऐसे सद्गुरुने यह बात हृदय पूर्वक कही है.

नफसों से करो सबर, मारो हिरस हवा परहेज कर ।
दिलसे द्रढ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर ॥ २२

सभी धर्मग्रन्थोंका आदेश है कि इन्द्रियोंके विषयोंके प्रति संयमित रहो. संयम पर चलते हुए मोह एवं तृष्णाका परित्याग करो. आत्मसन्तुष्टिमें हृदयपूर्वक दृढ़ रहो तभी तुम्हारी भक्ति परमात्मा तक पहुँच सकेगी.

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेंती सलामत ।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम ॥ २३

जो लोग परमात्माकी उपासना करते हैं परमात्मा उनको नश्वर आपदाओंसे बचाए रखते हैं. यदि तुम अपनी आत्माको परमात्मासे मिलाना चाहते हो तो अन्तिम समयमें अवतरित सद्गुरुके न्यायको शिरोधार्य करो.

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तवारी जो बुजरक ।
लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निषेद ॥ २४

परमात्माके अतिरिक्त अन्य मिथ्या वस्तुओंको स्वयंसे दूर करो एवं श्रेष्ठ धर्ममार्ग पर दृढ़तापूर्वक कदम रखो. जब तुम निषिद्ध एवं त्याज्य वस्तुओंसे दूर होकर निर्मल हो जाओगे. तभी तुम परब्रह्म परमात्माकी कृपाके रहस्यको समझ पाओगे.

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब ।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब ॥ २५

परमात्मा और तुम्हारे बीच यह पाञ्चभौतिक देह ही परदा स्वरूप है. इसी देहमें यह आत्मा बँधी हुई है. स्वयंको परमात्मा पर समर्पित कर देनेसे

अनेक प्रकारके लाभ प्राप्त होते हैं. इसीसे परब्रह्म परमात्माकी अपार सम्पदा प्राप्त होती है.

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए ।
छोडो नाचीज जो कमतर, तार्थें फना होऊ बका पर ॥ २६

यदि तुम अखण्ड परमधामका सुख चाहते हो तो स्वयं (अहंभाव) को मिटा दो. इस प्रकार अहंका विसर्जन किए बिना कोई भी अखण्डको प्राप्त नहीं कर सकता है. इसलिए तुम संसारिक तुच्छ वस्तुओंका मोह छोड़ दो और अखण्ड परमधामके मार्ग पर समर्पित हो जाओ.

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन ।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ॥ २७

आज तक कुरानके गूढ़ रहस्य छिपे हुए थे. उन्हें कोई भी खोल नहीं पाया था. छत्रसाल कहते हैं श्रीप्राणनाथजीने प्रकट होकर कुरानके उन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर दिया है.

तीसरे सिपारे बडा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर ।
सो महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥ १

कुरानके तीसरे सिपारेमें एक प्रसङ्ग है जिसमें इमाम और सुलतानकी बात कही गई है. महमूद गजनवी नामका सुलतानने उस प्रसङ्गको अपने ऊपर घटाया. वह जब इमाम (फकीर) से मिला तब लोगोंको बड़ा आनन्द हुआ.

लागन हिंदू मुसलमान, महमूद गजनवी सुलतान ।
ढाए हिंदूओं के खाने बुत, दिलमें इमाम की जारत ॥ २

महमूद गजनवी सुलतानके समयमें हिन्दू और मुसलमानोंके बीच वैमनस्यता थी. इसलिए उसने हिन्दुओंके मन्दिरों और मूर्तियोंको तोड़ा. उसके मनमें इमामसे मिलनेकी चाहना थी.

अपने जमाने था उस्तवार, कुतब औलियों का सिरदार ।
बंदगी माहें था बडा, सफ तलेकी रेहेता खडा ॥ ३

कुरानमें जिस सुलतानकी बात की गई है वह अपने समयमें अपने कार्यमें दृढ़ था. इतना ही नहीं वह कुतब (खुदाका स्मरण करने वाला), औलिया (खुदाके मित्र) जैसे श्रेष्ठ आत्माओंका भी शिरोमणि कहलाता था. खुदाकी बन्दगीमें सदैव तत्पर रहता था अपार विनम्रताके कारण वह सभीके पीछे खड़ा रहता था.

तलब द्वा फातियांओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर ।
फकीर सुलतान सों बातें भई, तब यकीन आया सही ॥ ४

वह बड़े प्रेमसे खुदाकी प्रार्थना करता था और चाहता था कि उसे खुदासे महत्ता–श्रेष्ठता (अजमंतिसा) का अवसर प्राप्त हो. जब उसकी चर्चा फकीर (इमाम) से हुई तब उसको उन पर विश्वास हुआ.

इमामे कह्या यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर ।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कै सेहेर बजार ॥ ५

उस समय इमामने उसे कहा, क्या मेरे लिए घरसे कुछ भेंट लेकर आए हो ? तब उसने कहा, मैं आपको मदीना शहरके बाजार, गलियाँ आदि पाँच हजार कोशकी वस्ती रूप भेंट समर्पित करता हूँ.

एक हजार सात सै हाथी, लाख घोडे सूरमें साथी ।
एती आए के पेसकसी करी, ओढके पुरानी कमरी ॥ ६

उस समय उसने एक हजार सात सौ हाथी, एक लाख घोड़े एवं शूरवीर सेनाओंको इमामके चरणोंमें समर्पित किया. इतनी भेंट उपहार समर्पित कर वह पुराना कम्बल ओढ़ कर विनम्र होकर खड़े हो गया.

आप होएके नंगे पाए, तले की सफमें खडा आए ।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बखसीस ॥ ७

स्वयं नङ्गे पाँव होकर राजमदका त्याग कर वह इमामके अनुयायियोंकी

पीछली पङ्क्तमें जाकर खडा हो गया. उसने बड़ी विनम्रतासे अपना सिर झुकाया और कहा, आप मुझ पर अपना अनुग्रह प्रदान करें.

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ ।
दुनियां थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया ॥ ८

उसने इमामसे पुनः यह भी कहा, आप मुझे धैर्य प्रदान करें एवं फकीरोंके समुदायमें सम्मिलित करें. तब इमामने उसे लौकिक कार्योंसे निवृत्त कर अपने फकीरोंमें सम्मिलित किया.

तो अजमंतिसामें सही, गजनवी को बखसीस भई ।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भांन देऊं सबन ॥ ९

इस प्रकार कुरानकी आयत अजमंतिसाके प्रसङ्ग अनुसार गजनवी सुलतानको खुदाका अनुग्रह प्राप्त हुआ. इस घटना पर विचार करो कि वे इमाम कौन हैं एवं वह सुलतान कौन है ? अब मैं तुम्हें इस सन्देहका निवारण कर देता हूँ.

[कुरानके तीसरे सिपारेमें एक सुलतान एवं इमामका प्रसङ्ग है. महमूद गजनवीने उस प्रसङ्गको स्वयं पर घटाते हुए खुदाका अनुग्रह प्राप्त करनेके लिए अनेक मन्दिरोंको तोड़ा. जब वह इमामसे मिला तब उसे अपने कृत्य पर पश्चात्ताप हुआ. छत्रसालजीका कहना है कि कुरानका यह प्रसङ्ग कयामतके समयकी घटनाकी ओर सङ्केत करता है. उन्होंने श्रीप्राणनाथाजीसे अपनी भेंटको उक्त प्रसङ्ग माना. उन्होंने श्रीप्राणनाथजीके चरणोंमें अपना तन, मन सब कुछ समर्पित किया.]

देऊं कुरान की साहेद, बिना फुरमान न काढों सबद ।
छठे सिपारे में एह सनंध, ईसा नुस्खेका खावंद ॥ १०

मैं कुरानकी साक्षी देकर कहता हूँ, उसकी साक्षीके अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं करूँगा. कुरानके छठ्ठे सिपारेमें इस प्रकार उल्लेख है कि ईसा रूहअल्लाह मन्त्र (नुस्खा) के स्वामी कहलाएँगे.

और साहेदी देऊं तीसरी, एहेल किताबें दिलमें धरी ।
दस और एक सिपारा जित, एह सबद लिखे हैं तित ॥ ११

अब मैं कुरानकी तीसरी साक्षी दे रहा हूँ. ग्यारहवें सिपारेमें उल्लेख है कि कुरानके उत्तराधिकारी (ब्रह्मात्माएँ) उसके गूढ़ रहस्योंको समझ सके.

बरस नव सै नबे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब ।
रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल ॥ १२

रसूल मुहम्मदके प्रयाणके बाद नौ सौ नब्बे वर्ष व्यतीत होने पर ब्रह्मात्माओंका समुदाय अवतरित हुआ. उनके साथ श्रीश्यामाजी भी अवतरित हुई. उन्होंने दूसरा शरीर (जामा) धारण किया अर्थात् वे श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें विराजमान हुई,

बंदगी ए करसी कबूल, एक की हजार देवें इन सूल ।
ए दूजा जामा ईसे का होए, बातून माएने पाइए सोए ॥ १३

अब वे सबकी प्रार्थनाको स्वीकार करेंगी और एक प्रार्थनाके बदले एक हजार प्रार्थनाओंका फल प्रदान करेंगी. कुरानमें ईसा रूहअल्लाह द्वारा दूसरा शरीर धारण करनेका उल्लेख है. बाह्यार्थको छोड़ कर गूढ़ार्थ ग्रहण करनेसे ही उसका तात्पर्य समझा जा सकता है. (रूहअल्लाहका दूसरा वस्त्र धारण करनेका तात्पर्य श्रीश्यामाजीके द्वारा श्रीदेवचन्द्रजीके पश्चात् श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें विराजमान होना है.)

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुस्खा जहूर ।
नव सै नबे नव मास ऊपर, ए नुस्खा लिया मिसल मातबर ॥ १४

चौथी साक्षी नूरनामाकी देते हैं. वहाँ पर रूहअल्लाहके द्वारा प्रदत्त मन्त्रके प्रकाशका वर्णन है. रसूल मुहम्मदके पश्चात् नव सौ नब्बे वर्ष एवं नौ मास व्यतीत होने पर रूहअल्लाह प्रकट होंगे उनके द्वारा श्रेष्ठ आत्माएँ मन्त्र प्राप्त करेंगी. [तदनुरूप श्रीदेवचन्द्रजी महाराज प्रकट हुए और उन्होंने ब्रह्मात्माओंको तारतममन्त्र प्रदान किया.]

असराफील इत बीच इमाम, ए नुस्खे इलम की किताबें कलाम ।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुस्खा सिताब ॥ १५

इस्त्राफील फरिश्ताने इमामके साथ आकर उक्त मन्त्रके साथ-साथ ज्ञानवचनोंके ग्रन्थ (तारतमसागर) का विस्तार किया. एक बार धर्म-चर्चाके समय परमात्माके आवेशने प्रेरणा दी कि यह ज्ञान (औरङ्गजेब तक) शीघ्र पहुँचाओ.

[अक्षरब्रह्मकी बुद्धिने श्रीप्राणनाथजीके साथ अवतरित होकर तारतम ज्ञानका विस्तार किया. एक दिन धर्मचर्चाके समय पर श्रीप्राणनाथजीको अन्तरसे प्रेरणा हुई और उन्होंने लालदासको कहा तुम जाकर औरङ्गजेबको तारतम ज्ञानके अवतरणकी सूचना दो. उस समय लालदासजीने कुरानको खोल कर प्रसङ्ग देखा तो उसमें सोलहवें सिपारेमे मूसा पैगम्बरने फेरून बादशाह पर विजय प्राप्त किया हुआ प्रसङ्ग निकला. तब श्रीप्राणनाथजीने लालदासको आदेश दिया, अब तुम बुद्धजीके अवतरणका प्रसङ्ग छत्रसालको समझाओ. वस्तुतः कुरानके चौथे सिपारेमें उल्लेखित महमूद गजनवी सुलतान और इमामका प्रसङ्ग श्रीप्राणनाथजी एवं छत्रसालका प्रसङ्ग है.]

महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुस्खा हासिल करे परवान ।
जब नुस्खा उनने सही किया, पंद्रह रोज सामें आएके लिया ॥ १६

उस समय ऐसा अनुभव हुआ कि महमूद गजनवी सुलतानकी भाँति तेजस्वी वीर महाराजा छत्रसाल हैं, वे तारतम ज्ञानको प्राप्त कर उसको प्रमाणभूत मानेंगे. उनको मन्त्र प्रदान करनेका समय आनेसे पन्द्रह दिन पूर्व ही उनके भतीजे देवकरणने सामनेसे आकर तारतम ज्ञान ग्रहण किया एवं छत्रसालकी बात की.

तब अव्वल आखरकी मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान ।
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुस्खा करे विख्यात ॥ १७

तब पहलेसे चले आ रहे सुन्दरसाथ एवं छत्रसालके साथ आए हुए राजकुलके लोग एक साथ सुन्दरसाथमें सम्मिलित हुए. वहाँ पर हिन्दू और मुसलमान सभी मिलकर श्रीप्राणनाथजीकी शरणमें रहने लगे. अन्य अनेक

जातियाँ भी उनमें सम्मिलित हुईं. सभी मिलकर तारतमज्ञानका प्रकाश फैलाने लगे.

केतोंक अपना किया कुरबान, करे निछावर बुजरक जान ।
इत पांच सै जुलजुलाटहू, संग रसूल के असलू रूह ॥ १८

अनेक लोगोंने श्रीप्राणनाथजीको सर्वश्रेष्ठ समझ कर उनके चरणोंमें स्वयंको समर्पित कर दिया. इस समय श्रीप्राणनाथजीके साथ पाँच सौ तेजस्वी ब्रह्मात्माएँ थीं.

ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत ।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुस्खा हुआ साफ ॥ १९

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है, जब ऐसे तेजस्वी आकृति वाले लोग प्रकट होंगे तब समझना कि कयामतका समय आ गया है. (वस्तुतः यह वही समय था) निश्चित अवधि पर ब्रह्मात्माओंको तारतम वाणीका आहार प्राप्त हुआ है. कुरानमें यह भी उल्लेख था कि उस समय इमामने सुलतानके सभी अपराधोंको क्षमा कर दिया और वह सुलतान इमामसे ज्ञान प्राप्त कर पवित्र हृदय कहलाया. (श्रीप्राणनाथजीने छत्रसालको क्षमादान दिया और छत्रसाल श्रीप्राणनाथजीसे तारतम ज्ञान प्राप्त कर निर्मल हृदय ब्रह्मात्मा कहलाए.)

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद ।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए ॥ २०

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि उस समय बारह हल्क (हजार) आत्माएँ जो बन्धनमें पड़ी हुई थी, को मुक्त कर मायासे छुटकारा दिलाया गया और लाखों रत्नों देकर उनको आनन्दित किया गया. (श्रीप्राणनाथजीने बारह हजार ब्रह्मात्माओंको मायाके बन्धनोंसे मुक्त किया और परमधामकी सम्पदा प्रदान कर उन्हें आनन्दित किया.)

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुस्खे भई सिफात ।
हवेलियां जो थीं बैरान, सो किया खडियां हुए मेहेरबान ॥ २१

इतना ही नहीं उन्होंने अनुदानके रूपमें पचास हजार उपवन (परमधामके वन-उपवनका सुख) प्रदान किए. तारतम ज्ञानकी कृपासे ब्रह्मात्माओंकी

प्रशंसा हुई. उन आत्माओंकी शरीररूपी हवेलियाँ निर्जन पड़ी हुई थीं अर्थात् जो आत्माएँ शरीरमें प्रसुप्त अवस्थामें थी उनको तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत कर उन पर अपार अनुकम्पा प्रदान की.

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही ।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम ॥ २२

कुरानमें यह प्रसङ्ग सङ्केतमें दिया है मैं उसीको यहाँ स्पष्ट कर रहा हूँ. संसारके विद्वान् लोग इन प्रसङ्गोंका विवरण तो देते हैं किन्तु उनका तात्पर्य समझे बिना अनर्थ करते हैं.

तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरान के पेहेले हो गए ।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक ॥ २३

तुम लोग कुरानको पढ़कर उसके बाह्य अर्थको ग्रहण करते हो और कहते हो कि ये सारी घटनाएँ पहले हो चुकी हैं. जिस समयको कुरानमें अज्ञानरूपी अन्धकार कह कर निरस्त कर दिया है उस समयके साथ उन रहस्योंको जोड़नेकी भूल क्यों कर रहे हो ?

ए जो इमाम गजनवी का मजकूर, लिख्या आखरत को होसी जहूर ।
सो मजकूर कहें होए गया, जो जाहेर कयामत में कह्या ॥ २४

कुरानमें इमाम एवं गजनवी सुलतानका जो प्रसङ्ग उल्लेख किया है, वह अन्तिम समयमें होनेवाली घटनाकी ओर सङ्केत करता है. अज्ञानी लोग कहते हैं कि यह घटना हो चुकी है. इसके लिए कुरानमें स्पष्ट कहा है कि वह घटना कयामतके समयमें घटेगी.

उमी आप पढें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान ।
काजी कजा पर आया आखर, खोल दिल दीदे देखो नजर ॥ २५

कुरानमें यह भी कहा है कि उस समय उम्मी (लौकिक चातुर्यसे अनभिज्ञ) लोग कुरान पढ़ेंगे. बाह्य अर्थको ग्रहण करनेवाले लोग अन्दरके कानोंको खोलकर यह बात सुने, इस अन्तिम समयमें परमात्मा न्यायाधीश होकर प्रकट हो गए हैं, अपनी अन्तर्दृष्टि खोलकर उनके दर्शन कर लो.

ल्याओ यकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल ॥ २६

छत्रसाल कहते हैं, इन परमात्माके प्रति विश्वास करो. क्योंकि वास्तविक ब्रह्मात्माएँ पवित्र हृदयसे उनके दर्शन कर कृतकृत्य हो रहीं हैं.

प्रकरण ४ चौपाई १०५

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर ।
आरफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान ॥ १

नूरनामा नामक ग्रन्थमें रसूल मुहम्मदके ज्ञानके प्रकाशका वर्णन है. अनेक मुसलमान स्वयंको कुरानके ज्ञाता कहलाते हैं किन्तु उसका हार्द (रहस्य) समझ नहीं पाते हैं.

महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊं पेहेचान ।
इन मुरग ने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल ॥ २

वहाँ पर रसूल मुहम्मदको आकाशका मुर्ग कहा है. मैं तुम्हें इस कथनका रहस्य भलीभाँति स्पष्ट कर दूँ. उस मुर्गेने निर्मल जलमें स्नान कर अपने पङ्ख धोए हैं.

तिन मुरगने झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर ।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगांम दिए सिरदार ॥ ३

जब उस मुर्गने अपने पङ्ख झटके तब उनसे गिरनेवाली बूँदोंसे पैगम्बर उत्पन्न हुए. इस प्रकार एक लाख बीस हजार पैगम्बर उत्पन्न हुए जिन्होंने जन-जनको खुदाका सन्देश दिया.

कलाम अल्लाहकी तो एह नकल, देखो दुनियांकी अकल ।
महंमद को करहीं औरों समान, इन दुनियांकी ए पेहेचान ॥ ४

कुरानमें तो रसूल मुहम्मदके विषयमें इस प्रकार उल्लेख है किन्तु दुनियाँके लोगोंकी बुद्धिको तो देखो. उन्होंने मुहम्मदको भी अन्य पैगम्बरोंके समकक्ष माना. इन लोगोंको उनकी इतनी ही पहचान थी.

जो कहावें महंमद के बंदे, सो भी न चिन्हे हिरदे के अंधे ।
कहावे जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमद को औरों समान ॥ ५

जो लोग स्वयंको मुहम्मदके अनुयायी कहते हैं, वे भी हृदयके अन्धे हो गए

हैं. इसलिए उनके स्वरूपको पहचान न सके. स्वयंको मुसलमान कहलाने वाले लोग इस प्रकार मुहम्मदको अन्य पैगम्बरोंके समान गिनने लगते हैं.

ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्लाकी सुध ना परी ।
पेहेले कही जो तुम दिलमें आनी, तुम जो जानी मुसलमानी ॥ ६

बाह्य अर्थ ग्रहण करने वाले ये लोग इस प्रकार भूल करते हैं. उन्हें कुरानके गूढ़ रहस्यकी सुधि नहीं हुई है. रसूल मुहम्मदने जो कर्मका विधान बताया है तुमने उसीको इस्लाम धर्म मान लिया और उससे आगेका विचार ही नहीं किया.

पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमन ।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धर्या करज ॥ ७

जो व्यक्ति कुरानके बावन नियमोंका पालन करता है उसको ही तुम मोमिन समझते हो. वुजू (हाथ-पाँव धोना), नमाज (वन्दना), रोजा (व्रत) आदि कर्तव्योंको भी ऋणका भुक्तान समझते हो.

और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी ।
ए लानत लिखी मांहे फुरमान, सो बडी कर पकडी मुसलमान ॥ ८

स्वयंको मुसलमान समझने वाले इन लोगोंने (सुन्नत कराना जैसे) और भी कार्य किए हैं. देखो, उन्होंने अपने बाह्याचरणको ही कर्तव्य समझा है. कुरानमें जिसको अपराधका दण्ड माना गया है उसीको इन मुसलमानोंने अपना सबसे बड़ा नियम स्वीकार किया है.

सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए थे बद फैल काम ।
जिनों अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान ॥ ९

कुरानमें निर्दिष्ट कर्मविधानोंमें यह उल्लेख है कि इब्राहीम पैगम्बरने अपनी पत्नीको दिए हुए वचनोंको भङ्ग कर अनाचार किया. न्यायाधीशने उसे दण्ड दिया कि शरीरके जिन-जिन अङ्गोंसे पाप कर्म हुआ है, उन अङ्गोंको काटा जाए. (पैगम्बर होनेके कारण उसका दण्ड घटाया गया. जैसा कि टोपी, कुर्तेकी बाँह, पाजामेंका पहुँचा तथा इन्द्रियका अग्रभाग थोड़ा-थोड़ा काटा गया.)

इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढों सुंनत बडी कर लई ।
जिन लानत दई ऊपर तक्सीर, सो सोभा लई मुल्ला मीर पीर ॥ १०

इब्राहीमको तो उसके अपराधका दण्ड मिला था किन्तु कुरानके पढ़ने वालोंने उसी सुन्नत (इन्द्रिय छेदन) को विशेष धर्म मानकर उसे अङ्गीकार किया. अपराधके लिए दिए गए दण्डको भी मुल्ला, मीर अथवा पीर लोगोंने मिलकर धर्मके रूपमें स्वीकार किया.

ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याहीमें कर लई मुसलमानी ।
लानत करी ऊपरकी बानी, इनों सोई भली कर मानी ॥ ११

ये लोग खुदाके कहे हुए वचनोंका गूढ़ अर्थ समझ नहीं पाते और मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण करना ही अपना धर्म मानते हैं. कुरानमें तो उसके बाह्य अर्थको ग्रहण करनेवालोंको धिक्कारा गया है. किन्तु इन लोगोंने उसी बाह्य अर्थको सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य मान लिया है.

पढें आलम आरफ कहावें, पर एक हरफ को अरथ न पावें ।
मुखथें कहे किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार ॥ १२

कुरानको पढ़ कर बड़े-बड़े विद्वान् तो कहलाते हैं किन्तु एक शब्दका भी यथार्थ ग्रहण नहीं कर पाते हैं. ऐसे लोग अपने मुखसे तो कहते हैं कि हमने चारों कतेब ग्रन्थोंको पढ़ लिया है किन्तु जिनकी हृदयकी आँख ही नहीं खुली है वे उन ग्रन्थोंके अर्थों पर कैसे विचार कर सकते हैं.

तौरेत अंजीर और जंबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर ।
ए चारों उतरीया जिन पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर ॥ १३

कतेब परम्परामें जबूर, तौरात बाइबिल एवं कुरान ये चारों धर्मग्रन्थ जिनके द्वारा प्रकट हुए हैं उन चारोंको विशिष्ट पैगम्बर कहा है.

मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद ।
और आखरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद ॥ १४

मूसा, दाऊद, ईसा एवं मुहम्मद ये चारों यहूदियोंमें प्रकट हुए हैं. इन चारोंमें रसूल मुहम्मदको अन्तिम पैगम्बर कहकर पैगम्बरोंके अवतरणकी सीमा बाँध दी गई है.

मनसूख तीन कही ता मिने, फुरमान एक यों भने ।
समझे ना किताबों के तांईं, क्या लिख्या है माएनों माहीं ॥ १५

उक्त चारों ग्रन्थोंमें एक कुरान ग्रन्थ इस प्रकार कहता है कि उससे पूर्व प्रकट हुए तीनों ग्रन्थ निरस्त (रद्द) हो गए हैं. मात्र बाह्यार्थको ग्रहण करनेवाले लोग यह समझ नहीं पाए कि इस कथनका अभिप्राय क्या है ?

तौरेत लिखी ठौर बिसेक कही, जुदे जुदे नामों पर दई ।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इन पर इसलाम ॥ १६

कुरानमें तौरात ग्रन्थका बीस बार उल्लेख हुआ है. उसमें यह भी उल्लेख है कि भिन्न-भिन्न पैगम्बरोंको दिया गया ज्ञान इस ग्रन्थमें सङ्कलित है. उन ग्रन्थोंमें कुरानको खुदाके वचन कह कर इस प्रकार कहा है, कयामतके वचन इसीके आधार पर चरितार्थ होंगे.

अब को मनसुख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक ।
और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक ॥ १७

इन बाह्य अर्थ ग्रहण करने वाले लोगोंको निश्चय ही यह ज्ञात नहीं हुआ कि कौन-से ग्रन्थको निरस्त किया है और किसको सत्य प्रमाणित किया. मैं तुम्हें दूसरी सत्य बात कहता हूँ. उसके रहस्यको समझे बिना संशय नहीं मिट सकते हैं.

कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और ।
अब को अव्वल को कलाम आखरी, ए नीके तुम ढूंढो जाहेरी ॥ १८

कुरानमें यह भी कहा है कि खुदाने अपना ज्ञान चार स्थानों पर दिया है. अब किन ग्रन्थोंको पहले निरस्त किया गया और किसको अन्तमें सत्य प्रमाणित किया. तुम बाह्यार्थको ग्रहण करनेवाले लोग इस रहस्यको भलीभाँति जान लो.

[परमात्माका ज्ञान चार स्थानों पर आया इसका तात्पर्य यह है कि रसूल मुहम्मदके द्वारा कर्मका विधान, रूहअल्लाहके द्वारा धर्मग्रन्थके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेवाली कुञ्जी एवं इमाम महदी द्वारा यथार्थकी पहचान एवं उनके

मित्र ब्रह्मात्माओंके द्वारा जगतके जीवोंकी मुक्ति अभिप्रेत है.]

किसे कुरानके डारो तित, रद जमाने हो गए जित ।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखर ॥ १९

तुम लोग कुरानके उन घटनाओंको अतीतकी घटनाएँ मानते हो, जबकि वह समय अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण निरस्त माना गया है. जो घटनाएँ भविष्यमें ज्ञानका प्रकाश फैलाने वाली हैं उनको इस प्रकार बीती हुई क्यों कहते हो ?

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपरके माएने सो हारे ।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, ताको कहिए बे फुरमान ॥ २०

कुरानके अठारहवें सिपारेमें स्पष्ट लिखा है कि बाह्य अर्थ लेनेवाले लोग हार जाएँगे अर्थात् उनका सिर नीचा होगा. उनके हृदयमें स्थित दुष्ट इबलीस ही उनको मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करने देता है (गूढ़ रहस्योंको ग्रहण करने नहीं देता). उनको ही कुरानमें बेफुरमान (खुदाके आदेशसे विपरीत आचारण करने वाले) कहा है.

जो कोई होसी बे फुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान ।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सो जाहेरियों हिरदेमें रखी ॥ २१

जो लोग इस प्रकार खुदाके आदेशसे विपरीत आचरण करते हैं, उनको निश्चय ही नरकगामी समझना चाहिए. ऐसे लोगोंको विभिन्न स्थानोंमें धिक्कारा गया है. बाह्यदृष्टिवाले लोगोंने उन्हीं बातोंको अपने हृदयमें अङ्कित किया (इसलिए वे इमाम महदीके रूपमें प्रत्यक्ष प्रकट हुए परमात्माको नहीं पहचानते हैं).

अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों और में गिनो ।
गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान ॥ २२

अब मैं और कहने जा रहा हूँ, उसे सुनो. तुम मुहम्मदको अन्य पैगम्बरोंके समान क्यों समझते हो ? यदि तुम्हें कुरानका रहस्य समझमें आ जाता तो तुम मुहम्मदके समुदायकी पहचान कर पाते.

एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ।
सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर ॥ २३

पैगम्बर तो एक लाख बीस हजार हुए हैं, जिन्होंने परमात्माका श्रेष्ठ सन्देश दिया है. इन पैगम्बरोंमें-से अनेक सात कलमा (मन्त्र) वाले पैगम्बर हैं (जिन्होंने अपने अनुयायियोंको मन्त्र दिया) किन्तु उन सबके अनुयायी भी अवज्ञाकारी (काफिर) कहलाए.

उनों करी बेफुरमानी, ताथें गिरो सबोंकी रांनी ।
अमेतसालुन जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत ॥ २४

उन लोगोंने पैगम्बरोंके आदेशकी अवहेलना की. इसलिए उन सब पैगम्बरोंके समुदाय धिक्कारके पात्र हुए. कुरानके तीसवें सिपारेके अमेतसालुन अध्याय (सुरत) में इस प्रसङ्गका यथार्थ उल्लेख है.

महंमद की जो उमत भई, दस बिध दोजख तिनकों कही ।
यामे फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर ॥ २५

रसूल मुहम्मदके जितने अनुयायी हुए हैं, उनके लिए भी दस प्रकारकी नारकीय यातनाएँ लिखी गई हैं. इन अनुयायियोंके बहत्तर समुदाय इन यातनाओंको भोगने वाले कहे गए हैं, मात्र एक समुदायको ही परमात्माने अपनी शरणमें लिया.

कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही ।
वाही सूरत में कही पुल सरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात ॥ २६

विचार करो, कौन-से समुदायको परमात्माने अपनी शरणमें रखा और कौन-कौन-से समुदाय अवज्ञाकारी कहलाए ? उसी अमेतसालुन अध्यायमें पुलेसिरातकी चर्चा है. वह कौन-सा समुदाय था जो विजलीकी भाँति तीव्र गतिसे उसको पार कर गया ?

को निकसी घोडे ज्यों पार, और कौन कटी पुल सरात की धार ।
खास गिरो साहेबें सराही, गिरो दुजी पीछे लगी आई ॥ २७

कौन-सा समुदाय घोड़ेकी भाँति दौड़कर पार हो गया और कौन-सा समुदाय

पुलेसिरातकी तीक्ष्ण धारमें कट गया ? स्वयं परमात्माने ब्रह्मात्माओंके श्रेष्ठ समुदायकी प्रशंसा की है. उनके साथ लग कर दूसरा ईश्वरीसृष्टियोंका समुदाय भी पार उतर आया.

और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजखको चलाई ।
ऐसे उलमा सबहीं कहें, पर माएना बातून कोई ना लहें ॥ २८

जिस समुदायके हृदयमें बैठकर दुष्ट इबलीसने उनकी मतिको विपरीत कर दिया वह (जीवसृष्टियोंका)

समुदाय नरककी ओर धकेला गया. कुरानके विद्वान् (उलमा) कुरान पढ़ते हुए इन प्रसङ्गोंका उल्लेख करते हैं किन्तु इनके गूढ़ रहस्योंको ग्रहण ही नहीं करते.

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरफ ।
बिना मगज ना महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ्या कुरान ॥ २९

अठारहवें सिपारेमें भी ये वचन लिखे गए हैं कि गूढ़ अर्थोंको ग्रहण किए बिना विद्वान् लोग भी कयामतकी घड़ीको समझ नहीं पाते हैं. उन रहस्योंको समझे बिना उनको अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मदकी पहचान भी नहीं होगी और उनका कुरानका पढ़ना भी निरर्थक माना जाएगा.

बिना मगज न पाईए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान ।
एह वास्ता पाइए तब, मगज माएने खुलें जब ॥ ३०

रहस्योंको समझे बिना कुरानका तात्पर्य जाना नहीं जा सकता कि यह सन्देश किसके लिए आया है. यह अभिप्राय तभी समझा जा सकता है जब उसके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो जाएँगे.

खोल न सकें पढें अल्ला कलाम, सो खोलें उमी सब मेहेर इमाम ।
अव्वल एही बांधी सरत, खुलें माएने जाहेर होसी कयामत ॥ ३१

कुरानको पढ़नेवाले लोग आज तक उसके रहस्योंको स्पष्ट नहीं कर पाए. उनको तो भौतिक चातुर्य्यसे अनभिज्ञ प्रेमीजनों (उम्मी) ने स्पष्ट कर दिया क्योंकि उन पर सद्गुरु (इमाम) की अनुकम्पा रही है. कुरानमें पहलेसे ही

यह सङ्केत दिया था कि जब उसके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होंगे तब कयामतकी घड़ी आ जाएगी.

किन खोले न माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान ।
पढें आलम आरफ कै जन, पर एक हरफ न खोल्या किन ॥ ३२

आज तक कोई भी कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट नहीं कर पाया. सभी लोग यथार्थको प्राप्त किए बिना ही उसकी चर्चा करते रहे. अनेक विद्वान् इसका पठन-पाठन करते हैं किन्तु उसके एक शब्दका भी गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं कर पाते.

अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल ।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज क्यामत ॥ ३३

अब मैं उन रहस्योंको स्पष्ट कर देता हूँ और उनमें स्थित यथार्थताको स्पष्ट कर देता हूँ जिससे ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्य उदय होगा और ज्ञानके प्रकाशमें कयामतकी घड़ीकी पहचान होगी.

साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम ।
खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी ॥ ३४

कुरानमें यह भी साक्षी है कि एक दिन दुनियाँके सभी लोग एक ही धर्मको अङ्गीकार करेंगे. अब हकी स्वरूपने प्रकट होकर कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट कर दिए हैं. इसलिए अब मैं ब्रह्मात्माओंकी विशेषताओंका वर्णन करता हूँ.

लिख्या सब माएने बातन, सो हनोज लों ना खोले किन ।
सब खूबियां हैं बातन, खुलें मगज सबों भई रोसन ॥ ३५

कुरानमें ये सभी गूढ़ बातें सङ्केतमें कही गईं हैं. इसलिए आज तक कोई भी उनको स्पष्ट नहीं कर पाया. ब्रह्मात्माओंकी सभी विशेषताएँ रहस्यमयी हैं. उनके प्रकट होनेसे सर्वत्र ज्ञानका प्रकाश छा जाएगा.

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम ।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखर आए बीच जहूद ॥ ३६

कुरानकी पहली विशेषता यह है कि उसे परमात्माके वचन कहा गया है.

दूसरी विशेषता यह है कि उसमें ब्रह्मात्माओंकी महिमा लिखी है. तीसरी विशेषता रसूल मुहम्मदके तीन स्वरूपोंकी चर्चा लिखी है. स्वयं रसूल सभी पैगम्बरोंके अन्तमें यहूदी समुदायमें प्रकट हुए हैं.

रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी ॥ ३७

कुरानमें रसूल मुहम्मद, रूहअल्लाह एवं इमाम महदी इन तीनोंको एक ही कहा है. इनको ही तफ्सीर ग्रन्थोंमें बशरी, मलकी और हकी स्वरूप कहा है. ये तीनों परमात्माके प्रेमरूप अमृतको पिलानेवाले हैं.

आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम ।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए ॥ ३८

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि आदम, नूह, मूसा, इब्राहीम और अली आदि सभी पैगम्बर मिलकर इमाम महदीके साथ प्रकट होंगे. मुहम्मद और ईसा वे दोनों तो पहलेसे ही साथमें कहे गए हैं. इस प्रकार सातों कलमा वाले ये पैगम्बर यहाँ पर एकसाथ एकत्र हुए हैं.

[कलमावाले सात पैगम्बर इस प्रकार हैं : आदम-सफीअल्लाह, नूह-नबी अल्लाह, मूसा-कलीम अल्लाह, इब्राहीम-खलील अल्लाह, ईसा-रूह अल्लाह, मुहम्मद-रसूल अल्लाह एवं अली-वली अल्लाह.]

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर ।
सतरहें सिपारे यों कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया ॥ ३९

इस जगतमें जितने भी पैगम्बर हुए हैं उन सभीकी विशेषताएँ इमाम महदीमें एक साथ प्रकट हुई है. सत्रहवें सिपारेमें यह भी कहा है कि मुहम्मदके अतिरिक्त न कोई (परमधामसे) इस जगतमें आया है और न ही यहाँसे (परमधाम) गया है.

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे ।
सब पैगंमरो को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही ॥ ४०

अठारहवें सिपारेमें यह भी लिखा है कि सभी पैगम्बर मुहम्मदके नामसे ही

जाने जाते हैं. उन सभी पैगम्बरोंकी जितनी भी विशेषताएँ हैं वे सारी विशेषताएँ रसूल मुहम्मदके अन्तर्गत कही गईं हैं.

एह मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान ।
जो उठ खडा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत ॥ ४१

इस प्रकार कुरानका गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो गया है. हिन्दू अथवा मुसलमान सभी लोग ध्यानपूर्वक इसे सुनें. जो इन वचनोंको सुनकर सचेत हो जाएगा उसीको परमात्मा महत्ता प्रदान करेंगे.

कहे छता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर ॥ ४२

छत्रसाल कहते हैं, ब्रह्मज्ञानके प्रतापसे सभी ब्रह्मात्माओंका सम्बन्ध परमधाममें प्रकाशित हो जाएगा.

प्रकरण ५ चौपाई १४७

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतनसे वास्ते तुम ।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ॥ १

छत्रसाल कहते हैं, श्रीप्राणनाथजीने मुझे इस प्रकार कहा कि सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने उनको समझाते हुए कहा था, हे ब्रह्मात्माओ ! हम तुम्हारे लिए यह सन्देश ले आए हैं. तुम्हें जागृत करनेके लिए हमारा परमधामसे यहाँ आना हुआ है. कुरान आदि धर्मग्रन्थोंमें भी सर्वत्र तुम्हारी और हमारी बातें लिखी गईं हैं. उनको ध्यानपूर्वक देखना.

सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम ।
कही खास उमत महंमद, जाकी सिफतको न पोहोंचे सबद ॥ २

रसूल मुहम्मदने कुरानमें रूहअल्लाह और इमाम महदीको पवित्र कहा है. उसमें ब्रह्मात्माओंको श्रीश्यामाजीका विशिष्ट समुदाय कहा है. उनकी महिमा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती.

सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सबद न काढूं बिना फुरमान ।
या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस ॥ ३

मुझे श्रीप्राणनाथजीने इस प्रकार कहा, कुरानमें जो लिखा है मैं उसी प्रकार

कह रहा हूँ. ब्राह्मी आदेश (कुरान) के बिना मैं एक भी शब्द व्यक्त नहीं करूँगा. या तो मैं रसूल मुहम्मदके हदीस ग्रन्थोंकी साक्षी देकर कहूँगा. भला, इससे कोई सत्य समझे अथवा असत्य मानकर क्रोध करे.

दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक ।
अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत ॥ ४

इस प्रकार साक्षी देकर मैं सत्य बात कहूँगा. जिनको सन्देह हो वे कुरानको देख कर अपना सन्देह दूर कर सकते हैं. अब तक कुरानका कर्मविधान ही प्रकट हुआ था. अब श्रीप्राणनाथजीने उसके गूढ़ रहस्योंको यथार्थ रूपमें स्पष्ट कर दिया है.

अब सबमें जाहेर हुई क्यामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत ।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने ॥ ५

अब कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट होने पर उसके कथनानुसार कयामतकी घड़ी आ गई है. सोलहवें सिपारेमें इस प्रकार लिखा है कि सभी लोगोंने कर्ममार्ग (शराअ) को ही समझा. उससे आगे यथार्थ ज्ञान किसीको भी प्राप्त नहीं हुआ.

ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान ।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोडी अक्सा मसजिद ॥ ६

इन चौदह लोकोंके सभी जीव स्वर्गादि लोकों तकका ही चिन्तन करते हैं. जब तक रसूल मुहम्मद नहीं आए थे तब तक किसीने भी अक्सा मस्जिदको नमन करना नहीं छोड़ा था.

[इब्राहीम पैगम्बरने लोगोंको अक्सा मस्जिदका नमन सिखाया था किन्तु रसूल मुहम्मदने अक्साका नमन बन्द कराया. इस प्रकार महामति प्राणनाथने आकर विभिन्न देवी-देवताओंके प्रति किए जा रहे नमनको परमधामकी दिशा प्रदान की.]

और लिख्या म्याराजनामें माहीं, जब हुआ म्याराज रसूलके तांईं ।
रसूल चले पांउं सिर दे, संग एक जबराईल ले ॥ ७

मेयराजनामामें इस प्रकारका उल्लेख है जब रसूल मुहम्मदको खुदाके दर्शन

हुए उस समय वे अक्सा मस्जिदके सिर पर पाँव रखकर (पीठ देकर) जिब्रील फरिश्ताके साथ आगे बढ़े थे.

चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही ।
निराकार कहिए सुन, एही बेचुन बेचगुन ॥ ८

दर्शन होने पर उनको चौदह लोकों तथा उससे परे शून्य-निराकारकी सुधि हुई. जिनको शास्त्रोंमें शून्य-निराकार कहा है उसीको उन्होंने बेचूँ तथा बेचगूँ कहा है.

छोड याको आगे को गए, नूर बनमें दाखील भए ।
जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और ॥ ९

इन सबको छोड़ कर वे आगे गए और चिन्मय वनमें प्रवेश किया. जिब्रील फरिश्ता भी इसी अक्षरधाममें रुक गया. उससे भी परे अक्षरातीत परमधाम है.

आगे चल न सक्या क्योंए कर, नूर तजल्ली जलावे पर ।
तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही बिवेक ॥ १०

जिब्रील फरिश्ता अक्षरधामसे आगे किसी भी प्रकार नहीं जा सका और कहने लगा कि अक्षरातीतके तेजसे उनके पङ्ख जल रहे हैं. वहाँ पर एक रसूल मुहम्मद ही पहुँच पाए जिनको खुदाने सङ्केतोंमें अनेक बातें कही.

लिख्या दरिया मिठा मिसरीसे पाक, तित कह्या मुरग चोंचमें खाक ।
गिरो फिरस्तो करी इसारत, खाक बजूद नूर खिलकत ॥ ११

वहाँ पर यह भी उल्लेख है कि उस समय खुदाने मुहम्मदको अपनी कृपाका वह समुद्र दिखाया जिसका पानी मिश्रीसे भी मीठा था. उसके किनारे एक मुर्ग अपनी चोंचमें खाक लेकर बैठा था. इससे उनको यह सङ्केत दिया कि श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंने नश्वर खेल देखनेके लिए जगतमें मानव तन धारण किया. इसी प्रकार अक्षरब्रह्मकी तेजरूपा ईश्वरीसृष्टिने भी मानवतन धारण किया.

[इस समुद्रको खुदाकी कृपाका सागर कहा है. ब्रह्मात्माओंके इस जगतमें आनसे यह जगत अखण्ड हो गया. इसीके मोहरूपी सागरका मीठा होना

कहा है. श्रीराजजीके आदेश रूप वृक्ष पर बैठकर श्रीश्यामाजीका नरतन धारण करना ही मुर्गकी चोंच पर खाक कहा गया है.]

और कह्या देख दांहिनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों दिया, तेरी उमते गुनाह कर लिया ॥ १२

दूसरे सङ्केतमें रसूल मुहम्मदको आदेश दिया कि तू अपनी दायीं ओर देख. मोतीरूप आत्माओंके मुख पर मौनका ताला लगा हुआ है. तब रसूलने पूछा, इन आत्माओंके मुख पर यह ताला क्यों लगाया है ? तब खुदाने उनको कहा, तेरी आत्माओंने अपराध (नश्वरखेल देखनेकी इच्छा) किया है.

इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल ।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब ॥ १३

इन तालोंकी चाबी तेरे हृदयमें है. जब इनके ताले खुल जाएँगे (ये जागृत हो जाएँगी) तब तुम सब मिलकर परमधाम लौट आना. इस प्रकारकी ये सभी बातें कुरानमें सङ्केतमें बताई हैं किन्तु इन रहस्योंको वे ही समझ सकते हैं जिनको कयामतके समयके अवतार इमाम महदीकी उपाधि प्राप्त हुई है.

और कै बातें खुदाएसे करी, लिये नबे हजार हरफ दिल धरी ।
तीस हजार का हुआ हुकम,जाहेर करो दुनियांमें तुम ॥ १४

रसूल मुहम्मदने खुदासे अन्य भी अनेक बातें की और खुदाके द्वारा कहे गए नब्बे हजार शब्दोंको अपने हृदयमें धारण किया. उनमें-से उनको तीस हजार शब्दोंका ज्ञान जगतमें प्रकट करनेका आदेश प्राप्त हुआ.

और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार ।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखर इन पर है मुदार ॥ १५

अन्य तीस हजार शब्दोंका अर्थ प्रकट करना अथवा न करना यह तुम पर निर्भर है. शेष तीस हजार शब्दों पर कयामतकी घड़ी सुनिश्चित होनी है.

सो क्यामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान ।
अमेतसालूनमें एह बात, विध विध कर लिखी बिख्यात ॥ १६

अमेतसालून अध्यायमें यह बात विभिन्न प्रकारसे सङ्केतोंमें कही है कि जब

कुरानमें निर्दिष्ट ये वचन स्पष्ट हो जाएँगे तब निश्चित समझ लेना कि कयामतकी घड़ी आ गई है.

रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार ।
जिनकी इच्छासों फिरस्ता होए, बडा सबनका कहिए सोए ॥ १७

कुरानमें जिन बारह हजार ब्रह्मात्माओंका उल्लेख है उनकी महिमाका कोई पारावार नहीं है. उनकी इच्छासे ही इस्त्राफील फरिश्ता प्रकट हुआ है जो सभी फरिश्तोंमें श्रेष्ठ कहा गया है.

सो रूहें दरगाह के माहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें ।
सो रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल ॥ १८

जो आत्माएँ परमधामकी हैं उनके समान अन्य कोई भी परमात्माके निकट नहीं है. वे आत्माएँ मनुष्यकी आकृतिकी हैं, नश्वर जगतके अन्य मनुष्य उनके प्रतिबिम्बके समान हैं.

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंदसे उतारे ।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियांमें बिस्तरे ॥ १९

अठारहवें सिपारेमें भी इस प्रकार लिखा है कि परमात्माने इन आत्माओंको दिव्य परमधामसे इस जगतमें अवतरित किया है. इनके मन, वचन एवं कर्म ज्ञानके प्रकाशसे परिपूर्ण होंगे. वे जगतमें तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलाएँगी.

और जो अंधेरी से पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे ।
फिरे मनके फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर ॥ २०

जिन जीवोंकी उत्पत्ति शून्य-निराकारसे हुई है उनको ही अवज्ञाकारी कहा गया है. वे अपने मन पर स्थित इब्लीसके मार्गदर्शन अनुसार उलटे चक्रोंमें फिरते हैं. उनके कार्य एवं व्यवहार अज्ञानरूप अन्धकारसे प्रेरित होते हैं.

और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होएं न्यारे ।
फिरस्ते उतरे वास्ते कुरान, फिरस्तों ऊपर आया फुरमान ॥ २१

उसी अठारहवें सिपारेमें यह भी लिखा है कि ब्रह्मात्माएँ कुरानमें वर्णित अच्छे सिद्धान्तोंसे विचलित नहीं होंगी. ईश्वरीसृष्टियोंका अवतरण भी उन्हीं

(यथार्थ ज्ञानके) सिद्धान्तोंके अनुपालनके लिए हुआ है. स्वयं जिब्रील फरिश्ताके द्वारा कुरानका यह सन्देश आया हुआ है.

फौज फिरस्तोंकी भरी नूर, असराफिल बजावे सूर ।
और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान ॥ २२

जब इस्राफील फरिश्ताने ब्रह्मज्ञानकी दुन्दुभी बजाई तब सभी ईश्वरीसृष्टि (फरिश्तोंकी फौज) उसके प्रकाशसे ओत-प्रोत हो गई. कुरानके तीसवें सिपारे इन्नाइन्जुलना अध्याय (सुरत) में यह विवरण दिया है.

फिरस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनीका हक ।
उतरे लैलत कदर के माहें, तीन तकरार रात के जांहें ॥ २३

ईश्वरीसृष्टि भी श्रेष्ठ ब्रह्मात्माओंके निकट ही अक्षरधाममें पड़ोसीके रूपमें रहतीं हैं. वे भी धामधनीका आदेश प्राप्त कर ब्रह्मात्माओंके साथ महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीनों खण्डोंमें इस जगतमें अवतरित हुईं हैं.

रूहों फिरस्तों वजूद धरे, जोस धनिका ले उतरे ।
रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे ॥ २४

ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि धामधनीका जोश लेकर अवतरित हुईं हैं. उन्होंने इस जगतमें अवतरित होकर नश्वर तन धारण किया है. इस महिमामयी रात्रिको ब्रह्मज्ञानके प्रकाशसे परिपूर्ण कहा गया है, जिसमें श्रीश्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ अवतरित हुईं हैं.

एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर ।
तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फिरस्ते पैगंमर ॥ २५

इस महिमामयी रात्रिका प्रथम खण्ड हूद पैगम्बरके घर कहा गया है (उसे धर्मशास्त्रोंमें व्रजमण्डलकी संज्ञा दी है). दूसरा खण्ड नूह पैगम्बरकी नौका द्वारा आत्माओंको उपवनमें उतारना है (इसे शास्त्रोंमें रासकी लीला कहा है). तृतीय खण्ड यह जागनीका ब्रह्माण्ड है. जिसमें ब्रह्मात्माएँ, ईश्वरीसृष्टि तथा सभी पैगम्बर एक साथ अवतरित हुए हैं.

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार ।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥ २६

इस तृतीय खण्डमें एक हजार महीनेसे भी अधिक समय पर्यन्त परमात्माकी

कृपाकी वर्षा हुई है. इस जागनीलीलामें ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि शिरोमणि कहलाईं. जीवोंको मुक्ति देनेका दायित्व इनको ही प्राप्त हुआ. इनकी ही कृपासे सभी जीवोंने मुक्तिस्थलोंका सुख प्राप्त किया.

[हजार महीनासे अधिक समयका तात्पर्य श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजीका जीवन काल है. इसी समय तारतम ज्ञान मन्त्र एवं वाणीके रूपमें अवतरित हुआ.]

आखर मिलावा साहेब इत, रूहें फिरस्ते पैगंमर जित ।
याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित ॥ २७

आत्मजागृतिकी इस अन्तिम घड़ीमें इसी जागनी लीलामें सभी ब्रह्मात्माओंका अपने धनीके साथ मिलन हुआ है, जहाँ पर ब्रह्मात्माएँ, ईश्वरीसृष्टि तथा अवतारी पुरुष एकत्र हुए हैं. इसी सिपारेके छत्तीसवें अध्यायमें इस प्रकारका उल्लेख है, तुम उसे भलीभाँति समझनेका प्रयत्न करो.

तीन सरूप खुदाएके कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे ।
एक ब्रज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढापनमें भोर ॥ २८

कुरानमें खुदाके तीन स्वरूप (बाल, किशोर तथा प्रौढ़) कहे गए हैं. वे तीनों ही महिमामयी रात्रिके तीनों खण्डोंमें (व्रज, रास एवं जागनी इन तीनों लीलाओंमें) ब्रह्मात्माओंके साथ रहे हैं. इनमें व्रज लीलामें बाल स्वरूप, रास लीलामें किशोर स्वरूप एवं जागनी लीलामें प्रौढ़स्वरूप कहे गए हैं.

दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर ।
पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज माहें अंकूर ॥ २९

अन्य स्थान पर दो स्वरूपोंकी भी चर्चा की गई है. उनमें-से एक रसूल मुहम्मदके रूपमें कुरान लेकर तथा दूसरे रूहअल्लाहके रूपमें उसे स्पष्ट करनेकी कुञ्जी लेकर इस जगतमें अवतरित हुए हैं. इस प्रकार यहाँ पर पाँचों स्वरूप एकत्र हुए हैं. इनसे ही परमधामका बीजरूप ज्ञान अङ्कुरित होकर तारतम सागरके रूपमें फलित हुआ है.

वजूद आदमका जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक ।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान ॥ ३०

इनका स्वरूप सामान्य मनुष्योंकी भाँति पार्थिव दिखाई देता है किन्तु इनके

शरीरके पाँचों तत्त्व तथा पच्चीस प्रकृतियाँ अति पवित्र हैं. कुरानके आठवें सिपारेमें (इबलीस और आदमके प्रसङ्गमें) यह बात स्पष्ट लिखी है.

एह दजाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील ।
न करे सेजदा ऊपर आखरी आदम, फेर्‌या जाहेर कलाम अल्लाका हुकम ॥ ३१

कुरानमें जिस अजाजीलको दुष्ट कहकर सम्बोधित किया है, वह सभी मानवोंके हृदयका सम्राट बन गया है. इसीलिए इस जगतके मनुष्य अन्तिम समयमें मनुष्यके रूपमें अवतरित परमात्माके चरणोंमें नमन नहीं करते. ऐसे लोगोंने इन परमात्माके आदेशकी अवज्ञा की है.

माहें गया सबनको खाए, पढे ढूंढत जूदा ताए ।
जाहेरीयों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए ॥ ३२

यह दुष्ट सभीके हृदयमें बैठ कर उनको खा रहा है, किन्तु कुरानको पढ़ने वाले उसे बाहर ढूँढ़ते हैं. बाह्य दृष्टि वाले लोगोंको वह दिखाई नहीं देता है क्योंकि मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण करने पर वे भ्रमित हो जाते हैं.

दाभातल अर्ज माएने बातन, मुख आदमी का गधी तन ।
बातन माएने कही क्यामत, देखसी खुले हकीकत ॥ ३३

दाभातुल अर्जका तात्पर्य यह है कि उसकी आकृति मनुष्यकी है और शरीर गधेकी भाँति है. इसके गूढ़ रहस्यको जानने पर ही कयामतकी घड़ी जानी जाती है. इन गूढ़ प्रसङ्गोंका यथार्थ ज्ञान होने पर सभी लोग कयामतकी घड़ीको प्रत्यक्ष देखेंगे.

दजाल एक आंख जाहेरी, कै बिध तिनको लानत करी ।
नाहीं दजाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी ॥ ३४

कयामतके अन्य लक्षणोंमें एकाक्ष दज्जालका प्रकट होना कहा है जिसकी मात्र बाह्य दृष्टि होगी. कुरानमें उसको अनेक प्रकारसे धिक्कारा गया है. उसकी अन्तर्दृष्टि होगी ही नहीं जिससे परब्रह्म परमात्माकी पूर्ण पहचान हो सके.

खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुसमन जोरावर ।
पातसाही करे सबों के दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर ॥ ३५

दुष्ट इब्लीस शक्तिशाली बनकर सभी मनुष्योंके हृदयमें बैठा हुआ है. वह

उनकी अन्तर्दृष्टिको खोलने नहीं देता है. यह दुष्ट अनेक दुर्गुणोंको लेकर सबलोगोंके हृदयका सम्राट बना हुआ है.

दुसमन राह मारे इन हाल, भूले देखें जाहेरी दजाल ।
छठ्ठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर ॥ ३६

यह सभी मानवोंका शत्रु बनकर उनको इस प्रकार पथभ्रष्ट कर रहा है किन्तु भूले हुए लोग उसे बाहर ढूँढ़ते हैं. कुरानके छठ्ठे सिपारेमें इस सन्दर्भमें लिखा है, ईसारूहअल्लाह प्रकट होकर इस दुष्ट दज्जालका हनन करेंगे.

करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस ।
साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ्यो जस ॥ ३७

वे चालीस वर्ष पर्यन्त अपना राज्य करेंगे. उस समय समग्र जगतमें एकरसता छा जाएगी. तदनन्तर दसवर्ष ब्रह्मात्माओंकी महत्ताके हैं. तदुपरान्त चौदहलोकोंमें ब्रह्मज्ञानका प्रकाश विस्तृत होगा. [ग्यारहवीं सदीके अन्तिम दस वर्ष एवं बारहवीं सदीके प्रारम्भके तीस वर्ष इस प्रकार कुल ४० वर्ष ईसाके साम्राज्यके कहे गए हैं.]

अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें बिस्तरी ।
दुनियां दौड मिली सब धाए, छूट गए वरन भेष ताए ॥ ३८

ब्रह्मज्ञानके प्रकाशसे अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रकट होगा. चारों ओर उसका प्रकाश फैल जाएगा. जगतके जीव इस आनन्दको प्राप्त करनेके लिए दौड़ते हुए एकत्र होंगे. उनके वर्ण तथा वेश-भूषाका महत्त्व छूट जाएगा. इस प्रकार सभी लोग एकरस हो जाएँगे.

कह्यो न जाए धनिको विलास, पूरी साथ सकल की आस ।
लीला विनोद करसी हांस, ए सुख उमत लेसी खास ॥ ३९

इस प्रकार जागनी लीलामें धामधनीके आनन्द विलासका वर्णन नहीं किया जा सकता. उन्होंने सभी ब्रह्मात्माओंकी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं. परमधाममें जागृत होने पर भी वे सभी आत्माओंका हास्यविनोद करेंगे. ब्रह्मात्माएँ उसका भी आनन्द अनुभव करेंगी.

ले दौडे रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उतम वास ।
इसक न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोडे दाना घांस ॥ ४०

जिस प्रकार पवन पुष्पोंकी सुगन्धिको लेकर दौड़ता है उसी प्रकार सभी ब्रह्मात्माएँ ब्रह्मज्ञानके इस प्रकाशको फैलातीं रहेंगी. ब्रह्मात्माओंमें प्रेमका आवेग इतना बढ़ेगा कि वे श्वास भी नहीं ले पाएँगी. जिस प्रकार अग्नि अपने आहार घास-फूसमें तत्काल व्याप्त हो जाती है उसी प्रकार ब्रह्मात्माओंका प्रेम भी उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें व्याप्त हो जाएगा.

जाए पडे प्रेमके फांस, ज्यों सुके लोहू गल जाए मांस ।
पीछे तीसों नूर वरसात, तिन आगूं आवसी पुल सरात ॥ ४१

इस प्रकार अतिशय प्रेममें पड़े हुए व्यक्तिकी दशा ऐसी हो जाती है मानों, उसका रक्त सूख गया हो और मांस गल गया हो. तदुपरान्त तीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मज्ञानकी वर्षा होती रहेगी. उसके आगे पुलेसिरात (कर्मका विधान) का समय आयेगा.

सतर वरसलों आग जलाए, तब फिरस्ते दिए चलाए ।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥ ४२

सत्तर वर्ष पर्यन्त विरहकी अग्नि तप्त होगी. तदुपरान्त ईश्वरीसृष्टिको अक्षरधाम लौट जानेकी आज्ञा प्राप्त होगी. अजाजील फरिश्ता भी विरहाग्निमें जलकर परिशुद्ध होगा. तदुपरान्त इस्त्राफील फरिश्ता तारतम ज्ञानके द्वारा सभीको निर्मल बनाकर अखण्ड सुख प्रदान करेगा.

आगे असराफीलें कायम किए, तेरहींमें नूर नजर तले लिए ।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध ॥ ४३

तदुपरान्त इस्त्राफील फरिश्ता सभी जीवोंको अक्षरब्रह्मके हृदयमें अङ्कित कर अखण्ड सुख प्रदान करेगा. तेरहवीं शताब्दीमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अक्षरब्रह्मके हृदयमें अङ्कित होगा. तब सभी जीवोंमें जागृत बुद्धिका प्रसार होगा.

नतीजा पावें सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसालके होए ॥ ४४

कयामतकी इस अन्तिम घड़ीमें सभी जीवोंको अपने कर्मानुसार फल प्राप्त होगा. महामतिने छत्रसालके द्वारा सभीको सुख दिलाया.

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए वरनियां ।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बडाईयां दैयां धनियां ॥ १

महामति श्रीप्राणनाथजीने मुझे कहा, हे सुहागिनी आत्मा ! तुम्हारी शोभा इस जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती है. ब्रह्मात्माओंके इस समुदायको धामधनीने अधिक सम्मान दिया है.

कदम हादीके मेरे सिर पर, जो सब दीनोंका पैगंमर ।
हजरत इसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम ॥ २

उन्होंने मुझे यह भी कहा, निजानन्दस्वामी सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके चरणकमल मेरे सिर पर हैं. वे सभी धर्मके पैगम्बर कहलाए हैं. उनको ही हजरत ईसा अथवा रूहअल्लाहके नामसे सम्बोधन किया है. कुरानमें जिस प्रकार कहा है मैं वही कह रहा हूँ.

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीन मिल मोको दई ताम ।
मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बकाकी करी इनाम ॥ ३

इस प्रकार रसूल मुहम्मद, रूहअल्लाह श्रीदेवचन्द्रजी एवं इमाम महदी श्रीप्राणनाथजी इन तीनोंने मिल कर मुझे आत्मिक आहार प्रदान किया है. मैंने उनके वचनोंको शिरोधार्य किया है. उन्होंने मुझे अखण्डके द्वारको खोलनेवाली कुञ्जीस्वरूप तारतम ज्ञान पारितोषिकके रूपमें प्रदान किया है.

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आएत ।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सबद ॥ ४

कुरानके विभिन्न सिपारों तथा सुरतोंकी आयतोंमें इसकी साक्षी दी गई है. इसी प्रकार हदीसोंमें भी इसका उल्लेख है. इन धर्मग्रन्थोंके अतिरिक्त मैं अन्य एक शब्दका भी उच्चारण नहीं करूँगा.

बावन मसले जो कहे अरकांन, जो बजावें ल्याए मुसलमान ।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन ॥ ५

कुरान आदि ग्रन्थोंमें शराअ (कर्मकाण्ड) के बावन प्रकारके नियम बताए गए हैं. उनका पालन करने वाला मुसलमान कहा जाता है. ये नियम

कयामतके समय तकके लिए कहे गए थे. अनेक लोगोंने सच्चे हृदयसे उनका पालन कर स्वयंको पवित्र माना.

ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत ।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत ॥ ६

ऐसी भक्तिको कर्मकाण्डकी उपासना कहा गया है. कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट होने पर (कयामतके समयमें) इनका फल प्राप्त होना है. अब पारके द्वार खोलकर परमात्माकी पहचान करवा दी गई है इसलिए कयामतकी घड़ी आनेके वचन सिद्ध हो गए हैं.

और लिख्या सिपारे पांचमें, सो निके कर देखो तुमें ।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखर को आए धनी ॥ ७

कुरानके पाँचवें सिपारेमें इस प्रकारका उल्लेख है. तुम उसे भलीभाँति देख लो. हिन्दुओं पर परमात्माकी अपार कृपा हुई है. अन्तिम समयके परमात्मा इसी समुदायमें अवतरित हुए हैं.

सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत ।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदोंके घर ॥ ८

जगतके सभी अवतारी (पैगम्बर) पुरुष इस समय इसी समुदायमें प्रकट हुए हैं. इसलिए सम्पूर्ण भारत वर्षको अवतारोंका देश कहा गया है. इससे पूर्व भी जितने पैगम्बर प्रकट हुए हैं वे सभी यहुदियोंके समुदायोंमें ही प्रकट हुए हैं.

[कोई भी पैगम्बर मुसलमानोंमें नहीं हुआ है. अभी ब्रह्मात्माएँ पैगम्बरोंके रूपमें प्रकट हुई हैं.]

ज्यों अव्वल त्योंहीं आखर, सोभा सारी महंमद पर ।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरानमें एही खबर ॥ ९

जिस प्रकार पूर्वमें भी पैगम्बर (मुस्लिमोंसे भिन्न) यहूदियोंमें प्रकट हुए हैं, उसी प्रकार इस अन्तिम समयमें भी मुस्लिमोंसे भिन्न हिन्दुओंमें पैगम्बरोंका

अवतरण हुआ है. इन अवतारोंकी सम्पूर्ण शोभा श्रीप्राणनाथजीको प्राप्त हुई है. कुरानमें सर्वत्र यही बात लिखी गई है. तुम उसे भलीभाँति देख लो.

लोक ढूंढें माहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान ।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर कर हों सही ॥ १०

लोग इस अन्तिम अवतार (इमाम महदी) की प्रतीक्षा मुस्लिमोंमें कर रहे हैं. उनमें सुधि नहीं है कि कुरानमें क्या लिखा है. कुरानके प्रथम सिपारेमें ही यह सुधि दी है. मैं उसीको यहाँ पर प्रकट कर रहा हूँ.

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम ।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरानसे किए दूर ॥ ११

वहाँ पर अलिफ, लाम और मीम इन तीनों अक्षरोंको सबसे श्रेष्ठ कहा गया है. जिन लोगोंको इन गूढ़ अक्षरोंकी सुधि नहीं हुई उन्होंने इनको अनावश्यक समझकर कुरानसे हटा दिया.

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध विवेक ।
कलाम अल्लाएं ऐसी कही, आलम आरफकी हुजत ना रही ॥ १२

हदीस आदि ग्रन्थोंमें 'इन अक्षरोंका तात्पर्य तो खुदा ही जानते हैं' ऐसा कहकर इनकी सीमा बाँध दी गई. जब कुरानमें इस प्रकार कह दिया गया तब ज्ञानियोंने भी उनका अर्थ स्पष्ट करनेका दावा नहीं किया.

और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारेमें एह बयान ।
इनका जित खोल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार ॥ १३

कुरानमें विभिन्न स्थानोंमें इस प्रकार लिखा है एवं दूसरे सिपारेमें इसे और स्पष्ट कर दिया है. जिस स्वरूपने प्रकट होकर इन अक्षरोंका रहस्य स्पष्ट किया है उनके सन्दर्भमें हृदयपूर्वक विचार करो.

ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब ।
सो माएने रुजु उमतसे होए, खासी उमत कहिए सोए ॥ १४

इन अन्तिम मुहम्मद इमाम महदीको यह शोभा दी है. उन्होंने ही कुरान आदि

धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया है ये गूढ़ रहस्य ब्रह्मात्माओंसे ही प्रकट होंगे उनको ही श्रेष्ठ समुदाय कहा गया है.

महंमद की इनपें पेहेचान, भली भांत समझे कुरान ।
जैसे पेहेचाननेका हक, इन उमतको कोई नहीं सक ॥ १५

इन्हीं ब्रह्मात्माओंको अन्तिम मुहम्मद (इमाम महदी) की पहचान है. वे ही कुरानके गूढ़ रहस्योंको समझने वालीं हैं. इन स्वरूपको जिस रूपमें पहचानना चाहिए उन्होंने उसी रूपमें पहचान की है. इन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं है.

जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत ।
माहें लिख्या सिपारे उनतीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस ॥ १६

इनके लिए ही तौरात (कलश) ग्रन्थका ज्ञान दिया गया है. समस्त संसारको यही सुख प्रदान करेंगे. कुरानके उनतीसवें सिपारेमें लिखा है, खुदा जिसको सम्मान देते हैं उनके साथ ईर्ष्या क्यों की जाए ?

आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर ।
जो गिरो बनी असराइल की भई, सो औलाद याकूबकी कही ॥ १७

कुरानमें जिन ईसा रूहअल्लाह पैगम्बरके अवतरणकी बात है वे परब्रह्म परमात्माका दिव्य सन्देश तारतम ज्ञान लेकर श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें अवतरित हुए हैं. अन्य पैगम्बर जो यहूदी जातिमें प्रकट हुए हैं, वे भी अभी हिन्दुओंमें पुनः अवतरित हुए हैं. कुरानमें ब्रह्मात्माओंके समुदायको इस्राईलके वंशज कहा है. उनको ही याकूब पैगम्बरकी सन्तान भी कहा है.

[इब्राहीम पैगम्बरके छोटे पुत्र याकूबको इस्राईलकी उपाधि मिली थी. उसके वंशजोंको मोमिनोंका समुदाय कहा है. उस प्रसङ्गको यहाँ पर इसलिए दिया कि ईसा रूहअल्लाहकी भाँति श्रीदेवचन्द्रजीका अवतरण हुआ और उनके मानस पुत्र श्रीप्राणनाथजीका साथ देनेवाला समुदाय ब्रह्मसृष्टियोंका समुदाय है. श्रीप्राणनाथजीको विजयाभिनन्द निष्कलङ्क बुद्धके रूपमें स्वीकारा गया.]

हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म हुआ अहंमद ।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या जाए न हुई पेहेचान ॥ १८

कुरानमें यह भी कहा है कि जब रसूल मुहम्मद रूहअल्लाहके साथ सम्मिलित होंगे तब उनका नाम अहमद होगा. उनके साथ उनके पास तौरात एवं कुरानका ज्ञान होगा. जिनको इन स्वरूपकी पहचान नहीं होगी उनको निरस्त माना जाएगा. (श्रीप्राणनाथजीने इसका तात्पर्य समझाते हुए कहा, श्रीदेवचन्द्रजीमें रसूल मुहम्मद भी एकाकार हुए हैं. इसलिए वे अहमद हैं. उन्होंने ही श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें बैठकर कलश और सनन्धके रूपमें तौरात एवं कुरानका रहस्य स्पष्ट किया है. श्रीप्राणनाथजीके अन्दर विराजमान इन दोनों स्वरूपोंको जो नहीं पहचानते हैं उनकी बुद्धिको भी कुरानमें धिक्कारा गया है.)

भए जहूदोंके बडे बखत, पाई बुजरकी आए आखरत ।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक ॥ १९

जिस प्रकार पैगम्बरोंके अवतरणोंसे यहूदी समुदायका भाग्योदय हुआ था. उसी प्रकार कयामतकी अन्तिम घड़ीमें सभी अवतारोंके साथ विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलङ्क अवतार हिन्दुओंमें होने पर इस समुदायको अति श्रेष्ठता प्राप्त हुई है. परब्रह्म परमात्माका यह अवतार सद्गुरुके रूपमें हुआ है. जो इन स्वरूप पर विश्वास नहीं करता है वह अवज्ञाकारी (काफिर) कहलाता है.

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधीका दुसमन नूर ।
ए सुन वाका न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड उल्लू जान ॥ २०

जिस प्रकार उल्लू सूर्योदय हो जाए ऐसा नहीं चाहता है और अन्धे लोग भी प्रकाशके साथ शत्रुता रखते हैं, इसी प्रकार इमाम महदीके रूपमें स्वयं परमात्माके प्रकट होने पर जो उनके प्रति विश्वास नहीं करता है उसको ही कुरानमें उल्लू अथवा चमगादड़ कहा गया है.

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिये ईमान ।
जो तौहीद का कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे ॥ २१

रसूल मुहम्मदके अनुयायी स्वयंको मुसलमान कहते हैं किन्तु उन्होंने बाह्य

दृष्टिसे ही उन पर विश्वास रखा है. जिन्होंने परब्रह्म परमात्माके अद्वैतभावकी बात की है उन ब्रह्मात्माओंके साथ वे स्वयंकी तुलना करते हैं.

जो होए इसक यकीन साबित, तो भी झूठी सरीकत ।
सिरें न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या माहें अल्ला कलाम ॥ २२

कदाचित उनका प्रेम और विश्वास सिद्ध भी हो जाए तो भी उनको ब्रह्मात्माओंके साथ अपनी तुलना करना अनुचित है. उन शरीयत वालोंका विश्वास कदापि ब्रह्मात्माओंके समान नहीं हो सकता है. इस प्रकार कुरानमें कहा गया है.

सिपारे तीसरेमें कही, पांच वजह की पैदास भई ।
दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन ॥ २३

कुरानके तीसरे सिपारेमें उल्लेख है कि इस जगतमें मनुष्यकी उत्पत्ति पाँच प्रकारसे हुई है. खुदाके द्वारा 'हो जा' (कुन) कहने मात्रसे जीवसृष्टिकी उत्पत्ति हुई. इसके अतिरिक्त एकको एक हाथसे एवं अन्य दोको दोनों हाथोंसे प्रकट किया.

एक स्वरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ स्वरूप मिले दो साथ ।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक स्वरूप तीनों विध नाम ॥ २४

तदनुसार एक हाथसे जो स्वरूप प्रकट हुए हैं वे रसूल मुहम्मद हैं. दूसरे दो हाथोंसे मिलकर दो स्वरूप प्रकट हुए हैं उनमें एक रूहअल्लाह श्रीदेवचन्द्रजी एवं इमाम महदी श्रीप्राणनाथजी हैं. वस्तुतः ये तीनों एक ही स्वरूप हैं. नाम ही इनके अलग-अलग कहे गए हैं.

एक गिरों आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही ।
दूजी गिरों कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर और ॥ २५

इसी सृष्टि रचनाके क्रममें एक समुदायको मूलसे अवतरित कहा है. वे दिव्य परमधामकी ब्रह्मात्माएँ हैं. दूसरा समुदाय ईश्वरीसृष्टिका है वह दैवी (फरिश्ते) तथा संयमी (पहरेजगारी) कहलाता है एवं अक्षरधामका रहने वाला है.

तीसमें सिपारे लिखी ए विध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध ।
नूह नबीके बेटे तीन, तिनमें स्याम सलाम अमीन ॥ २६

कुरानके तीसरे सिपारेमें यह उल्लेख है किन्तु जिनके हृदयमें सुधि ही नहीं है वे इस प्रसङ्गका तात्पर्य कैसे समझ पाएँगे ? वहाँ पर यह भी कहा है कि नूह पैगम्बरके तीन पुत्र हैं. उनमें-से श्याम सबको संरक्षण देनेवाले माने जाएँगे.

मुसलिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफाने दिए डुबाए ।
ए तीनों मिल दुनियां रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर ॥ २७

उन्होंने ही धर्मनिष्ठ आत्माओं (मुस्लिम) को नौकामें चढ़ाकर पार पहुँचाया और शेष अवज्ञाकारियोंको तूफानके द्वारा डूबा दिया. इन तीनों पुत्रोंने मिलकर नई सृष्टि की और तीनों अलग-अलग स्थानमें चले गए.

चांद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बडो जस ।
चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए ॥ २८

उन तीनोंमें-से शामको अरब एवं इरान (फारस) देशोंका चन्द्रमा कहा है. उन्होंने एक ब्रह्मकी उपासनाका ज्ञान देकर विशेष यश प्राप्त किया. अरब देशोंका चन्द्रमा कहलाने वाला रसूल मुहम्मदके अतिरिक्त अन्य कोई दिखाई नहीं देता है.

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए ।
हिसाम चांद कह्यां हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिंदुओं साहेब जान ॥ २९

शामने पहले अपने समुदायके लोगोंको नौकामें बैठाकर पार पहुँचाया और वे ही पुनः ब्राह्मीसन्देश लेकर आनेसे रसूल कहलाए. हिसाम (हाम) को हिन्दुस्तानके चन्द्रमा कहा गया है. हिन्दुओंने उनको ही अपने स्वामी समझ कर उनकी पूजा की.

याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान ।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन ॥ ३०

याफिस तुर्किस्तानमें आए उनको कोई भी पहचान न सके. याजूज और

माजूज इनके पुत्र कहे गए हैं. उनकी तीन प्रकारकी सेनाएँ पूरी दुनियाँको खा जाएँगी.

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढे न देखें दिल आंखें खोल ।
नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहानमें रोसन नाम ॥ ३१

कुरानके तीसरे सिपारेमें इस प्रकारका उल्लेख है. उसको पढ़नेवाले लोग अन्तरकी आँख खोल कर उस रहस्यको नहीं समझते हैं. नूह पैगम्बरके पुत्र शामको अन्य सभी पुत्रोंमें श्रेष्ठ कहा है. उनका नाम दोनों समुदायोंमें प्रसिद्ध हुआ ऐसा कहा गया है.

स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए ।
एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजे करे बयान हुकम चलाई ॥ ३२

शाम (मुहम्मद) ऐसी अलौकिक दो वस्तुएँ ले आए जो चौदह लोकोंमें कहीं भी प्राप्त नहीं हैं. उन्होंने एक तो परब्रह्म परमात्माकी साक्षी दी दूसरा परमात्माका आदेश लेकर उसे दुनियामें चलाया.

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेबने किए रोसन ।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए ॥ ३३

पूर्वकालमें भी रसूल मुहम्मदको उनके मित्रोंने पूछा कि कयामत कब होगी और जीवोंको बहिश्तोंका सुख कब मिलेगा ? तब रसूलने उन्हें कहा, ये दोनों बातें खुदासे ही होंगी. जब वे अवतरित होकर ये दोनों कार्य करेंगे उस समय सब लोग उनकी पूजा करेंगे. (वह समय यही है परमात्माने इमाम महदीके रूपमें प्रकट होकर कयामतकी घड़ी निश्चित की और ब्रह्मात्माओंके द्वारा जीवोंको अखण्ड मुक्ति दिलाया.)

तोफतलकलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब ।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली ॥ ३४

तोफतल्कलाम नामक पुस्तकके आठवें प्रकरणमें उल्लेख है कि कयामतके समय सभी पैगम्बरोंके अनुयायी एकत्रित होंगे. उन सभीके दिलमें नरककी अग्नि जलती हुई दिखाई देगी.

जलती सब पैगंमरोपें गई, पर ठंडक दारू काहूं थें ना भई ।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर ॥ ३५

उस आगसे जलते हुए सभी लोग अपने-अपने पैगम्बरोंके निकट जाएँगे किन्तु किसीसे भी उनको शीतलता नहीं मिलेगी. वे सब अपना हाथ झटका कर कहेंगे कि हम सभी पैगम्बर लज्जित हैं, हम तुम लोगोंको बचा नहीं सकते.

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब ।
सब दुनियां जलती महंमदपें आई, दोजक आग रसूलें छुडाई ॥ ३६

सभी पैगम्बरोंने यही उत्तर दिया, मुहम्मद ही तुम्हें शीतलता प्रदान कर वह पुण्य प्राप्त करेंगे. इसलिए सभी लोग अन्तर्दाहसे पीड़ित होकर मुहम्मदकी शरणमें आए. उन्होंने ही उन सबको नरकाग्निसे बचाया.

सबको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए ।
कहे छत्ता अपनाइत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर ॥ ३७

यह प्रसङ्ग इस प्रकार सत्य सिद्ध होता है कि अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मद अर्थात् इमाम महदीने ब्रह्मज्ञानके द्वारा सभी जीवोंको शीतलता प्रदान की एवं उनको अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें अङ्कित कर मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड सुख प्रदान किया. छत्रसाल अपनत्वकी भावनाके साथ कहते हैं, श्रीप्राणनाथजीने प्रकट होकर यह कार्य पूर्ण किया है इसलिए इस स्वर्णिम अवसरको कोई भी मत भूलो.

हुई फजर मिट गई रात, भूले बडो करसी पछताप ॥ ३८

अब ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर अज्ञानरूप अन्धकार युक्त रात्रि मिट गई है. इस स्वर्णिम अवसर पर जो लोग श्रीप्राणनाथजीकी शरणमें आनेमें चूक जाएँगे उनको बड़ा पश्चात्ताप होगा.

प्रकरण ७ चौपाई २२९

लिख्या सिपारे आखरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत ।
जो मोमिनोंका लिख्या मजकूर, सोए कहूं सब देखो जहूर ॥ १

कुरानके अन्तिम तीसवें सिपारेके सत्रहवें अध्यायमें कुरानके आन्तरिक

रहस्योंकी यथार्थताका उल्लेख हुआ है. वहाँ पर ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसाके सन्दर्भमें जो बातें लिखी हैं मैं उनको ही व्यक्त करूँगा. तुम सब उन पर विचार करो.

पाई खलासी मोमन, हुआ मकसूद सबन ।
ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगी में सोई ॥ २

वहाँ पर यह उल्लेख है कि ब्रह्मात्माओंने दज्जालसे छुटकारा प्राप्त किया. उन सभीकी मनोकामनाएँ पूर्ण हुईं. जिनके साथ ऐसी घटनाएँ घटीं हैं वे ही सत्यनिष्ठ उपासनामें हैं.

रखो खुदाए का डर, बंदे सेजदे पर नजर ।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेबके हजूर ॥ ३

रसूल मुहम्मदने यह भी कहा है, तुम खुदाके बन्दे हो इसलिए तुम्हारी दृष्टि उनके नमनके प्रति होनी चाहिए. तुम सदैव उनसे डरते रहो. रसूलकी इन बातोंको जिन्होंने स्वीकार किया उन्होंने ही परमधाममें परमात्माकी निकटताका अनुभव किया.

पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत ।
ऊपर से आएत आई, तब नजर आसमान से फिराई ॥ ४

रसूल मुहम्मद स्वयं आकाशकी ओर देख कर नमाज पढ़ रहे थे. उस समय जिब्रील फरिश्ताके द्वारा आयत आई. उसमें कहा गया था कि आकाशकी ओर देख कर नहीं, आत्माकी ओर देख कर बन्दगी करो ! तब रसूलने आकाशकी ओरसे अपनी दृष्टि हटा ली.

किया सेजदा मूल वतन, जो दरगाह बडी है रोसन ।
यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब ॥ ५

तब रसूल मुहम्मदने परमधामको दृष्टिमें रख कर नमन किया. वह चिन्मय भूमिका है. लवाब नामक पुस्तकमें उल्लेख है कि इस प्रकार जो परमधामको दृष्टिमें रख कर नमन करता है उसे सर्वदा परमधामकी अनुभूतिका लाभ प्राप्त होता है.

जो बका साहेबका घर, रखो दीदे धनी नजर ।
ए सेजदा तब पाइए, खूबी घरकी देखी चाहिए ॥ ६

दिव्य परमधाम परब्रह्म परमात्माका घर है उन परमात्माके चरणोंमें दृष्टि रख कर उनको नमन करना चाहिए. इस प्रकार परमात्माके चरणोंमें नमन करनेका सौभाग्य तभी प्राप्त होता है जब परमधामकी दिव्यताके दर्शनकी अभिलाषा उत्पन्न होती हो.

जब ए हुई खुसाली, तब भूले सेजदे खाली ।
निमाजके बखत दिल धर, छूटी दाएं बाएं नजर ॥ ७

जब इस प्रकारके नमनसे परम आनन्दकी अनुभूति होने लगी तब भूलवश शून्य-निराकारकी अथवा मूर्तिमें ब्रह्मको मान कर की जा रही उपासना स्वत: छूट गई. जब परमात्माके चरणोंको हृदयमें धारण कर उनकी उपासना करने लगे तब दायें-बायें अर्थात् कर्मकाण्ड आदिसे अपनी दृष्टि छूट गई.

हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम ।
हूई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेबसों खुसाल ॥ ८

जब ब्रह्मात्माओंको परब्रह्म परमात्माकी अनुकम्पा प्राप्त हुई तब उन्होंने परमधाम-मूलमिलावाका मर्म समझ लिया. इस प्रकार की गई उनकी प्रार्थना परब्रह्म परमात्मा द्वारा स्वीकृत होने पर उनको परम आनन्दकी अनुभूति हुई.

सिरसे छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज ।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सेजदा हजूर कदम ॥ ९

इस प्रकार ऋण चुकानेके ध्येयसे किए जाने वाले कर्मकाण्डकी उपासनाका दायित्व ब्रह्मात्माओंसे स्वत: छूट गया और ब्रह्मात्मआएँ उऋण (ऋणमुक्त) हो गईं. परमधाममें परब्रह्म परमात्माने उनको कहा था कि तुम जगतमें जाकर मुझे भूल कर आग, पानी, पत्थरकी पूजा करोगी. अब धामधनीके चरणोंमें नमन करनेसे ब्रह्मात्माएँ उनको भूल जानेके दोषसे मुक्त हो गईं.

सोए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर ।
पेहेले था बेहेरूल्हैवान, तब तो तिनमें था फुरमान ॥ १०

मैं इस रहस्यको और स्पष्ट कर सत्य और असत्यका निरूपण कर देता हूँ.

जब रसूल मुहम्मद अरबमें आए उस समय वहाँ पर मानवोंमें पाशविक वृत्ति (बहरूल्हैवान) अधिक थी. इसीलिए उस समय रसूलने परमात्माके आदेशके रूपमें उन लोगोंको कर्मकाण्डके कठोर नियमोंका पालन करवाया.

अब दरिया हुआ हक, इनमें न रहे किसी की सक ।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर ॥ ११

अब तो श्रीप्राणनाथजीके अवतरणसे ब्रह्मज्ञानका सागर (तारतमसागर) लहराने लगा है. अब किसीके भी हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह शेष नहीं रहा. इस ब्रह्मज्ञानके सागरमें परब्रह्म परमात्मा, श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी चिन्मय लीलाका विवरण है.

सुरत दाएं बाएं भान, सिर आगूं धरिया आन ।
खडा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर ॥ १२

जो आत्माएँ अपनी सुरताको दायें-बायें (इधर-उधर) से हटा कर परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें समर्पित हो जाती हैं और विश्वास एवं प्रेमरूपी दोनों हाथोंसे उनके चरणोंको ग्रहण करतीं हैं वे ही उनकी निकटताका अनुभव कर उनसे प्रत्यक्ष बातें कर सकतीं हैं.

हुआ साहेबसों परस, दिलसे छूटी हवा हिरस ।
भेद पाया सिरर हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक ॥ १३

जब परब्रह्म परमात्माका स्पर्श प्राप्त हुआ अर्थात् हृदयमें उनका स्वरूप अङ्कित हुआ तब हृदयसे लौकिक चाहनाएँ छूट गईं. ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके हृदयके प्रेमका मर्म समझ कर प्रियतम धनीके प्रेम सागरमें निमग्न हो गईं.

सोए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान ।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई ॥ १४

ऐसी आत्माओंके ये स्पष्ट लक्षण हैं कि वे परब्रह्म परमात्माकी शोभारूप समुद्रमें निमग्न होतीं हैं. इस रहस्यको जिन्होंने जाना है उन्होंने ही निश्चित रूपसे इन (रहस्यों) को उजागर किया है. [यह कार्य श्रीप्राणनाथजीसे ही हुआ है.]

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिर ताज ।
मिले वाही के तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब ॥ १५

ब्रह्मात्माओंके लिए सर्वप्रथम पूजा-उपासना यही है कि वे इन रहस्योंको स्पष्ट कर देने वाले शिरोमणि परमात्माकी सेवामें अपना जीवन व्यतीत करें. ऐसे परमात्माके साथ मित्रताका भाव उदय होने पर उनकी सेवा प्रेमभावमें परिणत होगी.

जबतें एह आसा मेटी, तब तो तूं साहेबसों भेटी ।
जोलों कछू देखे आप, तोलों साहेबसों नहीं मिलाप ॥ १६

हे आत्मा ! जब तेरी लौकिक चाहनाएँ मिट गईं तभी तेरा मिलाप परमात्मासे हो गया. जब तक तेरी दृष्टि देहाभिमानकी ओर थी तब तक तुझे परमात्मासे मिलन नहीं हुआ था.

जोलों कछुए आपा रखे, तोलों सुख अखंड न चखे ।
तसबी गोदडी करवा, छोडो जनेऊ हिरस हवा ॥ १७

जब तक हृदयमें अहंता तथा ममता (मैं तथा मेरापन) बनी रहेगी तब तक अखण्ड सुखकी अनुभूति नहीं होगी. इसलिए मुस्लिम फकीर अपनी माला, गोदडी, तथा लोटेको लेकर स्वयंको अपरिग्रही माननेका भाव छोड दें एवं हिन्दू ब्राह्मण यज्ञोपवित धारण कर स्वयंको सबसे उत्तम समझनेका भाव त्याग दें क्योंकि ये दोनों ही चाहनाएँ लौकिक मानी गईं हैं. यही बाह्य (शारीरिक) कर्मकाण्ड है.

दोऊ जहान को करो तरक, एक पकडो जो साहेब हक ।
या हंस कर छोडो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए ॥ १८

स्वयंको हिन्दू अथवा मुस्लिम समझ कर अपनी ही श्रेष्ठताके अहङ्कारमें रचे-पचे रहना (ऐसे द्वैत भावको) छोड़ दो और एक मात्र परब्रह्म परमात्माके चरणोंको ग्रहण करो. नश्वर जगतका मोह-ममत्व रूप मिथ्याभिमानको हँसते हुए छोड़ो अथवा रोते हुए छोड़ो (हँसते हुए छोड़ दो तो अच्छी बात है किन्तु इसको ही अपना मानकर रोते रहोगे तो भी अन्ततः छोड़ना ही पडेगा). इस विषयमें कोई भी सन्देह न करें.

जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए ।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुसेसों कहे सोई ॥ १९

जब तुमसे ऐसा कार्य होगा तब तुम्हें परमधामकी सुगन्धिका अनुभव होगा. इसके अतिरिक्त जो लोग मिथ्या व्यवहार करते हैं उनको ही रसूल मुहम्मदने क्रोधमें आकर काफिर (नास्तिक) कह दिया है.

कहत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आएत करी ।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक ॥ २०

इमाम केसरीने अपनी पुस्तकमें लिखा है, खुदाने इन आत्माओंकी प्रशंसाके लिए ही रसूलको तीसवें सिपारेकी नई आयतें कहीं हैं. वे आत्माएँ ही श्रेष्ठ हैं. उनके लिए ही परमात्माने इस समय अवतरित होकर तारतम सागररूप ब्रह्मवाणी प्रदान कर उनके सन्देहोंको दूर किया है.

और जो कोई साहेबसों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे ।
याहीमें पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम ॥ २१

जो लोग इस समय इन परमात्माके आदेशसे विमुख होकर नश्वर जगतके कार्योंमें ही लगे रहेंगे और लौकिक कार्योंके द्वारा ही लौकिक सुखोंका अनुभव करते हैं वे निश्चय ही मायाके छल-प्रपञ्चके कार्यमें लगे हुए हैं.

साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल ।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक ॥ २२

ब्रह्मात्माओंके वचन एवं व्यवहार दोनों ही पवित्र होते हैं. उनके हृदयमें लेशमात्र भी विकार नहीं होते हैं. ऐसी जो निर्मल आत्माएँ होंगी वे ही परब्रह्म परमात्माकी अङ्गना कहलाएँगीं. परब्रह्मके प्रति सम्पूर्ण समर्पण ही उनके जीवनका दान (जकात) है.

देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक ।
छोटा बडा जो नर नार, ए सबन पर है करार ॥ २३

सभी आत्माओंको परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें पूर्णरूपसे समर्पित होना है.

इस जगतमें छोटे-बड़े जो भी नर-नारी हैं उन सबके लिए यही सर्वोच्च कर्तव्य है.

ऐसी गिरोह जो दरगाही, ताए रखना आप दृढाई ।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नहीं तिन काम ॥ २४

परमधामकी ब्रह्मात्माओंको अपने मनको दृढ़ता पूर्वक वशमें रखना चाहिए. इस जगतमें जितनी बातें निषिद्ध कही गई हैं उनके निकट जाना उनका काम नहीं है.

या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना ।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेबके बिकानी ॥ २५

ऐसी आत्माएँ अपनी या पराय सभी वस्तुओंको लौकिक समझ कर उनसे हृदयपूर्वक संयम रखतीं हैं. इसलिए वे परमात्माके प्रति पूर्ण समर्पित जानी गई हैं.

दाहिनी तरफ जो है हक, ए लडकियां तिनकी मिलक ।
निगाह रखें जाने सुपना, इंद्रियों से आप अपना ॥ २६

मूलमिलावामें परब्रह्म परमात्मा श्रीश्यामाजीकी दाईं ओर सिंहासन पर विराजमान हैं. ये ब्रह्मात्माएँ उनकी अङ्गस्वरूपा हैं. ये ब्रह्मात्माएँ नश्वर जगतको स्वप्न मान कर विषयोंकी ओर जाते हुए इन्द्रियों पर ध्यान रखतीं हैं.

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर ।
इन भांतकी जो है औरत, तिने पाया रोज सरत ॥ २७

इस प्रकार इन्होंने हृदयको दृढ़ किया है इनसे कोई भी अपराध नहीं होते हैं. ऐसी शुद्ध आत्माओंने कयामतकी घड़ी पहचान ली है.

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम ।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम ॥ २८

ये आत्माएँ इन्द्रियजन्य सुखोंको नहीं चाहतीं हैं और एक क्षण भी परमात्माके स्मरणके बिना व्यर्थ होने नहीं देतीं हैं. जितने भी दुष्कर्म हैं उनको इन्द्रियजन्य चाह समझ कर त्याज्य मानतीं हैं.

जो ए काम ढुंढे बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल ।
ऐसे जो हैं सितमगार, पाया न समया हुए खुआर ॥ २९

इसके विपरीत जो लोग दुष्कर्मोंकी ही खोजमें रहते हैं और वैसा आचरण करते हैं उनको ही अवज्ञाकारी (काफिर) कहा गया है. ऐसे अत्याचारी लोग कयामतके अवसरको न पहचान कर व्यर्थमें ही सांसारिक दुःखोंमें भटकते रहते हैं.

और जो कोई गिरो पाक यकीन, किया अमानत बीच अमीन ।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत ॥ ३०

परमात्माके प्रति विश्वास करनेवाली उनकी अङ्गस्वरूपा जो पवित्र आत्माएँ हैं उनमें श्रीश्यामाजी शिरोमणि हैं. कुरानमें जो सङ्केत दिए गए हैं वे इन्हीं पवित्र आत्माओंके लिए हैं.

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक ।
याही बीच निमाज असल, रखें आप कर गुसल ॥ ३१

ये ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके धरोहरके रूपमें इस जगतमें अवतरित हुई हैं. इसलिए यहाँ पर भी उनके व्रत, नियम आदि निश्चय ही परमात्माके लिए होते हैं. सत्य उपासना भी इनमें ही पाई जाती है. ये स्वयं प्रेमरूपी जलमें स्नान कर पवित्र रहतीं हैं.

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक ।
निगाह रखें खडा रहें आप, सूरत आएत करें मिलाप ॥ ३२

धर्मग्रन्थोंमें जितनी भविष्यवाणी हैं तदनुसार इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदय मन्दिरमें स्वयं परमात्मा विराजमान हुए हैं. ये आत्माएँ अपनी इन्द्रियों पर निगाह रखतीं हैं एवं सदैव परमात्माकी सेवामें खड़ीं रहतीं हैं तथा धर्मग्रन्थोंके प्रमाणोंका मिलान करतीं हैं.

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे ।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत ॥ ३३

जो कोई ब्रह्मात्माएँ होंगी वे अपनी इन्द्रियोंको नियन्त्रणमें रखकर परमात्माकी

उपासना करेंगी. लौकिक आपदाओंके आने पर भी वे परमात्माके प्रेमसे विचलित नहीं होंगी. धर्ममें पुष्ट होकर निरन्तर सेवामें लगी रहेंगी. अपने वचनोंके अनुसार प्रकट हुए परमात्माके प्रति सम्मान रखतीं हुईं सर्वदा उनकी आज्ञाका पालन करतीं रहेंगी.

मूलथें बंदगी करें जिकर, करे सिफत निकोई आखर ।
ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान ॥ ३४

ब्रह्मात्माएँ मूल परमधामसे ही धामधनीकी सेवा करतीं हैं और इस अन्तिम घड़ीमें परमात्माके रूपमें प्रकट हुए श्रीप्राणनाथजीकी भी शुद्ध भावनासे प्रशंसा करतीं हैं. जो धर्मनिष्ठ ईश्वरीसृष्टियाँ हैं इनके दृढ़ विश्वासके सम्बन्धमें भी धर्मग्रन्थमें ब्रह्मात्माओंके समान सङ्केत दिए गए हैं.

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक ।
गिरो मोमिन जमें करें, छे सिफतें वारसी धरें ॥ ३५

इन्हीं ब्रह्मात्माओंमें श्रेष्ठ उपासनाकी रीति है. दूसरी ईश्वरीसृष्टिमें भी परमात्माकी उपासनाका सत्य भाव है. ब्रह्मात्माओंका समुदाय विभिन्न धर्मग्रन्थोंका प्रमाण एकत्र कर परमात्माके छः गुणों (आदेश, आवेश, कृपा, ज्ञान, प्रेम और विश्वास) का उत्तराधिकार स्वीकार करता है.

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकडें हाथ हराम ।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास अल्ला नजीक ॥ ३६

वे इस उत्तराधिकारके (गुणोंके) अतिरिक्त अन्य निषिद्ध वस्तुओंका स्पर्श भी नहीं करतीं हैं. जिन्होंने अन्तिम समयमें प्रकट हुए परमात्माको निश्चित रूपसे अपना स्वामी समझ लिया है उन्होंने ही परब्रह्म परमात्माका निकट रहनेका उत्तराधिकार प्राप्त किया है.

जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बडे मरातबे पोहोंचाई ।
लै औरों भिस्त मिरास, जो रहे मोमिन बीच विलास ॥ ३७

जिस स्वरूपने दिव्य परमधामका प्रत्यक्ष अनुभव किया है, उन्होंने ब्रह्मात्माओंके इस समुदायको भी उनके द्वारा जीवोंकी मुक्ति दिलवा कर बड़ी

प्रतिष्ठा दिलाई है. इनके अतिरिक्त जो ईश्वरीसृष्टिने ब्रह्मात्माओंका सान्निध्य प्राप्त किया उन्होंने भी अखण्ड सुख प्राप्त किया.

बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर ।
और काफर दोजखमें जल, देखें भिस्ती मरें जल ॥ ३८

ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टिके अतिरिक्त अन्य जो भी जीव हैं वे अपने कर्मानुसार मुक्तिस्थलके सुख अथवा नरकके दुःख प्राप्त करते हैं. इनमें जितने भी अवज्ञाकारी हैं वे नरककी अग्निमें जलते रहेंगे. मुक्तिस्थलोंमें सुख प्राप्त कर रहे अन्य जीवोंको देख कर ये जीव और अधिक सन्तप्त होंगे अर्थात् श्रेष्ठ आत्माओंके सदाचरण एवं भक्तिको देखकर ईर्ष्या करते हुए निन्दा-स्तुति करेंगे.

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवें सुख ।
यों कह्या बीच मिसलजादिल, पावे ईमान बीच मिसल ॥ ३९

बहिश्तमें स्थित आत्माएँ नरककी अग्निमें जल रहे जीवोंके दुःखोंको देख कर द्रवित होतीं हैं. ब्रह्मात्माओंकी शीतल दृष्टि पड़ने पर उन सन्तप्त जीवोंको भी सुख प्राप्त होगा. जादलमिस्ल नामक पुस्तकमें यह विवरण है कि परमात्माके प्रति दृढ़ विश्वास तो मात्र ब्रह्मात्माओंके समुदायमें ही पाया जाता है.

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ॥ ४०

जो लोग अन्तिम समयमें अवतरित परमात्मा स्वरूप श्रीप्राणनाथजीको नहीं मानते हैं वे नास्तिक लोग नरककी अग्निमें जलते हैं. मुक्तिस्थलोंमें रहनेवाले जीवोंके सुखोंको दूरसे देख कर वे लोग और अधिक रूपसे सन्तप्त होते रहते हैं.

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस ।
इन आदमकी पैदास, किया बीच खलक के खास ॥ ४१

जिन ब्रह्मात्माओंको सर्वश्रेष्ठ परमधामकी उत्तराधिकारिणी कहा गया है वे सदैव वहीं रहतीं हैं. परमात्माने स्वयंको इन्हीं ब्रह्मात्माओंके बीच मनुष्यकी

आकृतिमें (सद्गुरु रूपमें) प्रकट कर स्वयंको ब्रह्मात्माओंका शिरोमणि बनाया.

खैंच किया सबों के आगे, मोमिन इनपें पेसवा लागे ।
बीज मिटी दुनियां की न्यांत, पर ए पाक साफ कही जात ॥ ४२

उन्होंने मोह और अहङ्कारसे ग्रस्त सभी जीवोंको अपनी ओर आकृष्ट कर क्षर अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामकी ओर उन्मुख किया. सभी ब्रह्मात्माएँ उनके ही दिव्य ज्ञानके प्रकाशको फैलाने लगीं. ब्रह्मात्माएँ भी पञ्चतत्त्वके शरीरको धारण कर नश्वर जगतके जीवोंके सदृश दिखाई देतीं हैं किन्तु इनका हृदय अत्यन्त निर्मल माना गया है.

एक किया उसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल ।
आया इन तरफ बहार, जिनों पकड्या पाक करार ॥ ४३

परमात्माने सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीको दो उत्तराधिकारी दिए थे. उनमें-से एक (विहारीजी) नकली उत्तराधिकारी तथा दूसरे (श्रीप्राणनाथजी) पवित्र हृदय वाले वास्तविक सम्पदाके उत्तराधिकारी कहलाए. जिन्होंने सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके पवित्र चरणोंको निश्चय ही पकड़ा है उन श्रीप्राणनाथजी के द्वारा श्रीतारतम सागररूप वाणीके रूपमें परमधामकी सुगन्धि प्रसरित हुई.

नुस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तवार ।
तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान ॥ ४४

सद्गुरुने कृपा कर इनको तारतम ज्ञानके प्रचार-प्रसारका दायित्व सौंपा. इसलिए इनमें धर्मके प्रचार-प्रसारकी भावना दृढ़ बनी. कुरानमें जिन तीन स्वरूपोंका विवरण है वे सब इन (श्रीप्राणनाथजी) के अन्दर एकरूप हुए हैं.

सिफत तीनोंकी जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई ।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी ॥ ४५

कुरानमें तीनों स्वरूपोंकी शोभा अलग-अलग प्रकारसे कही गई है. किन्तु परमात्माने इन सबकी शोभा इन्हीं एक स्वरूपको प्रदान की है. कुरानके

अनुसार बशरी, मलकी और हकी क्रमशः रसूल, रूहअल्लाह एवं इमाम महदी ये तीनों ही पवित्र करने वाले हैं.

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजोंसों इसारत करी ।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लडका जवान बुढापन कीन ॥ ४६

बाह्यदृष्टि वाले लोग इन रहस्योंका मर्म नहीं जान पाते हैं. ये तो सङ्केतोंके द्वारा कहे गए हैं. जैसे कुरानमें एक ही स्वरूपकी तीन अवस्थाएँ- बाल्यावस्था, युवावस्था तथा प्रौढावस्था कही गई हैं.

तीन सरूप चढती उतपनी, बढती बढती कही रोसनी ।
खोली राह आखर बागकी, तंग सेंती पोहोंचे बुजरकी ॥ ४७

इन तीनों स्वरूपोंका ज्ञानका प्रकाश उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ फैलता गया. अन्तिम स्वरूपने अन्तिम समयमें प्रकट होकर परमधामके वन, उपवनोंका मार्ग स्पष्ट कर दिया और वे सामान्य अवस्थासे श्रेष्ठ अवस्थामें पहुँच गए.

बिध बिध की न्यामत पोहोंचाई, और कै तरबियत फुरमाई ।
लडके सेंती पोहोंचे जवान, रख्या कदम हक बयान ॥ ४८

उन्होंने ब्रह्मात्माओंको परमधामकी विभिन्न सम्पदा प्रदान की और तारतम ज्ञानके द्वारा उनकी तृषाको शान्त कर स्फूर्ति प्रदान की. जिस प्रकार बाल्यावस्थासे युवावस्थाकी ओर जाया जाता है उसी प्रकार उन्होंने परब्रह्म परमात्माके स्वरूपका वर्णन करते हुए धाम, परमधामका विशद वर्णन किया.

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक ।
लाएक खुदाए के करी सिफत, पैदा किया अरस दोस्त ॥ ४९

परब्रह्म परमात्माकी अपार कृपा प्राप्त कर उन्होंने बड़ी महत्ता प्राप्त की. ब्रह्मात्माएँ इनके ब्रह्मस्वरूप होनेमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं रखतीं हैं. जगतके जीवोंको अखण्ड मुक्ति प्रदान कर इन्होंने परमात्माके अनुरूप कार्य किया. परमात्माने उनको अपने मित्रके रूपमें इस जगतमें भेजा है.

कुरसी फिरस्ते लोहकलमी, काएम सितारे आसमान जिमी ।
पीछे आदम के पैदा भया, जात पाक से दोस्त कह्या ॥ ५०

लोहकल्म नामक पुस्तकके अनुसार उन्होंने सर्वप्रथम देवताओंके लिए

वैकुण्ठ आदि लोकोंकी रचना की. तदुपरान्त आकाश और पृथ्वीका विस्तार करते हुए नक्षत्रोंकी रचना की. तत्पश्चात् मनुष्यके रूपमें श्रीदेवचन्द्रजीको प्रकट किया तदनन्तर उनके मित्रके रूपमें श्रीप्राणनाथजीको प्रकट किया. [वस्तुतः परमात्माके वचन ही लोहकलम (कभी न मिटनेवाले) होते हैं]

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बखसीस बडाई ।
मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत ॥ ५१

विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें श्रीदेवचन्द्रजीकी महत्ताका वर्णन है. उन पर परमात्माकी अपार कृपा हुई है. परमात्माने उनको तीन बार दर्शन भी दिया. इस कृपाका वर्णन नहीं किया जा सकता है.

और कह्या जो इन सेंती नूर, सचे सूर कहावें जहूर ।
इनका रंग है तवकल, सिर बिलंदी ताज सकल ॥ ५२

श्रीदेवचन्द्रजीके तारतम ज्ञानरूप तेजसे महामति श्रीप्राणनाथजी (उसको प्रकट करनेवाले) तेजस्वी शूरवीर कहलाए. इनके हृदयमें प्रेमका गहरा रङ्ग चढ़ा हुआ है. वे सभी सिद्धान्तवादियोंके शिरोमणि हैं.

और मिले गिरदवाय लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक ।
ए बखसीस और से रोसन, उन सुने गैबके सुकन ॥ ५३

इनके चारों ओर ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि एकत्रित हुईं. उन्होंने अपनी इस महिमाको गलेका फन्दा माना. इनको तारतम ज्ञानरूपी पारितोषिक सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजसे प्राप्त हुआ है. सद्गुरुने ब्रह्मज्ञानके ये गुप्त वचन नवतनपुरीमें श्रीकृष्णजीसे प्राप्त किए थे.

एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई ।
ए तीनों सिफत भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल ॥ ५४

इस प्रकार कुरानमें आदम तथा उनकी सृष्टिका जो प्रसङ्ग है वह श्रीदेवचन्द्रजीके ब्रह्मज्ञानके साथ अवतरित होनेका प्रसङ्ग है. उनकी जितनी प्रशंसा की गई है वह सब अन्तिम समयमें प्रकट होनेवाले इमाम महदी अर्थात् श्रीप्राणनाथजीके लिए है. उनमें तीनों स्वरूप सम्मिलित हैं. इसलिए

उनको संजीवनी प्रदान करने वाले अमूल्य मोती कहा गया है.

इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए ।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे ॥ ५५

इस मोतीका मूल्य आँका नहीं जा सकता. किसीने भी अभी तक इसके मूल्यको कानोंसे नहीं सुना है. जो इनका मूल्याङ्कन करते हैं वे भी जल जाएँगे एवं उसे सुनने वाला व्यक्ति भी जलकर मर जाएगा.

बाजे कहे साहेब इसक, सबसे जुदा ए आदम हक ।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान ॥ ५६

भविष्यवेत्ताओंने इनको प्रेमका स्वामी कहा है. ये सभी मानवों तथा देवोंसे भिन्न परमात्माके स्वरूप हैं. इनकी जाति परब्रह्म परमात्माके समान पवित्र है. इस प्रकार अनेक विशेषताओंके द्वारा इन स्वरूपोंकी महिमा गाई गई है.

हद सबों की करी जुबान, क्या कोई कहे ए सिफत जहान ।
अब कहूं मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात ॥ ५७

इन्होंने सभी जीवोंकी सीमाओंको निर्धारित कर दिया. इस जगतके जीव इनकी महिमाका वर्णन कैसे कर सकते हैं ? अब मैं इनकी महिमाका वर्णन करता हूँ ? ये तो सभी मनुष्योंमें अत्यन्त पवित्र एवं निर्मल हैं.

सो अफताली महंमद का भया, जो आदम ऐसा बुजरक कह्या ।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूल की कही हद ॥ ५८

रसूल मुहम्मदको धार्मिक पुरुषोंके रूपमें इतनी बड़ी शोभा इसलिए प्राप्त हुई कि उन्होंने इस स्वरूपकी श्रेष्ठता (सर्वगुण सम्पन्नता) का वर्णन किया है. रसूल मुहम्मदके वचनोंको स्पष्ट करनेके लिए ही इनका अवतरण हुआ है. इनके अवतरण पर्यन्त ही रसूलके उपदेशोंका प्रभाव रहा है.

जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए ।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इनमें देख ॥ ५९

श्रीदेवचन्द्रजीकी महिमाका वर्णन नहीं किया जा सकता है. इसी प्रकार श्रीप्राणनाथजीकी शोभाका वर्णन भी जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकेगा ? वस्तुतः

ये दोनों एक ही स्वरूप हैं मात्र इनकी महिमा ही भिन्न-भिन्न ढंगसे गाई गई है. इनसे भिन्न तीसरे स्वरूप स्वयं परमात्मा इनके हृदयमें बैठकर प्रेमसुधाका पान करवा रहे हैं.

इसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम ।
और जो कहे मुरदोंकी भांत, साकी प्याले होसी कलपांत ॥ ६०

कुरानके अनुसार ईसा, आदम तथा मुहम्मद तीनों मिलकर इमाम महदीके रूपमें एकाकार हो गए हैं. जिन जीवोंको मृततुल्य माना गया है वे भी इनके द्वारा पिलाए गए ज्ञानरूपी अमृतको प्राप्त कर अमर पद प्राप्त करेंगे.

सो सारे फना आखर, जेती वस्त कही जाहेर ।
जिन माएने लिए ऊपर, सोए बजूद को रहे पकर ॥ ६१

इस नश्वर जगतमें जितनी सामग्री दिखाई देतीं हैं वे सब अन्ततः नाश होने वालीं हैं. जिन्होंने धर्मग्रन्थोंके मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण किए हैं वे शारीरिक कर्मकाण्डमें ही सीमित रहते हैं. उन्हें आत्मबोध नहीं होता है.

जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कह्या तिन पर ।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते महंमद उमत दरम्यान ॥ ६२

जिन लोगोंमें मात्र बाह्यदृष्टि रहती है उनको ही कयामतके समय नरकाग्निमें जलना पड़ेगा. परमात्माने ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए ही पृथ्वीसे लेकर अन्य सात लोकोंकी रचना की है.

सात हजार राह फिरस्ते, कही इसारते दुनी कयामतें ।
अब खुदाए ने यों कर कह्या, मैं आसमान जिमी से जुदा रह्या ॥ ६३

कुरान या हदीसोंमें सङ्केत दिया है कि नश्वर जगतकी सृष्टिमें देवताओं (फरिश्ता) के सात हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर कयामत होगी. खुदाने यह भी कहा है, मैं पृथ्वी और आकाश (चौदह लोक) से परे हूँ.

जेती कोई पैदाइस कुंन, मोको तिन थें जानो भिन्न ।
मै ना इनमें ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग ॥ ६४

कुन कहनेसे जितनी सृष्टि उत्पन्न हुई है, उनसे मुझे भिन्न समझना. मैं न इनमें

हूँ और न ही इनके साथ हूँ. इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग अचेतन कहे गए हैं.

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरों में नाहीं आप ।
मैं इनसों नहीं गाफिल, ए दुख सुख में रहे मिल ॥ ६५

मेरा इनके साथ कोई मेल नहीं है. मैं स्वयं इन अचेतन प्राणियोंमें नहीं हूँ. मैं इनके प्रति असावधान नहीं हूँ. ये लोग तो नश्वर दुःख और सुखमें रचे-पचे हुए हैं.

सिरक इनोंकी मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं ।
ऊपर से ऊतर्‌या पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी ॥ ६६

मैं इनके अहङ्कारको भी जानता हूँ. इनके कोई भी आचरण मुझसे अज्ञात नहीं हैं. परमधामसे ब्रह्मज्ञानकी वर्षा हुई जिससे परमात्माके भक्तोंका विश्वास परखा गया.

मरतबा इनों देऊं उस्तवार, इन पानी से होए करार ।
इबन अबास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान ॥ ६७

मैं इस ब्रह्मज्ञानकी महिमाको दृढ़ता पूर्वक स्पष्ट कर देता हूँ. ज्ञानकी इस वर्षासे पूरे जगतको शान्ति मिली. अब्बासके बेटे इब्नने अपनी पुस्तकमें उल्लेख किया है कि खुदाके बन्दोंमें आकाशसे वर्षा हुई. वस्तुतः यह तारतम ज्ञानरूपी अमृतकी वर्षा है.

पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर ।
पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावें और ॥ ६८

उसी पुस्तकमें यह भी कहा है, जिब्रील फरिश्ताके पङ्खोंसे होकर बहिश्तोंसे पाँच नहरें उतरीं हैं. वे पाँचों अलग-अलग स्थानोंमें उतरीं. इस रहस्यको इमाम महदीके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं समझता है. [इन पाँचों नहरोंका तात्पर्य पाँच शक्तियों (स्वरूपों) से है.]

उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सचमें ।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥ ६९

परमधामसे पाँचों शक्तियाँ पाँच नहरोंके रूपमें प्रवाहित होकर

श्रीप्राणनाथजीके हृदयरूप एक झरनेमें समाहित हो गईं. हिन्दुस्थान, बल्ख तथा मिश्र आदि स्थानोंकी शक्तियाँ भी श्रीप्राणनाथजीमें एकाकार हो गईं. उनके द्वारा प्रवाहित तारतम ज्ञानसे पत्थरके समान कठोर हृदयवाले लोगोंको भी परम शान्तिका अनुभव हुआ.

ए मेला हुआ आखर दिन, तब नफा मसलत पाया सबन ।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥ ७०

कयामतकी अन्तिम घड़ीमें श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें इन पाँचों शक्तियोंका मिलन हुआ जिससे समस्त जगतको तारतम ज्ञानका लाभ प्राप्त हुआ. दजला और फिरातकी घटनाओंके स्वरूप अलग-अलग कहे गए हैं. बाह्यार्थ ग्रहण करने वाले इनको एक रूपमें समझ नहीं सकते. [इनका तात्पर्य है कि व्रजलीला (दजला) एवं रास लीला (फिरात) के दोनों स्वरूप श्रीप्राणनाथजीमें एकाकार हुए हैं.]

चसमें पहाड जारी करे, चसमें कायम पानी भरे ।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिन्दगानी ॥ ७१

नहरें अपने उद्गम स्थान पहाडको प्रकट करतीं हैं. उनमें सदैव पानी भरा हुआ रहता है. ऐसा कहा जाता है कि पृथ्वीमें बादलोंसे पानीकी वर्षा होती है जिससे जन-जीवन जीवित रहता है. [इसी प्रकार श्रीप्राणनाथजीके हृदयरूपी झरनेसे पर्वतकी भाँति परब्रह्म परमात्माका स्वरूप व्यक्त हुआ है. ब्रह्मात्माएँ उस झरनेसे अपने हृदयमें ज्ञानके वचन धारण करतीं हैं. इस पृथ्वी पर बादलोंसे हो रही वर्षाको सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी द्वारा हुई तारतम ज्ञानरूपी वर्षा कहा गया है, जिससे ब्रह्मात्माओंकी प्रसुप्त चेतना जागृत हुई है.]

उतर्‌या पानी उपर ले जाए, सब कर सके जो कछु ए चाहे ।
इन बिरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप ॥ ७२

इस प्रकार ऊपरसे हो रही ब्रह्मज्ञानरूपी वर्षाका जल (तारतम वाणी) ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतसे ऊपर (परमधाम) की ओर उन्मुख करता है. यह ब्रह्मज्ञान सब कुछ कर सकता है. परब्रह्म परमात्मा स्वयं श्रीप्राणनाथजीके

हृदयमें विराजमान हैं. अन्यथा नश्वर जगतसे दूर परमधाममें रहने वाले परमात्माका इन जीवोंके साथ मिलन कैसे सम्भव होता ?

इन समें उतर्‌या आजूज, और संग इनके माजूज ।
पीछे उतर्‌या जबराईल, लेवे सब को न करे ढील ॥ ७३

इस समय याजूज और माजूज भी उतर आए हैं. तदुपरान्त जिब्रील फरिश्ता अवतरित हुआ. याजूज माजूजकी सेनाओंने सब प्राणियोंका भक्षण करनेमें क्षण मात्रका भी बिलम्ब नहीं किया.

[कयामतकी घड़ीमें याजूज और माजूजको दिन और रातके रूपमें पहचाना गया. वे ही मनुष्य जीवनको क्षीण करनेमें विलम्ब नहीं करते हैं.]

एक मके का काला पथर, कुरान और खुदाएका घर ।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम ॥ ७४

मक्कामें एक काला पत्थर है. कुरानका अवतरण होनेसे मक्काको खुदाका घर कहा है. इसके साथ यह भी कहा है कि इब्राहीम पैगम्बरका स्थान इससे भिन्न है. वहीं पर मुहम्मदके यार मोमिनोंको आराम प्राप्त हुआ. इधर पाषाणहृदय विहारीजी आदिने चाकला मन्दिरको श्रीदेवचन्द्रजीका घर माना किन्तु श्रीदेवचन्द्रजीका घर (जिहां वालानो विश्राम) नवतनपुरी धाम (खीजड़ा मन्दिर) है. श्रीप्राणनाथजी तथा ब्रह्मात्माओंको वहीं पर परमधामका सुख प्राप्त हुआ है.

पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन ।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठायके लिए ॥ ७५

इससे पूर्वमें जितने भी पैगम्बर हुए हैं वे सभी आकर इमाम महदीमें एकाकार हुए. कोई भी आनेमें शेष नहीं रहा. इसी समय इस्त्राफील फरिश्ताने आकर अपनी दुन्दुभीके स्वरसे मिथ्याज्ञानके अहङ्काररूप पहाड़ोंको उड़ा दिया और दूसरी बार दुन्दुभी बजा कर नश्वर जगतके जीवोंको मुक्तिस्थलोंका सुख दिलाया.

ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी ।
बागों ने ताजगीयां पाई, सो भी पानी हादीनें पिलाई ॥ ७६

कुरानमें जिन पाँचों नहरोंकी बात की है और जिनसे दुनियाँको नयाँ जीवन प्राप्त हुआ है ऐसा कहा है, वह श्रीप्राणनाथजीमें स्थित पाँच शक्तियोंके लिए सङ्केत किया है. उनके द्वारा सिंचे गए ज्ञानरूपी अमृतसे नश्वर जगतके जीवोंको अमरत्वकी प्राप्ति हुई और ब्रह्मात्मारूपी उपवनको स्फूर्ति (जागृति) प्राप्ति हुई. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने सर्वप्रथम इन्हें इस ब्रह्मज्ञानका पान करवाया था.

सो भी कहे भिस्त कै बाग, जिनसे खेती पायो सुहाग ।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर ॥ ७७

ब्रह्मात्माओंको बहिश्तोंके उपवन कहा है. उनसे संसारकी खेतीरूप जीवोंको सौभाग्य (अमरत्व) प्राप्त हुआ है. इसका भी मैं रहस्य स्पष्ट कर क्षीर और नीरका विवरण देता हूँ.

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर ।
मलकूती कों खेती कही, इनकों बडाई उनथें भई ॥ ७८

कुरानमें ब्रह्मात्माओं (लाहूती उमत) को अङ्गूरकी खेती कहा है. दूसरी ईश्वरीसृष्टि (जबरूती उमत) को खजूरकी खेती एवं वैकुण्ठके जीव (मलकूती) को सामान्य खेती कहा है. ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टिके कारण ही इन जीवोंको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ है.

दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत ।
तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज इन ठौर ॥ ७९

कयामतके समयमें सद्गुरुने ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि इन दोनों समुदायको अपने-अपने धाममें जागृत किया. उनके प्रतापसे तीसरी जीवसृष्टिको भी मुक्तिस्थलोंका सुख प्राप्त हुआ. उन सभीका परमतीर्थ इन्हीं ब्रह्मात्माओंके चरणकमल हैं.

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासल आई ।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छते का जहूर ॥ ८०

परमधामके उपवनरूप ब्रह्मात्माओंका तारतम ज्ञानरूप फल संसारके सभी जीवोंको प्राप्त हुआ. इस प्रकार इस जगतमें परमात्माकी कृपाकी वर्षा हुई. छत्रसालने इस रहस्यको स्पष्ट किया है.

हुआ खुदाएके हजूर, बात याही की हुई मंजूर ॥ ८१

जो ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुके चरणोंके निकट आए हैं उनकी सभी बातें परमात्माको स्वीकृत हुई हैं.

प्रकरण ८ चौपाई ३१०

लिख्या सिपारे सूरतों, और आएतों देखो जाए ।
क्यामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए ॥ १

कुरानके भिन्न-भिन्न सिपारों, अध्यायों तथा आयतोंको भलीभाँति देखो. उनमें अनेक स्थानोंमें कयामतके सङ्केतोंका उल्लेख है.

अब लों तारीख आखर की, न पाई कुरानथें किन ।
सो रूहअल्ला के इलम से, जाहरे हुई सबन ॥ २

आज तक कुरानके पढ़नेवालोंमें-से किसीको भी निश्चित रूपसे कयामतकी घड़ी प्राप्त नहीं हुई. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके तारतम ज्ञानसे ही वह घड़ी सर्वत्र प्रकाशित हुई है.

सबों सिपारों क्यामत, एही लिख्या है मजकूर ।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर ॥ ३

यद्यपि कुरानके प्रायः सभी सिपारोंमें कयामतका उल्लेख है. किन्तु सद्गुरुके प्रकट हुए बिना इन रहस्यमय वचनोंका प्रकाश कैसे प्राप्त किया जा सकता था.

आगूं नव सदीय के, कह्या होसी रूहों मिलाप ।
बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप ॥ ४

वहाँ पर इस प्रकार कहा है, नवमी सदीके पश्चात् मुहम्मदी दसवीं सदीमें

इस जगतमें ब्रह्मात्माओंका मिलन होगा. उनका यह मिलन बहुत बड़ा माना जाएगा. उस समय जगतके स्वामी परमात्मा स्वयं प्रकट होकर सबको दर्शन देंगे.

बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे ।
गाजी मिसल मोमिन की, रूह अल्ला उतरे कहे ॥ ५

तदनुसार दसवीं सदी मुहम्मदीके पूर्ण होनेमें नौ वर्ष और तीन महीने शेष रहने पर धर्म पर समर्पित होनेवाली ब्रह्मात्माओंका समुदाय श्रीश्यामाजी स्वरूप सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके साथ अवतरित हुआ.

रूह अल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम ।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम ॥ ६

कुरानके अनुसार श्रीश्यामाजीने दूसरा तन धारण कर अपना नाम अधिक प्रकाशित किया. सद्गुरुके दूसरे स्वरूप (महामति श्रीप्राणनाथजी) सबकी प्रार्थनाओंको स्वीकार कर उनकी एक प्रार्थनाके फलस्वरूप हजार प्रार्थनाओंका फल प्रदान करेंगे.

बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजलें भई जित ।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरानमें तित ॥ ७

ग्यारहवीं सदीमें उनके ज्ञानका प्रकाश सर्वत्र प्रकाशित होगा. उनके जीवनमें जैसी परिस्थितियाँ आतीं रहीं उसी प्रकार तारतम वाणीका अवतरण हुआ. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजीको परब्रह्म परमात्माकी कृपारूपी सम्पदा जैसे-जैसे प्राप्त होती रही है कुरानमें उनका उल्लेख उसी रूपमें है.

एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन ।
मुदतें एक जुदा हुआ, साल सतानबे पोहोंचे इन ॥ ८

किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत ।
महीने आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत ॥ ९

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीका स्वरूप एक ही था. उनके दो पुत्र (मानस एवं औरस अर्थात् प्राणनाथजी एवं विहारीजी) हुए. कुछ समय व्यतीत होने पर

उन दोनोंमें-से एक (विहारीजी) दूसरे (प्राणनाथजी) से अलग हुए. श्रीदेवचन्द्रजीके अवतरणके सतानबे वर्ष व्यतीत होने पर (अनुप शहरमें) इलाही किताब 'सनन्ध' का अवतरण हुआ. तदनन्तर आठ महीने तक औरङ्गजेब तथा उनके कर्मचारियोंके साथ श्रीप्राणनाथजीका धर्मयुद्ध चलता रहा. इसीके लिए वे सूरत (मदीना) से आगे बढ़े थे.

पांच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई ।
ए साल निन्यानबे लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई ॥ १०

इस प्रकार परब्रह्म परमात्माके आदेशसे सुन्दरसाथकी पहचानके लिए पाँच ग्रन्थ (रास, प्रकाश, षट्ऋतु, कलश एवं सनन्ध) प्रदान किए गए. रामनगरमें पहुँचने पर अध्यात्म क्षेत्रके सभी गूढ़ रहस्य स्पष्ट हुए. इस समय सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके जन्मसे लेकर निन्यानबे वर्ष व्यतीत हुए हैं.

लकब इद्रीस जान्या गया, सौ सालकी मजल ।
जित तीस वरक खुदाए के, हुए थे नाजल ॥ ११

कतेब ग्रन्थोंमें आदम पैगम्बरको सौ वर्ष पश्चात् इद्रीस पैगम्बरकी उपाधि प्राप्त हुई थी. उस समय खुदाके द्वारा दी गई तीस आयतें प्रकाशमें आईं थीं. इसी प्रकार सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके अवतरणके सौ वर्ष पश्चात् श्रीप्राणनाथजीको रामनगरमें इद्रीस पैगम्बरकी उपाधि मिली. उससे पूर्व मेरतामें जो तीस सनन्धें उतरीं थीं जिनको औरङ्गजेबने स्वीकार नहीं किया. उनको ही रामनगरके मुस्लिम विद्वानोंने स्वीकार किया.

टोना किया महंमद पर, अग्यारे गांठ लगाए ।
वह गांठें छूटे बिना, काहूं ना सकें जगाए ॥ १२

हदीसोंमें लिखा है कि किसी यहूदी लड़कीने रसूल मुहम्मद पर जादू-टोना किया. उसने रसूल मुहम्मदके नामसे एक रस्सीमें ग्यारह गाठें लगाई. जब तक वे गाठें नहीं खुलीं तब तक रसूल मुहम्मद विशेष आयतें न ला सके. यह प्रसङ्ग ग्यारहवीं सदीमें धर्मग्रन्थोंके रहस्योंके स्पष्ट होने और तारतम ज्ञानके अवतरणकी ओर सङ्केत करता है.

दस पर एक सदी भई, छूट गईं गांठें सब ।
आमर महंमद आखर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन तब ॥ १३

जब ग्यारहवीं सदी हुई तब सभी गाठें खुल गईं अर्थात् धर्मग्रन्थोंके सभी रहस्य स्पष्ट हुए. रसूल मुहम्मदने कहा था कि कयामतके समय परमात्मा स्वयं प्रकट होंगे उनकी वह बात पूर्ण हुई. सभी ब्रह्मात्माओंने ब्रह्म स्वरूप सद्गुरुका ज्ञान प्राप्त कर अपनी सुरताको परमधाममें पहुँचाया.

दस और दोए बुरज कहे, वह बारहीं सदी क्यामत ।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत ॥ १४

कुरानके सुरा अलबूजमें बारह बुर्जोंका उल्लेख आता है. वह बारहवीं सदीमें कयामत होनेका सङ्केत है. जो लोग कुरानके बाह्य अर्थों तथा शब्द जालमें बँधे हुए हैं वे कयामतकी घड़ीके लिए कहे गए इन सङ्केतोंको कैसे समझ सकते हैं ?

दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक ।
आखर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक ॥ १५

कुरानके सुर अल फज्रमें दसवीं सदीके पश्चात् दो स्वरूपोंका उल्लेख है. यह भी दो महान् सद्गुरु (श्री देवचन्द्रजी एवं महामति प्राणनाथजी) की ओर सङ्केत है. उन दोनोंने कयामतकी अन्तिम घड़ी प्रकट कर अपने ब्रह्मज्ञानके द्वारा जगतके सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड कर दिया.

इन बीच जो गुजरे, तिन वरसों की तफसीर ।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सतर की जंजीर ॥ १६

कयामतका समय होने तक जो काल व्यतीत हुआ उन वर्षोंका विवरण इस प्रकार है. ग्यारहवीं सदीके अन्तिम दस वर्ष ब्रह्मात्माओंकी जागृतिके हैं, बारहवीं सदीके आरम्भके तीस वर्ष उत्तम जीवोंकी जागृतिके हैं. तदुपरान्त शेष सत्तर वर्ष पुलेसिरातके अर्थात् कर्मके बन्धनके कहे गए हैं.

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब ।
पुल सरात सतर कहे, पोहोंची आखर फिरस्तों तब ॥ १७

ग्यारहवीं सदी अन्तिम इन दस वर्षोंमें ब्रह्मात्माएँ जागनी रास लीला कर

परमधाम चलीं गईं. बारहवीं सदीके तीस वर्षमें जीवसृष्टिको मुक्तिस्थलोंमें स्थान प्राप्त हुआ. बारहवीं सदीके शेष सत्तर वर्ष पुलेसिरातके कहे गए हैं. उसके अन्तिम चरणमें सभी दैवी शक्तियों (फरिश्तों) को तारतम्य ज्ञानका प्रकाश पहुँचा.

पीछे तेरहीं में उठ खडे, सुख कायम पोहोंचे सब ।
आठों भिस्त बिवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब ॥ १८

उसके उपरान्त तेरहवीं सदीमें जो जीव जागृत हुए (शरीररूप कब्रमें मुर्देकी भाँति प्रसुप्त जीव जब उठ कर खड़े हो गए तब) उन सभीको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ. सभी जीवोंको अपने-अपने कर्तव्यके अनुरूप आठ प्रकारके मुक्तिस्थलोंमें स्थान दिया गया अर्थात् वे सभी अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें अङ्कित हुए. अब वे वहाँसे कभी भी दूर नहीं होंगे.

प्रकरण ९ चौपाई ३२८

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी ।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत ॥ १

कुरानके चौथे सिपारेमें जिस प्रकार उल्लेख है, उसीके अनुरूप मैंने उसके गूढ़ रहस्य हृदयमें धारण किए हैं. अब मैं ब्रह्मात्माओंके लिए उनको प्रकट करता हूँ क्योंकि कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेकी घड़ी (ग्यारहवीं सदी) आ गई है.

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे ।
कैयों यकीन कैयों मुनकर, यों लिख्या होसी आखर ॥ २

वहाँ पर इस प्रकार लिखा है कि कयामतकी घड़ी आने पर कितने लोगोंके मुख उज्ज्वल होंगे तो कितने लोगोंके मुख काले होंगे. अनेक लोग उस समय पर अवतरित परमात्माके प्रति विश्वास करेंगे तो अनेक लोग उनसे विमुख रहेंगे. अन्तिम समयमें ऐसी स्थिति होगी.

हक तालाने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान ।
अंजीर तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे ॥ ३

कुरानके अनुसार खुदाने जो कुछ कहा है अवज्ञाकारी लोग उसे कपट भावसे

छिपाते हैं. जो लोग अंजील तथा तौरातसे विमुख होंगे उनको ही विशेष रूपसे अवज्ञाकारी (काफिर) कहा गया है. (इधर परब्रह्म परमात्माके आदेश स्वरूप रास, प्रकाश, कलश आदि ग्रन्थ श्रीप्राणनाथजीके द्वारा अवतरित हुए उनको विहारीजीने कपट भावसे छिपानेका प्रयत्न किया. जो इन ग्रन्थोंसे विमुख होंगे वे ही वास्तवमें नास्तिक कहलाएँगे).

काफर दिलमें कीना आने, अंजीर तौरेत पर मारे ताने ।
जो खुदाएका पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर ॥ ४

ऐसे अवज्ञाकारी लोग हृदयमें कपट भाव रखकर अंजील एवं तौरातके वचनों पर ताना मारते हैं. परमात्माका सन्देश लेकर आनेवालोंसे जो विमुख होते हैं उनको ही अवज्ञाकारी (काफिर) कहा है. इस प्रकार हृदयमें कपट भाव होनेके कारण विहारीजी रास, प्रकाश, कलश आदि ग्रन्थोंको देख कर दुःखी हुए और उन्होंने सुन्दरसाथको उन ग्रन्थोंके ज्ञानसे वञ्चित रखनेका प्रयास किया.

जुबां यकीन क्यामत न माने, ऊपर इसलाम के कीना आने ।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर ॥ ५

ऐसे लोग मुखसे तो रसूलके प्रति विश्वास करते हैं किन्तु उनके बताए हुए कयामतके सङ्केतोंके प्रकट होने पर विश्वास नहीं करते हैं एवं धर्मके वचनोंके प्रति कपट भाव रखते हैं. जो लोग ऐसे वचनोंसे विमुख होते हैं उनको ही कुरानमें काफिर कहा है.

मुनकर हुकम और क्यामत, हुए नाहीं नेक बखत ।
फंद माहें हुए गिरफतार, भमर हलाकी पडे कुफार ॥ ६

जो लोग परमात्माके आदेश एवं कयामतकी घड़ीसे विमुख होते हैं उनके भाग्य कभी नहीं खुले हैं. ऐसे लोग माया-मोहके बन्धनोंमें ही फँसे हुए हैं और भवसागरकी भँवरीमें पड़कर जन्म-मरणरूपी दुःख भोग रहे हैं.

उस्तवार न पाई सुंनत, ए जो हुए बद बखत ।
सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमातसे तिन ॥ ७

ऐसे लोगोंने धर्मनिष्ठ आत्माओंका जैसा धर्ममार्ग प्राप्त नहीं किया. यही उनके

दुर्भाग्यका सूचन है. ब्रह्मात्माओंने परमात्माके स्वरूपकी पहचान की है इसलिए उनको उज्ज्वल मुखवाले कहा है.

नव सदीके आगे रोसन, कह्या होसी भिस्तका दिन ।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत ॥ ८

हदीसोंमें कहा है, नवमी सदीके पश्चात् ब्रह्मज्ञानका प्रकाश होगा. वह सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें पहुँचानेका दिन है. दसवीं सदी (अरफा) के पश्चात् जीवोंको बहिश्तोंमें अखण्ड सुख प्राप्त करनेका दिन आएगा. इस प्रकार कयामतके दिनके लिए कहे गए सभी वचन इस समय स्पष्ट होंगे.

रूहों का होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप ।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार ॥ ९

उस समय उन ब्रह्मात्माओंका बड़ा मिलन होगा जिनका चिन्मय स्वरूप (पर आत्मा) दिव्य परमधाममें है. उस समय उनको इसी नश्वर जगतमें परब्रह्म परमात्माके दर्शन होंगे. रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट तीनों श्रेष्ठ स्वरूप इमाम महदीमें एक साथ सम्मिलित होंगे.

ए हमेसां हैं भिस्त के, नहीं बराबर कोई इनके ।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त ॥ १०

ये तीनों स्वरूप अखण्ड परमधामके हैं. इनके समकक्ष अन्य कोई नहीं है. इनका मुखारविन्द दिव्य तेजसे उज्ज्वल है. इन्होंने ही परमात्माके मार्ग पर दृढ़ रहनेके लिए अनेक कष्ट सहे हैं.

जो गुजर्‌या बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत ।
ए जो कही आएत साहेब, सो पढी मैं कहे महंमद ॥ ११

इन तीनों स्वरूपोंके जीवनमें जो-जो घटनाएँ घटित हुई हैं, रसूल मुहम्मदने खुदाके आदेशसे उनकी भविष्यवाणी की है. उन्होंने इस सम्बन्धमें जो आयतें कही हैं अन्तिम मुहम्मद कहते हैं कि उन सभीको मैंने पढ़ा है.

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप ।
कलाम अल्लाका जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर ॥ १

कयामतका दिन प्रकट होना धर्मग्रन्थोंकी भविष्यवाणीके विरुद्ध नहीं है. कुरानमें उल्लेख है कि नवमी सदीके पश्चात् सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीको परब्रह्म परमात्माके दर्शन प्राप्त हुए. कयामतकी इस घड़ीमें कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होनेका विवरण कुरानके ग्यारहवें सिपारेमें दिया है.

ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन ।
बीच राह हक के एक, तिन नेकों का बदला नेक ॥ २

यह इसलिए लिखा गया है कि धर्ममार्ग पर चलनेवाली आत्माओंको परमधामके अखण्ड सुख प्राप्त होने हैं. इस धर्ममार्ग पर श्रीदेवचन्द्रजी जैसे विशिष्ट व्यक्ति चले हैं. उनका अनुसरण करनेवाली आत्माओंको भी वैसा ही श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा.

उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित ।
बोहोतायत बीच यों नबिएं, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए ॥ ३

उनसे भी अधिक ख्याति उनके दूसरे स्वरूप श्रीप्राणनाथजीको प्राप्त हुई है. उनसे जगतके जीवोंको अनेक लाभ लेना है. बहुतायत नामक ग्रन्थमें उल्लेख है कि श्रीप्राणनाथजीने अपनी ब्रह्मात्माओंकी एक प्रार्थनाके स्थान पर उनको हजारों प्रार्थनाओंके फलसे भी अधिक फल प्रदान किया है.

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए ।
तिनको सवाब बडा बुजरक, देवे एही साहेब हक ॥ ४

उनके सम्मुख जो नमन करेगा उसका एक नमन अन्य हजार नमनसे भी अधिक उत्तम माना जाएगा. उनको अधिक श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा. परमात्माके ये ही स्वरूप उनको मुक्तिस्थलोंका सुख प्रदान करेंगे.

नव सै नबे हुए वरस, और नव मास उतरे सरस ।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल ॥ ५

हदीसोंमें ऐसा उल्लेख है कि रसूल मुहम्मदके पश्चात् नौ सौ नब्बे वर्ष एवं

नौ महीने व्यतीत होने पर श्रीदेवचन्द्रजी प्रकट होंगे जब वे अपना दूसरा शरीर धारण करेंगे अर्थात् श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें बैठेंगे तब सभी लोगोंकी प्रार्थना स्वीकार करेंगे.

सो बखसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे ।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर ॥ ६

ये ही स्वरूप सभी जीवोंको मुक्तिका फल प्रदान करेंगे एवं एक प्रार्थनाके स्थान पर उन्हें हजार प्रार्थनाओंका फल प्रदान करेंगे. ब्रह्मात्माएँ इनके अनुरूप चल कर स्वयंको परमात्माके मार्ग पर समर्पित करेंगी.

खिलाफ राह चलें काफर, दुनियां को देखावें डर ।
ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन ॥ ७

नास्तिक लोग इससे विपरीत मार्ग पर चलेंगे. वे अन्य लोगोंको भी भय दिखाकर अपनी ओर खींचेंगे. हदीस आदि ग्रन्थोंमें खुदाके आगमनकी जो घड़ी निश्चित कही गई है उसी समय ब्रह्मात्माएँ भी इस जगतमें अवतरित हुईं.

होए आवाज लडाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त ।
कस्त करें सब आरब, ए आएत उतरी है तब ॥ ८

हदीसोंमें यह भी उल्लेख है कि रूहअल्लाह जब दज्जालको मारेंगे उस समय हा-हाकार मचेगा. उनके अनुयायी भी उस समय परिश्रम करेंगे. जब सभी अरब निवासी भी कष्ट करेंगे तब उनको आयत उतरेगी. (इस प्रकार सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानके द्वारा लोगोंके हृदयसे नास्तिक भावनाको दूर किया. तब जगतमें हा-हाकार मचा. ब्रह्मात्माओंको भी कठिनाइयाँ झेलनी पडी. इसी अवसर पर श्रीप्राणनाथजीके मुखारविन्दसे प्रार्थनाके रूपमें ब्रह्मवाणी अवतरित हुई है.)

ना रवा मोमिन ना चाहें, घर छोड बाहेर लडने को जाएं ।
होए सेहेर उजाड बखत सोए, खाने पीने की ढील होए ॥ ९

ब्रह्मात्माएँ निषिद्ध वस्तुओंकी अपेक्षा नहीं रखतीं हैं. अपने घर-शरीरमें

स्थित गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको वशीभूत करना छोड़ कर वे बाहर दूसरोंसे लड़ने नहीं जातीं हैं. हदीसोंमें लिखा है (ईसा रूह अल्लाह दज्जालको मारेंगे तब) सारा शहर विरान हो जाएगा और लोगोंको खाने पीनेमें भी बिलम्ब होगा. इसका तात्पर्य है कि उस समय सर्वत्र कोलाहल मचा हुआ होगा. धर्म कार्यके प्रति लोगोंका उत्साह शून्य होगा. लोगोंको आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करनेमें विलम्ब होगा.

पोहोंचे जब एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत ।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन किसों मुराद किबला ॥ १०

जब ऐसी स्थिति आएगी तब भी तुम आत्मसंयम पर बल देना. अन्य लोगोंसे लड़नेके लिए बाहर नहीं जाना. उस समय सभी जातियों एवं समुदायोंका बहुत बड़ा मिलन होगा. वे सभी इन ब्रह्मात्माओंके साथ परमधामके सुखोंकी चाहना करेंगे.

जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड न जाए लडाई काम ।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे ॥ ११

जिन ब्रह्मात्माओंका घर परमधाम कहा है, वे अपने गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके साथ युद्ध (संयम) करना नहीं छोड़ेंगी. उनके पीछे जो लोग रहेंगे वे भी ज्ञानके चातुर्य्यसे अपनी इन्द्रियोंका संयम करना चाहेंगे.

जो कोई उन गामके हैं, तिनको इलम दीन का कहे ।
सवा नव बरस दसमीके बाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी ॥ १२

जो आत्माएँ दिव्य परमधामकी हैं उनके लिए ही यह धर्मका उपदेश है. दसमी सदीके जब सवा नौ वर्ष शेष रह गए उस समय श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके अवतरणके साथ-साथ दज्जालके साथ युद्ध करनेकी बातें भी प्रारम्भ हो गईं.

कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेडसे केहेनी ।
मरद तीनों पर है मुदार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥ १

हुसैन मुहम्मद नामक खलिफाकी कुरानकी टीका (तफ्सीर हुसैनी) प्रारम्भसे ही इस्लाम परम्परामें श्रेष्ठ मानी गई है. उसके अनुसार कुरानमें तीन

शक्तिशाली स्वरूपोंकी चर्चा है. वे कयामतका सन्देश देनेवाले होनेसे विशिष्ट माने गए हैं.

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप बिसेक ।
सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित ॥ २

वे तीनों स्वरूप एक ही हैं. खुदाका सन्देश देनेके कारण तीनों ही विशिष्ट कहलाए हैं. इन तीनोंकी विशेषताएँ भी बताई गई हैं. जब उनके रहस्य स्पष्ट होंगे तब सबको ज्ञात होगा.

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल ।
ए इलम ले रूहअल्ला आया, खोल मायने इमाम केहेलाया ॥ ३

खुदाका सन्देश ले आनेके कारण मुहम्मद रसूल कहलाए. किन्तु वह सन्देश उनके द्वारा ही स्पष्ट होगा जिसको परब्रह्म परमात्माने इसकी शोभा दी है. इन रहस्योंको स्पष्ट करनेवाला ब्रह्मज्ञानरूप तारतम ज्ञान लेकर श्रीदेवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) इस जगतमें अवतरित हुए. वे ही श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें बैठ कर इन रहस्योंको स्पष्ट करनेके कारण इमाम महदी कहलाए.

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदास सरूप सरस ।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखरी इमाम ॥ ४

रसूल मुहम्मदके पश्चात् दसवीं सदीके सवा नौ वर्ष शेष रहने पर श्रीदेवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) प्रकट हुए. तदुपरान्त जब वे दूसरे स्वरूपमें अर्थात् श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें विराजमान हुए तब आखिरी इमाम (इमाम महदी) कहलाए. इन दोनों स्वरूपोंको कुरानमें चाँद तथा सूर्य कहा है.

कहूं कुरान देखियो अंदर, पट उडाऊं आडा अंतर ।
उस ईसे पीछे जो उस्तवारी, सो तो कायदे खुदाके सिफत सारी ॥ ५

अब मैं कुरानके इन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर तुम्हारी सभी भ्रान्तियोंको मिटा देता हूँ. कुरानमें ईसा रूहअल्लाहके पश्चात् प्रकट होनेवाले इमाम महदीको और अधिक दृढ़ कहा है. उनके नीति-नियम तथा विशेषताएँ परमात्माके समान मानी गई हैं.

बुनियाद रसूल सोई आखरी, ए सिफत सारी इनकी करी ।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद करे हुसियार ॥ ६

इन तीनों स्वरूपोंमें आदि रसूल मुहम्मद हैं. उन्होंने ही इन अन्तिम स्वरूपकी महिमा गाई है. इन इमाम महदीके अनुयायी जितनी भी ब्रह्मात्माएँ हैं वे पवित्र हृदयसे सावचेत होकर उनकी स्तुति करते हैं.

एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे ।
इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक ॥ ७

इस प्रकार कुरानमें एकसे बढ़ कर दूसरे स्वरूपकी महत्ताका सङ्केत दिया है. श्रीदेवचन्द्रजी जब दूसरा शरीर धारण करेंगे(श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें अधिष्ठित होंगे) तब वे सबको परमधामका दिव्य सन्देश देंगे. सभी लोग उनके चरण कमलोंमें नतमस्तक होंगे वे परमकृपालु तथा पवित्र हृदयवाली ब्रह्मात्माओंमें शिरोमणि कहलाएँगे.

आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी ।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही ॥ ८

उनका ज्ञान सबसे आगे बढ़ा है अर्थात् उन्होंने परब्रह्म परमात्मा तथा परमधामकी पहचान करवाई है. वहाँ पर इस प्रकार कहा है कि उनको धार्मिक जगतका साम्राज्य मिला है. वे परमधामकी विशिष्ट आत्माओंमें शिरोमणि कहलाए हैं.

उतपन अपनी बडी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत ।
बडे साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई ॥ ९

परब्रह्म परमात्माने उनको अपनी अपार सम्पदाके साथ प्रकट किया है. परब्रह्म परमात्माकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंका समुदाय एवं ईश्वरीसृष्टि मित्रोंकी भाँति इनके दोनों ओर विराजमान हैं. कुरानके अनुसार इस जगतमें परब्रह्म परमात्माका साम्राज्य स्थापित हुआ. वे स्वयं परमात्माके ज्ञान स्तम्भके रूपमें प्रकट हुए हैं.

जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों यकीन ।
मोती कह्या डबे बुजरक, उतहीं का सितारा हक ॥ १०

इनको ही परमात्माने सत्यधर्मकी स्थापनाका दायित्व सौंपा है. इन्होंने ही परमधामकी सम्पदा प्रदान कर सबको परब्रह्म परमात्माके प्रति विश्वास दिलाया. उनको ही कुरानमें मोतीस्वरूपा ब्रह्मात्माओंमें सबके शिरोमणि कहा गया है. क्योंकि दिव्य परमधामकी पहचान करवाने वाले नक्षत्र ही यही हैं. [डब्बेकी विशेष मोतिका तात्पर्य यह है कि वे परमधाम-मूलमिलावामें स्थित ब्रह्मात्माओंमें शिरोमणि हैं.]

दबदबे का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर ।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादीसे होए पेहेचान ॥ ११

इनके दिव्य ज्ञानका प्रभाव सर्वत्र है क्योंकि इनको परब्रह्म परमात्माकी असीम कृपा रूप छत्रछाया प्राप्त है. इस प्रकार कुरानमें जितने भी ऐसे सङ्केत दिए गए हैं उनका रहस्य इन सद्गुरुकी पहचानसे ही स्पष्ट हो सकते हैं.

सिरदार अस्वार इजत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान ।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बखसीस चाहे बखत की पना ॥ १२

इनके लिए ही शास्त्रोंमें ज्ञानरूपी घोड़े पर आरूढ़ होकर प्रकट होने वाले कल्की अवतार कहा है. कतेब ग्रन्थोंमें इनको ही दरगाहका शेर अली कहा है. यही स्वरूप इस समयके धर्मसम्राट हैं. सभी लोग इनकी शरण प्राप्त कर परमात्माकी कृपाकी अभिलाषा रखते हैं.

इन गुलजारी की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए ।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन ॥ १३

इनके हृदयसे प्रस्फुटित तारतम सागररूपी उपवनकी सुगन्धिसे सभीके हृदय एवं आत्मा आलोकित होते हैं. इनके द्वारा प्रदत्त जागृत बुद्धिका तारतम ज्ञान ही समस्त जगतमें व्याप्त होकर सबको प्रकाशित कर रहा है.

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत ।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील ॥ १४

इनको ही कुरानमें चन्द्र एवं सूर्य कह कर श्रेष्ठ सम्पदा कहा है. इनको

परमधामकी और चार दैवी सम्पदा प्राप्त हुई है. इनके द्वारा ही जिब्रील फरिश्ता ब्रह्मात्माओंकी वकालत करता है एवं इस्त्राफील फरिश्ता अपनी दुन्दुभी बजाकर अहङ्काररूपी बड़े-बड़े पर्वतोंको उड़ा देता है.

रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर ।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत ॥ १५

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) अपने दिव्य तारतम ज्ञानके साथ इनके हृदयमें विराजमान हैं. रसूल मुहम्मद भी परमात्माके आदेश सहित सदैव इनके निकट उपस्थित हैं. यह सम्पूर्ण शोभा इमाम महदी स्वरूप श्रीप्राणनाथजीको प्राप्त हुई है. ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि इन दोनोंका समुदाय सदैव उनके साथ है.

ढूंढेंगे हर घडी मरातबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा ।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान ॥ १६

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है कि जगतके मनुष्य इनके अवतरणकी श्रेष्ठ घड़ीकी प्रतीक्षा करेंगे. समस्त जगतमें परमात्माके सन्देश वाहकके रूपमें इनका ही वर्चस्व रहेगा. इनके द्वारा जगतके जीवोंको दिव्य परमधामका लक्ष्य प्राप्त हुआ और लोगोंने इनकी पहचान कर परमधामकी प्राप्तिकी कामना की.

इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार ।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत ॥ १७

इस स्वरूपको परमात्माका प्रेम प्राप्त है. ये हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों समुदायोंको ब्रह्मज्ञान देनेमें समर्थ हैं. परब्रह्म परमात्मासे उनको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि दोनों समुदायोंके लोग उनके चरणोंमें बैठ कर मोक्षफल प्राप्त करते हैं.

सब रोसनाई तमामियत, पाई बुजरकी कर कर कस्त ।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब ॥ १८

इन्होंने बड़ी तपस्या कर ब्रह्मज्ञानके द्वारा जगतको प्रकाशित करनेकी शोभा प्राप्त की है. उनके मुखारविन्दसे सभी ग्रन्थ प्रकट हुए तथापि इन्होंने रास,

प्रकाश, षट्ऋतु एवं कलशके द्वारा ब्रह्मधामके रहस्योंको प्रकाशित कर दिया.

जवेर बयान तोहफे हुकम, चार जिलदों पर दई खसम ।
तलब पाकी की पकडी, तरतीब तमामियत पाई बडी ॥ १९

परब्रह्म परमात्माने रत्नोंसे भी अधिक मूल्यवान् उक्त चार ग्रन्थोंके अतिरिक्त इनको एक और सनन्ध ग्रन्थ प्रदान किया. जब उन्होंने इससे भी अधिक श्रेष्ठ कामना की तब उनको कयामतकी घड़ी प्रकट कर समस्त जीवोंको मुक्ति प्रदान करनेका दायित्व प्राप्त हुआ.

पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत ।
कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत ॥ २०

जब उनको कतेब पक्षकी पहली पुस्तक सनन्ध प्राप्त हुई और कुरानके गूढ़ रहस्योंका सङ्केत स्पष्ट हुआ उसे लेकर उन्होंने परब्रह्म परमात्माके संरक्षणसे कयामतका दायित्व लिया तब वे विभिन्न स्थानोंमें विचरण कर सुन्दरसाथको जागरण करने लगे.

लिखना बाकी जिल्दका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे ।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर॥ २१

अपनी वाणीमें कुरानके सभी रहस्य स्पष्ट करना शेष रहनेसे उन्हें उन रहस्योंको और स्पष्ट करनेके लिए प्रेरणा प्राप्त हुई. इसलिए उन्होंने अपनी वाणीमें विभिन्न स्थानों पर कुरानकी भिन्न-भिन्न कड़ियोंको मिलाकर स्पष्ट किया. यह सम्पूर्ण कार्य इमाम महदीके अतिरिक्त अन्य कौन कर सकता ?

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थें तिन पाया हक ।
इत थें वरस सतानबे, तित दूजे जामें जाहेर भए ॥ २२

सनन्ध ग्रन्थके अन्तिम प्रकरणोंसे श्रेष्ठ ब्रह्मात्माओंने कयामतकी निश्चित तिथिका ज्ञान प्राप्त किया. तथापि सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके अवतरणसे सतानबे वर्ष व्यतीत होने पर (हरिद्वारके कुम्भ मेले पर) श्रीप्राणनाथजी उनके दूसरे स्वरूप (विजयाभिनन्द निष्कलङ्क बुद्ध) के रूपमें प्रसिद्ध हुए.

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत ।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर ॥ २३

श्रीप्राणनाथजीको मेरतामें ही (मुल्लाकी अजानमें) परोक्ष सङ्केत प्राप्त हुए थे. तत्पश्चात् अनूप शहरमें सनन्ध ग्रन्थके रूपमें कतेब ग्रन्थोंका ज्ञान प्रकट हुआ. औरङ्गजेब तथा उनके दरबारी लोगोंके साथ दिल्लीमें आठ महीनों तक धर्मचर्चा होती रही. उसी समय रसूल मुहम्मदकी भविष्यवाणीके अनुरूप दुनियाँको सनन्ध ग्रन्थ प्राप्त हुआ.

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई ।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान ॥ २४

उस समय श्रीप्राणनाथजीके साथ जितनी ब्रह्मात्माएँ थीं उनकी विनम्रता एवं धैर्यकी बड़ी परीक्षा हुई. कुरानके टीकाकार मुहम्मद हुसैनने पहलेसे ही यह लिख दिया था कि अन्तिम समयमें आने वाले खुदाके सन्देशवाहक (इमाम महदी) के द्वारा कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होंगे.

ए जो दूजे जामें की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई ।
आगे दिन केहेने क्यामत, सोई खोलों मैं हकीकत ॥ २५

इनको ही सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) का दूसरा स्वरूप माना है. उनमें परमधामकी पाँच शक्तियाँ (श्रीधनीका जोश, श्रीश्यामजीकी आत्मा, तारतम ज्ञान, श्रीराजजीका आदेश एवं परमधामकी जागृत बुद्धि) समाविष्ट हुई हैं. अब इससे आगे कयामतकी घड़ीका उल्लेख करना है. मैं उस रहस्यको भी स्पष्ट कर देता हूँ.

प्रकरण १२ चौपाई ३७६

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही ।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए ॥ १

पूर्व प्रकरणमें कुरानके पहले सिपारेका विवरण दिया था. प्रथम सिपारेमें कयामतकी घोषणा है, उसको सोलवें सिपारेके साथ मिलान कर उसे और

स्पष्ट कर देता हूँ. वहाँ पर इस प्रकार उल्लेख है, सद्गुरुके द्वारा स्पष्ट किए बिना कयामतकी घड़ी समझमें नहीं आती है.

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे ।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल ॥ २

वहाँ पर जिकरिया पैगम्बरका वृत्तान्त है. उसने परवरदिगारसे प्रार्थना की, मैं आपकी सेवामें भी नहीं था. मैंने आपको स्मरण भी नहीं किया. मैं पूजा-पाठ आदि सभी नियमोंको भी भूल चुका हूँ तथापि आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर मुझ पर कृपा की (मुझे पुत्र प्रदान किया).

तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई ।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन ॥ ३

हे परवरदिगार ! आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार की जिससे मुझे शान्ति मिली. आपने मुझे जो पुत्र दिया है उसमें आपकी सभी विशेषताएँ हैं. कुरानके इस प्रसङ्ग पर श्रीदेवचन्द्रजी (हजरत ईसा) ने जो विवेचन किया है उन वचनों पर तुम विचार करो.

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर ।
पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो बरपाए करे दीनकी बात ॥ ४

जिकरिया पैगम्बरने पुनः यह कहा, निश्चित रूपसे मुझे डर है. इस समय जो मेरी सन्तान उपस्थित है वह मेरी मृत्युके पश्चात् मेरे ज्ञानका प्रकाश फैलानेमें समर्थ नहीं है.

पातासाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत ।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत ॥ ५

मेरी मृत्युके बाद मेरे अनुयायियोंमें प्रभुत्व जमानेवाले एवं मेरे आदेशका पालन करवाने वाले योग्य उत्तराधिकारी (खलिफा) मुझे चाहिए.

ना जननेवाली मेरी औरत, अठानबे बरस की मजल है इत ।
और बस बखस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर ॥ ६

इस समय मेरी धर्मपत्नी प्रजनन शक्ति योग्य नहीं है. क्योंकि उसकी आयु

अठानब्बे वर्षकी हो गई है. बस, मेरी एक ही माँग है, इससे अतिरिक्त मुझे कुछ न दें. मुझे विश्वास है कि यह कार्य निश्चय ही आपके निकट है अर्थात् यह कार्य आपसे होगा.

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए ।
लेवे मिरास इमामत, लेवे मुझसे हकीकत ॥ ७

मुझे ऐसा पुत्र दें जो धर्म पर दृढ़ होकर आपके आदेशका पालन कर सके. मेरे गुरुत्वका उत्तराधिकारी बन सके एवं उसके लिए मुझसे यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सके.

[कुरानके इस कथानकको सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके साथ जोड़ा गया है. जिस प्रकार जिकरिया पैगम्बरने अपने उत्तराधिकारीके लिए खुदासे प्रार्थना की थी उसी प्रकार सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने ब्रह्मात्माओंको परमधामका ज्ञान दे कर समस्त जीवोंको अखण्ड सुख प्रदान करने वाले योग्य उत्तराधिकारीके लिए श्रीराजजीसे प्रार्थना की और उनको श्रीप्राणनाथजीके रूपमें योग्य उत्तराधिकारी प्राप्त हुए.]

एह मिरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत ॥ ८

ये उत्तराधिकारी अलौकिक सम्पदाके स्वामी हैं. इनमें तारतम ज्ञानका सामर्थ्य है कि ये ब्रह्मात्माओंको तथा जगतके जीवोंको इससे तृप्त करेंगे.

प्रकरण १३ चौपाई ३८४

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक ।
पेहेले कही एही मजकूर, और विध लिखी कर रोसन नूर ॥ १

कुरानमें इसहाक पैगम्बर और उनके पुत्र याकूबका प्रसङ्ग है. वह भी श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजीके साथ घटित होता है. इनका परिवार पवित्र कहा गया है. इससे पूर्व प्रकरणमें भी इसी प्रकारका कथानक बताया गया. उस बातकी पुष्टिके लिए यहाँ पर दूसरे प्रसङ्गका उल्लेख करते हैं.

ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर ।
एही अगली फेर और विध लिखी, सोई समझी चाहिए दिलमें रखी ॥ २

इस प्रकार कुरानके अलग-अलग कथानकोंकी कड़ियाँ मिलाई जा रही है.

उसका तात्पर्य सत्य और असत्यको अर्थात् माया और ब्रह्मको अलग-अलग रूपमें स्पष्ट करना है. पहले जो प्रसङ्ग कहा है उसीको पुष्ट करनेके लिए यहाँ दूसरे प्रकारसे कहा जा रहा है. जिसे भलीभाँति समझकर हृदयमें रखना चाहिए.

भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिछा महंमद फकीर ।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या ॥ ३

स्पष्टीकरण किए बिना इन कथानकोंका रहस्य समझा नहीं जा सकता. यह स्पष्टीकरण (शिक्षा) इमाम महदीने किया है. जब वे श्रीदेवचन्द्रजीके प्रमुख शिष्य बने तब उन्होंने इनको अपने मानस पुत्रके रूपमें स्वीकार किया. कुरानके प्रसङ्गमें इनको याहिया कहा है.

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कहे हुरम ।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया ॥ ४

याहिया पैगम्बरने ईसाको खुदाके समान मानकर उनकी महिमा गाई है. कुरानमें ईसाको खुदाकी अङ्गना कहा है. वहाँ पर इस प्रकार उल्लेख है कि ईसा पैगम्बरने खुदासे बार-बार जिक्र किया इसलिए उनके बेटेका नाम जिकरिया पड़ गया.

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या ।
इन विध केती कहूं जंजीर, कुरान कै भांतों तफसीर ॥ ५

कुरानमें यह भी कहा है कि ईसा रूहअल्लाहका औरस पुत्र उनसे अलग स्वभावका था. (इधर श्रीदेवचन्द्रजीके औरस पुत्र श्रीविहारीजी भी अलग प्रकृतिके थे). इस प्रकार कुरानमें ऐसी अनेक कड़ियाँ हैं उनका वर्णन कहाँ तक करें ?

हादिएं इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुदा लिया ।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे ॥ ६

जिकरिया पैगम्बरने पुत्र प्राप्त होने पर खुदासे ऐसी प्रार्थना की, हे अल्लाह ! आपने मुझे जो पुत्र दिया है उसने मेरे कार्यका दायित्व सम्भाल लिया है.

हे परवरदिगार ! आपने मेरी प्रार्थना प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार की है.

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक ।
पीछे इसके सेजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर ॥ ७

हे परवरदिगार ! आपने मुझे जो पुत्र दिया है, उसके वचन सन्देहरहित हैं. ऐसे वचनोंके द्वारा आप अवश्य प्रसन्न होंगे. इसके पश्चात् भी जिकरियाने सिर नमा कर खुदासे वारंवार प्रार्थना की, हे परवरदिगार ! आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली है.

करम खुदाए का साहेब सेजदे, पहोंच्या कौल मोंह वायदे ।
इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे ॥ ८

उस समय फरिश्ताने आकर कहा, तुम पर परवरदिगारकी असीम कृपा है. तुम्हारी प्रार्थना उन तक पहुँच गई है. उन्होंने तुम्हारी प्रार्थनाको स्वीकार कर उसे अपने हृदयमें धारण कर लिया है.

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या ।
ए बेटा तुझे बखसिया, कह्या नाम उसका एहिया ॥ ९

हे जिकरिया ! मैं तुमको शुभ समाचार देता हूँ, खुदाने तुमको पुत्र दे दिया है. उन्होंने तुम्हें जो पुत्र दिया है उसका नाम याहिया है.

पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक ।
बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल ॥ १०

उस समय खुदाने कहा, देखो ! तुमने याहिया नामक पुत्र प्राप्त किया है. भविष्यमें इसका और मेरा नाम एक ही होगा. जादलमिस्ल नामक पुस्तकमें लिखा है कि याहियाकी महिमा भी खुदाके अनुरूप ही होगी.

आगूं इसके ऐसा नहीं नाम, ना माफक इसके कोई काम ।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इसम ॥ ११

पूर्व कालमें भी इस जगतमें इस नामके कोई व्यक्ति नहीं हुए हैं और न ही इनके अनुरूप कोई कार्य किसीने किया है. यद्यपि खुदाका पैगाम देनेवाले

अनेक पैगम्बर हुए किन्तु इस प्रकारके नामवाला व्यक्ति अभी तक कोई भी नहीं हुआ है.

बल्क एही है बुजरक, किया खुदाएं पैगंमर हक ।
ना कछू मेहेतारीने पाले, बापके ना हुए हवाले ॥ १२

विशेष रूपमें ये ही महान् हैं. स्वयं खुदाने इनको अपना पैगाम देनेवाला पैगम्बर बनाया है. न इनको उनकी माताने पालन पोषण किया और न ही वे पिताके संरक्षणमें रहे.

इमाम सालबी से नकल आई, आगूं इस के नकल फुरमाई ।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे ॥ १३

इमाम साल्हवी नामक पुस्तकमें यह प्रसङ्ग उसीकी नकलके रूपमें उल्लेखित है. वहाँ पर लिखा है कि जिकरिया पैगम्बरने ऐसा पुत्र माँगा, जो उनके बाद उनके सिद्धान्तोंका प्रचार-प्रसार कर सर्वत्र उनका ज्ञान फैला सके.

पीछे उसके एते नाम लेवें, खासोंमें खासगी देवें ।
भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तवार ॥ १४

याहियाने जिकरियाके पश्चात् अनेक प्रकारसे खुदाके नाम लिए एवं श्रेष्ठ आत्माओंको अखण्डका मार्ग बताया. इस प्रकार खुदाने अपने नाम पर विशेष विशेषता देकर उसको अपने सभी कार्योंमें दृढ़निष्ठ बनाया.

आखर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद ।
आखर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही ॥ १५

कयामतके समयमें अपने कार्यको दृढ़तापूर्वक सम्पन्न करनेके लिए खुदाने याहियाको अपने अनुरूप शक्ति प्रदान की. इस प्रकार कयामतका सम्पूर्ण दायित्व इमाम महदी (श्रीप्राणनाथ) पर आया. उन्होंने ब्रह्मात्माओंके समुदायकी भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है.

इसम धरेका मायना एह, ऐसी सबी कोई और न देह ।
ए तिस वास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया ॥ १६

इन याहियाको खुदाके समान नाम देनेका तात्पर्य यह है कि उनके समान

अन्य कोई भी देहधारी नहीं है. इसलिए इनके लिए ऐसा कहा गया कि ये अधर्म एवं अपराधसे सदैव दूर रहे हैं.

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे ।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली ॥ १७

जिकरिया पैगम्बरने इस प्रकार खुदासे प्रार्थना की, हे परवरदिगार ! मेरा पुत्र इतना भला कैसे होगा जो कभी अपराध ही नहीं करेगा. अभी मेरी स्त्री इस अवस्थामें है कि वह सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती.

अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इनसेंती ।
ना कछु एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर ॥ १८

मैं भी ऐसी अवस्थामें पहुँच गया हूँ.मेरी यह प्रार्थना है कि इस पुत्रसे धर्मकी महत्ता बढ़े. मुझे इतनी सुधि ही नहीं थी कि आपकी शक्ति क्या है. न कभी मैंने आपसे कोई भय रखा था.

मोहे गरीबी और नातवान, ए बडाई आपसों होए पेहेचान ।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए ॥ १९

मुझ जैसे गरीब और अशक्त व्यक्तिको आपने इतनी महत्ता दी जिससे मुझे आपकी पहचान हुई. यह मेरा पुत्र मेरे साम्राज्यका विस्तार करना चाहे तो उसे आपकी पहचान हो. वह मेरे मतका अधिक विस्तार करना चाहे तो आपके आदेश (ज्ञान) को सदैव शिरोधार्य करे.

कहे फिरस्ते खुदाके हुकम, ऐ जिकरिया कह्या जो तुम ।
ए बात यों हीं कर है, बुढापा नातवानी कहे ॥ २०

उस समय जिब्रील फरिश्ताने खुदाके आदेशसे जिकरियाको कहा, हे जिकरिया ! तुमने जो कुछ कहा है वह बात सत्य है. वृद्धावस्था निश्चय ही अशक्त होती है. तुमने जिस प्रकार कहा है तुम उसी प्रकार वृद्ध एवं अशक्त हो.

ए तेरे खुदाएने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया ।
कह्या बीच इस सिन से, आसान खुदाके दो सख्सोंसे ॥ २१

खुदाने तुम्हारे लिए इस प्रकार कहा, तुम्हारे घर पुत्र उत्पन्न होगा. उस समय

जिकरियाने पूछा था कि मुझे वह पुत्र कब प्राप्त होगा ? तब फरिश्ताने कहा था, इसी वर्ष तुम्हें पुत्र प्राप्त होगा. खुदाके लिए तुम दोनोंको पुत्र देना बड़ा सरल है.

तो सांचा एहीया पैदा किया, नाबूद सेती बूद में लिया ।
बुजरकी सों खुदायने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही ॥ २२

फरिश्ताने इस प्रकार कहा, जब खुदाने तुम्हारी प्रार्थना सुनी तब अपना सच्चा सन्देश देनेवाले याहियाको तुम्हारे पुत्रके रूपमें उत्पन्न किया. तुम्हें पुत्र होनेकी सम्भावना नहीं थी, उस असम्भवको भी खुदाने सम्भव बनाया. खुदाने बहुत ही विशेष कार्य किया है जिससे जिकरियाको पुत्र प्राप्त हुआ.

खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजुद इन हाल ।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरातबे ॥ २३

यह शुभ समाचार प्राप्त कर जिकरिया पैगम्बर अति प्रसन्न हुए. पहले वे अपने शरीरकी स्थितिको देखकर निराश थे. कुरानकी यह घटना मात्र बाह्यार्थ ग्रहण करनेसे समझी नहीं जाएगी. (यह तो श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजीके जीवनसे सम्बन्धित घटना है. श्रीदेवचन्द्रजी दूसरा शरीर धारण करने पर अर्थात् श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें विराजमान होने पर विजयाभिनन्द बुद्ध एवं इमाम महदीके रूपमें प्रतिष्ठित हुए.)

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन विध वाका होसी तेरे ।
मेरी निसानीकी खबर जेह, मोहे नहीं पडत मालुम एह ॥ २४

जिकरियाने परवरदिगारसे कहा था, आपकी प्रसिद्धि किस प्रकार होगी. मेरे औरस पुत्रके सम्बन्धमें मुझे सन्देह होता है कि वह मेरा कार्य कर पाएगा या नहीं ?

कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी ।
मरदोंसे बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन ॥ २५

तब खुदाने उनको कहा, तेरा औरस पुत्र मेरे ज्ञानका यथार्थ प्रचार-प्रसार नहीं कर पाएगा. इससे मरदोंके साथ बात नहीं हो पाएगी. तीन रात और चौथे दिनकी चर्चा करनी है जो इससे नहीं होगी.

[तीन रात और चौथे दिनका तात्पर्य व्रज, रास, जागनी एवं परमधामसे है. सद्गुरुके औरस पुत्र विहारीजी ब्रह्मात्माओं (मर्दों) को यह ज्ञान देनेमें सक्षम नहीं थे इसलिए सद्गुरुने श्रीराजजीसे प्रार्थना की कि मुझे ऐसा व्यक्ति दो जो इस ज्ञानका प्रचार-प्रसार कर सके. श्रीदेवचन्द्रजीको चिन्ता बनी रहती थी कि जागनीका कार्य कौन आगे बढ़ाएगा. उन्होंने धामधनीको पत्र भी लिखे थे, तभी श्रीप्राणनाथजी श्रीमेहेराजके रूपमें उनकी शरणमें आ गए जिससे उनको अपार सन्तोष हुआ.]

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो बचिछन बीर ।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजर का खबरदार ॥ २६

इस प्रकार सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके औरस पुत्र श्रीविहारीजीके सन्दर्भमें कुरानके विभिन्न स्थानोंमें उल्लेख हुआ है. किन्तु विचक्षण व्यक्ति ही इस रहस्यको समझ सकते हैं. इस प्रकार महिमामयी रात्रिके तीन खण्ड व्यतीत होने पर श्रीप्राणनाथजीने जागनी लीलाका प्रभात कर ब्रह्मात्माओंको सचेत किया.

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहीया नजरी ॥ २७

श्रीदेवचन्द्रजीके औरस पुत्र श्रीविहारीजी ब्रह्मज्ञानके प्रचार-प्रसारका कार्य कैसे कर (जान) सकते ? इसलिए परब्रह्म परमात्माने यह शोभा उनके मानसपुत्र श्रीप्राणनाथको प्रदान की.

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद ।
बडी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए ॥ १

परमात्माकी उपासना गुप्त रूपसे करनी चाहिए. श्रेष्ठ आत्माएँ इस प्रकारकी उपासनासे उनकी निकटताका आनन्द प्राप्त करतीं हैं. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने परब्रह्म परमात्मासे जो प्रार्थना की थी उसे उन्होंने ब्रह्मात्माओंके समुदायसे भी गुप्त रखा था.

बरस निन्यानवे लों सरम, न करी जाहेर होए के गरम ।
बरस निन्यानबे कही हुरम, साथ ईसाके समझियो मरम ॥ २

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने अपने आगमनसे निन्यानबे वर्ष पर्यन्त धामधनीके साथ की गई प्रार्थनाको गुप्त रखा था. निन्यानबे वर्षमें उदयपुरके सुन्दरसाथको कष्ट प्राप्त हुआ सुनकर उनको बड़ी ग्लानि हुई. इसलिए उन्होंने श्रीराजजीसे प्रार्थना की. इस प्रकार श्रीदेवचन्द्रजी श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें बैठे हुए होने पर भी अङ्गनाके भावसे वे श्रीराजजीको प्रत्यक्ष पुकार नहीं करते थे (इसलिए वे इसके पश्चात् हकी स्वरूप कहलाए).

सोए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही ।
बूढा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे ॥ ३

कुरानके अनुसार जिकरिया पैगम्बरने अपनी पत्नीके प्रजननयोग्य न होने पर भी पुत्र प्राप्तिकी कामना की थी. इस प्रकार वृद्धावस्थाके पैगम्बरने पुकार तो की किन्तु उनकी प्रार्थनाका रहस्य कोई भी समझ नहीं पाया. [इस प्रकार श्रीदेवचन्द्रजीने श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें बैठ कर अधर्मका नाश एवं धर्मके प्रचार-प्रसारके लिए योग्य क्षत्रिय राजाकी खोज की. अनेक राजाओंको अपना सन्देश भेजा और कहा, तुम्हें मुगलोंसे डरनेकी आवश्यकता नहीं है. तुम धर्ममार्ग पर दृढ़ रहो किन्तु उनका सन्देश स्वीकार करनेमें कोई भी सक्षम नहीं रहा. अन्तमें छत्रसाल इसके लिए तैयार हुए और उन्होंने यह कार्य किया.]

पांच जिल्दें इन मजलें पाई, तोलों बात करी छिपाई ।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार ॥ ४

श्रीदेवचन्द्रजीके अवतरणसे निन्यानबे वर्ष पर्यन्त पाँच ग्रन्थ (रास, प्रकाश, षट्ऋतु, कलश और सनन्ध) तैयार हो गए थे. तथापि तब तक कयामतकी बात छिपा कर रखी थी. उन्होंने जितनी भी पुकार की, उनको सुनने वाला कोई शिरोमणि व्यक्ति तैयार नहीं हुआ था.

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर ।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामे की कहूं बात ॥ ५

उनकी पुकार इस प्रकारकी थी कि कोई व्यक्ति ऐसा मिले जो ब्रह्मज्ञानके

रहस्यको समझ कर पूरी दुनियामें इसको प्रसिद्ध करनेमें सक्षम हो. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने दूसरा शरीर धारण कर श्रीप्राणनाथजीके रूपमें किस प्रकार पुकार की वह बात सुनो.

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड बुढापे नार ।
खंभमें वजूद इन घर, बूढे हाड सुस्त इन पर ॥ ६

जिस प्रकार जिकरिया पैगम्बरने कहा था, हे परवरदिगार ! मेरी प्रार्थना सुनें. मेरी वृद्धावस्था हो रही है, हड्डियाँ कमजोर हो गईं हैं. इन कमजोर स्तम्भोंसे यह वृद्ध शरीर टिका हुआ है. वृद्धावस्थामें हड्डियाँ भी शिथिल हो जातीं हैं.

कह्या होवे वजूद तमाम, इनसे भली भांत होवे काम ।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत ॥ ७

उन्होंने यह भी कहा, वृद्धावस्था होने पर भी धर्मका कार्य तो भलीभाँति हो सकता है. मेरे बाल भी सफेद हो गए हैं. किन्तु मैं ब्रह्मज्ञानके प्रति असावधान नहीं हूँ.

अन्दर जवानी है रोसन, काह ज्यों पकडे अगिन ।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढे रोसनी न गई भूल ॥ ८

मेरे अन्दर ज्ञानका प्रखर प्रकाश यौवनकी भाँति उमड़ रहा है. जिस प्रकार सूखे घाँसमें अग्नि जल्दी व्याप्त होती है उसी प्रकार यह ब्रह्मज्ञान मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें व्याप्त हो गया है. मेरी वृद्धावस्था भी ब्रह्मज्ञानके प्रकाशको भूली नहीं है. [इस प्रकार सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीको श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें होते हुए धर्मके प्रचार-प्रसारकी पूरी धारणा थी. महाराजा छत्रसालके मिलने पर ही उन्हें सन्तोष हुआ.]

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें ।
याद किया माहें कुरान, किसे इद्रीस की पेहेचान ॥ १

कुरानके सोलहवें सिपारेका यह विवरण है. श्रीदेवचन्द्रजीके अवतरणके सौ

वर्ष होने पर श्रीप्राणनाथजी रामनगरमें थे. यह प्रसङ्ग उस समयका है जब उन्होंने कुरानके सोलहवें सिपारे पर विचार किया. तब इद्रीस पैगम्बरके प्रसङ्गका रहस्य स्पष्ट हुआ.

बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था ।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब कह्या इस ठाम ॥ २

नूह पैगम्बरके पुत्रके पुत्रका नाम अवनूस था. सत्य और असत्यके विवेक एवं धर्मनिष्ठाके कारण उसे इद्रीसकी उपाधि प्राप्त हुई. इस प्रकार श्रीप्राणनाथजीने मन्दसौर एवं रामनगरके पड़ावमें श्रीदेवचन्द्रजी द्वारा स्थापित सत्य धर्मको प्रकट किया. वहाँके काजी मुल्लाओंने उनको इद्रीसकी भाँति सत्यनिष्ठ पैगम्बरके रूपमें स्वीकार किया.

ए लकब दिया है सांच कारन, मालुम हुआ वास्ते इन ।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम ॥ ३

सत्य और असत्यके निरूपणके कारण अवनूसको यह उपाधि प्राप्त हुई थी. वैसे तो अवनूस एक दरजी थे जो कपड़ोंके टुकड़ोंको जोड़-जोड़ कर कपड़े सिलाया करते थे.

[श्रीप्राणनाथजीने विभिन्न धर्मग्रन्थोंके प्रमाणोंको मिला कर परब्रह्म परमात्माके एक होनेकी बात दृढ़ता पूर्वक व्यक्त की. इसी सत्यताके कारण उनको इद्रीस पैगम्बरके रूपमें स्वीकार किया.]

तीस वरक हुए नाजल, ऊपर जामें कहे असल ।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदम के सौ बरीस ॥ ४

कुरान आदि कतेब ग्रन्थोंमें आदमके सौ वर्ष बाद इद्रीस पैगम्बरका प्रकट होना लिखा है. जिनको तीस आयतें उतरीं थीं. इस प्रकार श्रीप्राणनाथजीको अनूप शहरमें तीस सनन्धें उतरीं थीं. कयामतकी इस घड़ीमें श्रीदेवचन्द्रजीके अवतरणके सौ वर्ष पश्चात् श्रीप्राणनाथजीके द्वारा इद्रीस पैगम्बरका जैसा कार्य पूर्ण हुआ.

तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक ।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच म्याराज भिस्त पेहेचान ॥ ५

उस समय सभी लोग यही कहते थे कि एक इद्रीस पैगम्बर ही सत्य बात करेंगे. इसी प्रकार रामनगरके अनेक मुस्लिम विद्वानोंने श्रीप्राणनाथजीके लिए कहा, वास्तवमें यही इद्रीस पैगम्बर हैं. ये जो कहते हैं वहीं बात सत्य है. इन्होंने सबकी सुरताको चौथे आसमान (परमधाम) में पहुँचा दिया है. रसूल मुहम्मदको जहाँ पर खुदाके दर्शन हुए थे उस अखण्ड भूमिकाकी पहचान इन्होंने करवा दी है.

पैगंमर की दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत ॥ ६

रसूल पैगम्बरने जहाँ पर पहुँच कर खुदाके दर्शन किए थे. वह अखण्ड धाम दिव्य परमधाम है. यह सत्य सिद्ध हुआ. उन्होंने कुरानमें इद्रीस पैगम्बरका उल्लेख किया है वे भी श्रीप्राणनाथजीके रूपमें यहाँ पर प्राप्त हुए हैं.

कह्या आम सिपारे माहें, अग्यारै सदी लिखी है जांहें ।
हुकुम हादीके खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत ॥ १

कुरानके तीसवें (अम्म) सिपारेमें ग्यारहवीं सदीमें कयामत होनेका उल्लेख है. अब सद्गुरुके आदेशसे इन सङ्केतोंका स्पष्टीकरण कर देता हूँ जिससे कयामतकी घड़ीका प्रकट होना स्पष्ट हो सके.

दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बांध्या सरत एती ।
नाम हजरत के सेहेर कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई ॥ २

रसूल मुहम्मदने खुदासे यह जानना चाहा कि कयामतकी घड़ी कब आएगी ? उस समय खुदाने कयामतकी घड़ीका जो सङ्केत दिया उसको कुरानमें इस प्रकार उल्लेख किया है, किसी यहूदी लड़कीने रसूल मुहम्मद पर टोना करते हुए उनका नाम लेकर एक रस्सीमें ग्यारह गाँठें लगाई थीं.

रस्सी रखी कुएं के मांहीं, ऊपर पथर दिया तांहें ।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूंएं गया उतर ॥ ३

उस लड़कीने रस्सीको कूएंके अन्दर रख कर ऊपरसे पत्थर रख दिया. (उस

समय रसूल मुहम्मदके सिरमें पीड़ा हुई) जिब्रील फरिश्ताने लड़कीके जादूका समाचार दिया तो अलीको वहाँ पर देखनेके लिए भेज दिया. अली कूएंमें उतर कर उस रस्सीको ले आए.

अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारे सदी हुई नजर ।
आग्यारे आयत आई ततपर, भेजी खुदाएने जबराईल खबर ॥ ४

अली कूएंमें उतर कर रस्सीको ऊपर ले आए जिसमें ग्यारह गाँठें थीं. उस समय रसूल मुहम्मदको खुदाने जिब्रीलके द्वारा ग्यारह आयतें भेजी.

इन पढने रसूल खबर भई, हर आएत हर गिरह खुल गई ।
उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल ॥ ५

इन आयतोंको पढ़ कर रसूलको ज्ञात हुआ कि ग्यारहवीं सदीमें कयामतकी घड़ी आएगी क्योंकि एक एक आयतको पढ़ने पर एक-एक गाँठ खुलती गई. उमर रजी अल्लाहने उन आयतोंको उतार दिया और कहा, ये आयतें तो बड़ी अद्भुत हैं.

वास्ते रद करने को सेहेर, खुली गाठें छूटे पैगंमर ।
इनसे पनाह पकडी मैं, सो तिनकी फजर करी जिनें ॥ ६

खुदाने जादुई प्रभावको समाप्त करनेके लिए ग्यारह आयतें भेजीं जिनसे सभी गाँठें खुल गईं और पैगम्बर जादुई प्रभावसे मुक्त हुए. इस प्रसङ्गको देखकर ज्ञात हुआ कि परमधामसे ब्रह्मात्माएँ इस मायामय जगतमें आकर फँस गईं हैं. उनको मुक्त करनेके लिए श्रीश्यामाजी सद्गुरु बनकर आए. उन्होंने ही रसूल मुहम्मदकी ग्यारहवीं सदी व्यतीत होने पर तारतम ज्ञानके द्वारा अज्ञानरूपी अन्धकारको दूर कर ब्रह्मज्ञानका प्रभात किया. मैंने उनकी ही शरण प्राप्त की है.

फलक चीज केहेत हैं एक, हुआ चाहे दोऊ देखो विवेक ।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास ॥ ७

ऐसा कहा गया है कि कयामतके समय एक घटना घटेगी जिसमें आकाश लाल रङ्गका होगा. विवेक पूर्वक विचार करो, आकाशको तो दो बार लाल

रङ्गका होना चाहिए (आकाश एक ही है किन्तु प्रातः और सायं दो बार लाल दिखाई देता है. इसी प्रकार श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजी एक ही स्वरूप हैं. कयामतके समय दो अलग-अलग दिखाई देते हैं). इस प्रकार अन्तिम समयमें अवतरित इमाम महदी ब्रह्मात्माओंके समुदायको परमधाममें जागृत कर आनन्द विलास कराएँगे.

पीछे रह्या जो पथर घास, सो इन दुनियां की पैदास ॥ ८

जो लोग महामति श्रीप्राणनाथजीके ज्ञानको सुननेमें पीछे रह गए हैं वे घास तथा पत्थरकी भाँति महत्त्वहीन हैं. इस नश्वर जगतकी सम्पूर्ण सृष्टि इसी प्रकारकी है.

प्रकरण १७ चौपाई ४३३

सिपारा आम आधा पूरन, फजर मकीए सूरत रोसन ।
खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान ॥ १

कुरानका तीसवाँ (अम्म) सिपारा जहाँ आधा होता है, वहाँ पर अर्थात् अठारहवें अध्याय मक्की सूरतमें ब्रह्मज्ञानके प्रभातका उल्लेख है. मैं ब्रह्मात्माओंके समक्ष वह प्रसङ्ग स्पष्ट कर रहा हूँ. इन वचनोंके प्रकाशको लेकर हृदयमें स्थित नास्तिकतारूपी दुष्टताको मिटा दो.

सौगंध खाई बीच होने फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर ।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम ॥ २

रसूल मुहम्मदने (सूरा अल फज्रमें) शपथपूर्वक कहा है, ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर परमात्मा प्रकट होंगे. उस समय उनके मित्रोंने कहा, आप हमारे लिए प्रार्थना करें कि हमें उनके दर्शन प्राप्त हों. तब रसूलने कहा, ज्ञानके प्रभातके (उस) समय प्रार्थना करने पर परमशान्तिका अनुभव होगा. उस समय नश्वर जगतके जीव भी धर्मनिष्ठ बनकर धर्ममार्ग पर चलेंगे.

पेहेला रोज कौल हुरमत, सो हादी देखावे रोज क्यामत ।
जिस वरस बीच होए फजर, पेहेले जिलहज थें खुली नजर ॥ ३

कयामतकी घड़ीमें पहला दिन (दसवीं सदी) सम्मानयुक्त वचन प्राप्त होनेका

दिन है (इस समय सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी तारतम ज्ञान लेकर आए जिससे ब्रह्मात्माओंको सम्मान प्राप्त हुआ). वे ही सद्गुरु दूसरा शरीर धारण कर कयामतकी घड़ी दिखाएँगे. जिस वर्ष ब्रह्मज्ञानका प्रभात होना है उस वर्ष जिल्हज महीनासे पूर्व (दसवीं शताब्दीमें) ही तारतम ज्ञानके द्वारा आत्म-दृष्टि खुली.

पेहेले दिनकी कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात ।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी बिख्यात ॥ ४

लैलतुलकद्रकी रात्रिकी दसवीं सदीको प्रथम दिनकी रात्रि कहा है. इसी दसवीं सदीमें साक्षात् श्यामाजी सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें इस जगतमें अवतरित हुईं. तदनन्तर ग्यारहवीं सदीमें ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ. रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट तीनों (बशरी, मलकी और हकी) स्वरूपोंने प्रकट होकर इस ज्ञानका विस्तार किया.

दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी मस्कीनों को देखाई वस्त ।
कह्या अरफेका अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन ॥ ५

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें विराजमान होकर ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए विशेष परिश्रम किया. श्रीप्राणनाथजीने विभिन्न स्थानोंमें परिभ्रमण कर परब्रह्म परमात्माके मार्ग पर समर्पित विनम्र ब्रह्मात्माओंको परमधामकी निधि स्वरूप तारतम ज्ञान प्रदान किया. अरफा (दसवीं सदी) के आगेका दिन ग्यारहवीं सदी है. उसे कुरानमें ईद कहा है. उस दिन ब्रह्मात्माओंने तारतम ज्ञान प्राप्त कर परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें नमन किया.

पढना द्वा वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत ।
पाक होवे सबोंका दम, तब जाहेर होवे ईद खसम ॥ ६

हदीसोंमें उल्लेख है कि जिस ईदके दिन (ग्यारहवीं सदीमें) शुद्ध भावसे प्रार्थना करने पर खुदाके प्रति समर्पित आत्माओंके मनोरथ सिद्ध होते हैं वह समय आ गया है. कुरानके अनुसार इस समय सबके मन शुद्ध होंगे और

परब्रह्म परमात्मा प्रकट होंगे.[परब्रह्म परमात्माके प्रकट होनेका समय आ गया है. ब्रह्मात्माएँ जागृत हो कर उनका दर्शन करेंगी यही ईद है.]

पेहेला रोज क्यामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान ।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली ॥ ७

पहला दिन अर्थात् दसवीं सदी कयामतकी घड़ीका सङ्केत करनेके लिए है. उसीको सङ्केतोंमें एक हजार वर्षका दिन कहा है. रसूल मुहम्मदको जब पूछा गया कि कयामत कब होगी ? तब उन्होंने दो ऊँगली दिखा कर यह सङ्केत दिया कि एक हजार वर्षका एक दिन व्यतीत होने पर जब दूसरा दिन आयेगा तब दोनों महान् स्वरूप परस्पर मिलेंगे वही कयामतकी घड़ी है.

दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब साले मिलाइयां बीच कही ।
कलीमअल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमीमें ऊग्या दिनें ॥ ८

इस प्रकार ग्यारहवीं सदीमें दोनों स्वरूप (श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजी) एक साथ मिले. उसी समय ब्रह्मात्माओंका भी मिलन हुआ. इस प्रसङ्गको कुरानमें इस प्रकार कहा है, दसवीं सदीमें कलीमल्लाहकी रोशनी होगी एवं अग्यारहीं सदीमें दिनका उदय होगा. (तदनुसार दसवीं सदीमें सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीको परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णजीका साक्षात्कार हुआ और तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ एवं ग्यारहवीं सदीमें उसका प्रकाश चारों ओर फैल गया).

रातमें सब रोसनी जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही ।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्लासों मिल ॥ ९

इब्राहीम साल्वेके अनुसार रातके समयमें अलग-अलग प्रकाश था किन्तु दोनोंने मिलकर प्रभात होनेकी बात की. (विभिन्न समयमें तारतमसागरके रूपमें वाणी अवतरित होती रही.) सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजीने मिलकर ब्रह्मज्ञानके प्रभातको प्रकट किया. कुरानमें प्रभात समयके प्रकाशको बादल कहा है. इस समय सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने श्रीप्राणनाथजीके हृदयमें ब्रह्मज्ञानकी वर्षा की जिससे तारतमसागरका अवतरण हुआ.

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आझूं सरमिंदे सबन ।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान ॥ १०

कुरानमें उल्लेख है कि जब बादलोंसे प्रकाशकी वर्षा होगी तब सब लोग शर्मिन्दे होंगे और उनकी आँखोंसे अश्रुधारा बहेगी. उस समय सब लोग रो-रोकर पश्चात्ताप करेंगे. संसारमें सर्वत्र यह स्थिति दिखाई देगी. (श्रीप्राणनाथजीके मुखारविन्दसे ब्रह्मज्ञानकी वर्षा होने पर बाह्य आडम्बरमें लगे हुए तथाकथित ज्ञानी जन लज्जित होंगे और पश्चात्ताप करने लगेंगे.)

प्रकरण १८ चौपाई ४४३

तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन ।
रसूल से क्यामत लगे, ए जो किए रोसन ॥ १

कुरानमें तीन दिन बड़े श्रेष्ठ कहे गए हैं. वे रसूल मुहम्मद निर्दिष्ट तीनों स्वरूपोंके दिन हैं एवं रसूल मुहम्मदसे लेकर कयामत पर्यन्त माने गए हैं. तीनों स्वरूपोंने इनको प्रकाशित किया है.

याद करो खुदाएके तांईं, तकबीर कहों दिन गिने हैं जांहीं ।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक ॥ २

कुरानमें वारंवार कहा है, हर समय खुदाको याद करो. वहाँ पर जिन स्थलोंमें कयामतके दिनोंकी चर्चा की है उसका विवरण देते हैं. ये तीनों दिन बड़े श्रेष्ठ हैं. ग्यारहवीं सदी (ईद) के पश्चात् बारहवीं सदीमें खुदाके दीदार होंगे. उस समय रमजानके बाद इदुल्जुहाके दिनकी भाँति प्रसन्नता होगी.

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबहकी भई ।
अरफासे असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन ॥ ३

इमाम आजमने यह दिन अति निकट कहा है और कहा कि दसवीं सदीके पीछे ग्यारहवीं सदीमें फज्रकी नमाज पढ़ी गई. रसूल मुहम्मदके वचन अनुसार अरफा ईद (दसवीं सदी) से ईद उल अस्र (ग्यारहवीं सदी) तक दोनों स्वरूप (श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजी) प्रकट हुए हैं.

सुबह सेंती अरफेका दिन, आखर तांई असर इन ।
बांधी उमेद बडी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन ॥ ४

दसवीं सदी (अरफा ईद) से ही आत्मजागृतिके सुप्रभातका सङ्केत प्राप्त होता है. इसी सुअवसर पर दोनों स्वरूपोंका महामिलन हुआ और अन्त तक उनका प्रभाव रहा. धर्मग्रन्थोंमें इनके अवतरणकी पूर्व सूचनासे सभी लोग प्रतीक्षा कर रहे थे. इन तीनों स्वरूपोंको पहचान कर जिन्होंने उनको नमन किया उनके तीनों दिनकी नमाज पूरी हुई ऐसा माना गया.

[ईदका अर्थ प्रसन्नता होती है. खुशीका दिन ही ईद है. कुरानमें तीन दिनको विशेष कहा है. वे हैं : ईद उल अज्हा (ईदे कुर्बा, मासकी दस तारीखको होती है), ईद उल फित्र (यह ईद रोजा पूर्ण होने पर खुशीमें मनाई जाती है. यही रमजानकी ईद है), ईदे कुर्बां (यह ईद हजकी खुशीमें मनाई जाती है. इसीको बकरीद कहते हैं).]

इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेबका नाम ।
सिताबी फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई ॥ ५

इमाम साफीने इस प्रकार स्पष्ट किया है, इनका स्वरूप एवं इनकी विशेषताएँ परमात्माके समान हैं. स्वयं परमात्मा इनके द्वारा कार्य कर रहे हैं. जो कोई व्यक्ति कयामतकी घड़ी क्यों नहीं आई ऐसा सोच कर शीघ्रता करते हैं तो उन्हें कुरानके सङ्केतोंका मिलान करके देखना चाहिए.

अग्यारहीं बारहीं जिल्हज करे, सो गुनाह कछु ना धरे ।
बाजे हैं जाहिल आरब, बातें करें सिताबी तब ॥ ६

ग्यारहवीं तथा बारहवीं सदीके स्वरूप (श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजी) को पहचान कर जो उनके प्रति समर्पित होंगे उनसे कभी भी किसी भी प्रकारका अपराध नहीं होगा. वे आरब मूर्ख हैं जिन्होंने कयामतके सम्बन्धमें शीघ्रता की अर्थात् कयामत कब होगी कहते हुए रसूलको बार-बार पूछा.

गिरोह एक बखत आखर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर ।
सिताबी होवें रुखसद, तुझ पर गुनाह नाहीं कद ॥ ७

हदीसोंमें उल्लेख है कि अन्तिम समयमें एक (त्यागी, तपस्वी लोगोंका)

समुदाय होगा उसको खुदाने इस प्रकार कहा, यदि तुम इन्द्रियोंके विषय तथा अशुभ कर्मोंसे यथाशीघ्र दूर हो जाओगे तो तुम पर कभी भी दोष नहीं लगेगा.

और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल मांहीं ।
तिनको कछुए नहीं आजार, तेहेकीक योंहीं है निरधार ॥ ८

जो लोग कयामतकी घड़ी प्रकट होनेमें क्यों विलम्ब हुई, इस रहस्यको नहीं जानते हैं किन्तु व्रज, रास एवं जागनी लीलाके स्वरूपको श्रीप्राणनाथजीमें देखते हैं उनको किसी भी प्रकारके कष्ट नहीं होंगे (नरकाग्निमें जलना नहीं पड़ेगा). यह बात नितान्त सत्य है.

इनमें जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाहसे डरे ।
जो कोई खतरोंसे फिर्‌या होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए ॥ ९

जो कोई व्यक्ति गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके विषयोंसे संयम (परहेज) करता हो. लौकिक कर्तव्योंसे निवृत्त होकर सद्‌गुरुके चरणोंमें समर्पित रहता हो एवं दोषोंसे बचता रहता हो तथा आने वाली आपत्तियोंसे भी बचता रहता हो, वह शान्तिके लिए संयम (परहेज) करता है.

बाकी जेती रही उमर, तिनमें रखे खुदाए का डर ।
क्यामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर ॥ १०

जो लोग अपनी शेष आयुमें परमात्मासे भय रखते हुए अपना कर्तव्य पालन करेंगे उनके सब कर्मोंके फल कयामतके समय पर प्रकट होंगे.

तारीख नामा

जिनको क्यामत की है सक, क्यों कर उठसी यह खलक ।
बात नहीं ए बरकरार, काफर न देखें ए विस्तार ॥ १

जिन लोगोंको कयामतकी घड़ीके विषयमें तथा उस समय कब्रोंसे मुर्दे कैसे उठेंगे इस विषयमें सन्देह हो उन्हें ऐसा सन्देह नहीं करना चाहिए.

अवज्ञाकारी लोग इस बातको नहीं देखते हैं कि आत्मजागृतिके समयमें शरीररूपी कब्रसे मुर्दाके समान प्रसुप्त चेतना जागृत हो रही है.

न देखें अपना हवाल, कै पैदा किए आदमी डाल ।
खुदाएं खाक पाकसे पैदा किया, तिन बूंदका ए विस्तार कर दिया ॥ २

ऐसे लोग अपनी परिस्थितिकी ओर नहीं देखते हैं कि परमात्माने किस प्रकार पार्थिव तत्त्वोंसे मनुष्य, पशु-पक्षी, वनस्पति आदिके शरीरका निर्माण किया. मात्र एक बूँदसे यह कितना विस्तार किया है.

एह तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊं सही ।
जिनसेंती होवे मकसूद, इन नाबूद सेंती ल्याया बूद ॥ ३

जीवोंके उत्पत्तिके विषयमें जो कुछ कहा गया है अब मैं उसका स्पष्टीकरण कर देता हूँ. जिससे अपने ध्येयकी सिद्धि होती हो उसके लिए जिसका अस्तित्व न हो उसको भी परमात्मा अस्तित्वमें ले आते हैं. उन्होंने नश्वर शरीरको भी अपना जोश देकर अपने जैसा बनाया.

तिनमें बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आवें बुध ।
इनमें खुदाए किए दोए, क्यामत काम दूजे से होए ॥ ४

उन जीवोंमें कोई-कोई अत्यन्त बेसुध हैं, उनमें कभी भी आत्मबुद्धि नहीं आती है. परब्रह्म परमात्माने श्रीदेवचन्द्रजीको दो सन्तान दी. उनमें-से दूसरे मानसपुत्रसे ही कयामतका दिन निश्चित हुआ.

साहेब चाहे सो करे, निपट माहें नजरमें धरे ।
ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार ॥ ५

परमात्मा जैसा चाहते हैं वैसा ही करते हैं. वे नितान्त छोटे व्यक्तिको भी अपनी कृपादृष्टिके द्वारा महान् बना देते हैं. इस प्रकार परब्रह्म परमात्माने पहलेसे ही निश्चित किया था कि इमाम महदीके आगमनसे कयामतकी घड़ी अत्यन्त श्रेष्ठ मानी जाएगी.

खावंद होएके करसी काम, तिनका अव्वल से धरिया नाम ।
बाहेर ल्याया तुमारे तांईं, छिपा लडका था पेट मांहीं ॥ ६

इमाम महदी सबके स्वामी होकर कयामतके समयमें सबका न्याय करेंगे. पहलेसे ही कुरानमें उनका नाम इमाम महदीके रूपमें तथा पुराणोंमें बुद्ध निष्कलङ्कके रूपमें लिखा गया था. इस प्रकार परब्रह्म परमात्माने बुद्ध निष्कलङ्कको अपने घर (जामनगर) से बाहर खींचकर बुन्देलखण्ड तक पहुँचाया. जैसे माँके गर्भमें-से शिशुको बाहर खुले जगतमें लाया जाता है.

निहाएत था नातवान, ना वरपाएगी ना काम पेहेचान ।
सब तरबियत तुम को किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया ॥ ७

बुद्ध निष्कलङ्क स्वरूप श्रीप्राणनाथजीने मुझे इस प्रकार कहा, उस समय मैं अत्यन्त अकिञ्चन था. धर्मके सम्बन्धमें बाह्य पहचान भी न होनेसे कयामतके समयकी नितान्त पहचान नहीं थी किन्तु सद्गुरुने तारतम ज्ञानके द्वारा मुझे सब प्रकारसे शक्तिशाली बनाया और अपना आवेश देकर अपने सम्पूर्ण कार्य मेरे हाथोंमें सौंप दिया.

तूं था बीच कोम जाहिल, तित खुदाएने दई अकल ।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस ॥ ८

छत्रसाल स्वयंके लिए कहते हैं, तुम तो अध्यात्मज्ञानविहीन अल्पज्ञ लोगोंके समुदायमें थे ऐसेमें परमात्माने तुम्हें जागृत बुद्धिका ज्ञान प्रदान किया. इस प्रकार ईसा रूहअल्लाह सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने बारहवीं शताब्दीके तीस वर्ष और ग्यारहवीं शताब्दीके दस वर्ष कुल चालीस वर्ष पर्यन्त आध्यात्मिक राज्य किया.

तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा ।
बीच जवानियां आगूं जवान, बाहेर फेर हुए निदान ॥ ९

उन्होंने यह भी कहा, तुम ब्रह्मात्माओंमें-से कोई ऐसा शूर-वीर होगा जो समर्पण भावके उच्च शिखरमें पहुँच कर जीवनका लाभ प्राप्त करेगा. शूर-वीर ब्रह्मात्माओंके अग्रणी बनकर लोगोंकी जीवनशैली बदल देगा.

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं माहें मजकूर क्यामत ।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारैं सदीमें निदान ॥ १

कुरानके तीसवें (अम्म) सिपारेके आठवें सूरतमें कयामतकी चर्चा की है. वहाँ पर रसूल मुहम्मदने परब्रह्म परमात्मा (साहिब-ए-आसमाँ) की सौगन्ध खाकर बारहवीं सदीमें कयामतकी घड़ी आनेका सङ्केत किया है.

दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिनमें लई मिलाए ।
दस ऊपर दोए बुरज जो कही, इनमें हादी उमत मजकूर भई ॥ २

उसके अनुसार दो सद्गुरु (हादी) दसवीं सदीसे आगे चल कर ग्यारहवीं सदी तक आए. इन दोनोंने अपनी ब्रह्मात्माओंके समुदायको अपने धर्ममें सम्मिलित किया. कुरानमें दसके ऊपर दो गुर्जोंकी चर्चा की है. (उन दोनोंमें एकसे दूसरे गुर्जका अन्तर सौ सालका बताया है. वह बारहवीं सदीके लिए है) इसमें सद्गुरु एवं ब्रह्मात्माओंके मिलनकी चर्चा है.

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे ।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांदकी सोए ॥ ३

कुरानमें दसके बाद दो गुर्जोंकी चर्चा की है और उन दोनोंको अलग-अलग कहा है. यह सङ्केत जिन ब्रह्मात्माओंके लिए किया गया है वे ही इसको जान सकतीं हैं. ये बारह गुर्ज चन्द्रमा स्वरूप रसूल मुहम्मदके प्रयाणके बाद बारहवीं शताब्दी तककी यात्राके लिए कहे गए हैं.

या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब ।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही क्यामत ॥ ४

इस जगतमें समुद्रसे लेकर आकाश तक जो भी सृष्टि है उसको परमात्माने जिस मर्यादाकी सीमामें रखा है वह अपनी सीमाको नहीं भूलतीं हैं. स्वयं रसूल मुहम्मदने शपथपूर्वक कहा कि बारहवीं सदी ही कयामतकी घड़ी होगी.

फेर फेर कह्या सौंह खाई, अल्ला की साहेदी देवाई ।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन ॥ ५

रसूल मुहम्मदने बार-बार शपथ खाकर खुदाकी साक्षी देकर यह घोषणा की है.

परमात्मा सबके कार्योंको देखते हैं और सबके मनकी बातोंको भी जानते हैं.

ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही ।
एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया ॥ ६

रसूल मुहम्मदने साक्षी भी परमात्माकी दी है और शपथ भी उनके नाम पर ही लिया है. इन भविष्य वचनोंमें कहीं कहीं पर अन्तिम समयमें आने वालेके लिए बन्दा अथवा मसीहा भी कहा है. वस्तुतः इमाम महदीके रूपमें आए हुए पैगम्बर वे ही हैं.

अमेतसालून

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज क्यामत ।
पढ्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों माने नहीं फुरमान ॥ १

रसूल मुहम्मदने कुरानके माध्यमसे धर्मका उपदेश किया. उसमें कयामतके समय सबको कर्मोंके लेखा-जोखाके न्यायका डर दिखाया. उन्होंने सभी लोगोंके लिए कुरानका ज्ञान दिया किन्तु जो लोग इन तीनों बातोंके लिए उनका आदेश नहीं मानते हैं वे अवज्ञाकारी (काफिर) कहलाते हैं.

काफर पूछें मोमिनों से ले, ना पूछे रसूल को दिल दे ।
खुदाए तालाने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर ॥ २

ऐसे अवज्ञाकारी लोग सन्देश पहुँचानेवाली ब्रह्मात्माओंसे अनेक प्रश्न करते हैं किन्तु सीधे सन्देशवाहक (रसूल) के पास जाकर प्रेमपूर्वक नहीं पूछते हैं. कुरानमें खुदाकी ओरसे यह स्पष्ट कहा है, ऐसे अवज्ञाकारी लोग किस सन्देहके लिए पूछते हैं अर्थात् उनका पूछना निरर्थक है.

कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक ।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर ॥ ३

कुरान स्वयं श्रेष्ठ ग्रन्थ है उसके उपदेशोंमें भी अवज्ञाकारी लोग सन्देह करते हैं और रसूल मुहम्मदको भी इस प्रकार कहने लगते हैं कि वे कविता करनेवाले झूठे जादूगर हैं.

ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बडी सिफत ।
कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर दिवाना कहे ॥ ४

खुदाने आरम्भसे इनको पैगम्बरी दी है. परमधाममें भी इनको बड़ी महत्ता मिली है. अनेक लोग इनको खुदाके पैगम्बर मानते हैं तो कतिपय कविता करनेवाले (सायर) अथवा दीवाना समझते हैं.

कोई कोई क्यामत को मानें, कोई कोई सामें मारें तानें ।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुडावेंगे वे क्यामत ॥ ५

कतिपय लोग कयामतकी घड़ीको स्वीकार करते हैं तो कतिपय इसके विषयमें ताने मारते हैं. परमात्माने एक समुदायमें पैगम्बरके अवतरणकी शोभा दी है. उसके लिए कुरानमें कहा है कि वह समुदाय कयामतके समय समस्त जीवोंको जन्म-मृत्युरूपी बन्धनसे मुक्त करेगा.

केतेक साहेबसों बैठे फिर, केतेक क्यामत से मुनकर ।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात ॥ ६

कतिपय लोगोंने रसूल मुहम्मदके वचनोंसे अपना मुख मोड़ लिया. तो कतिपय लोग कयामतके प्रति अविश्वास रखने लग गए. कुछ लोगोंको इसी नश्वर जगतमें अखण्डता दिखाई देने लगी तो कतिपय लोगोंको इन सभी बातोंमें सन्देह हुआ.

खुदाए की सौंह खाए के कही, के क्यामत नजीक आई सही ।
पेहेली नीयत अकीदे अपनी, झूठा कौल ना करे धनी ॥ ७

रसूल मुहम्मदने खुदाके नामकी शपथ ले कर कहा है कि कयामतकी घड़ी निकट आ रही है. इसलिए रसूल मुहम्मदके अनुयायी सर्वप्रथम इन वचनों पर अपने विश्वासका मूल्याङ्कन करें. क्योंकि खुदाने दर्शनके समयमें रसूल मुहम्मदकोजो वचन दिए हैं वे मिथ्या नहीं हो सकते.

जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान ।
पहाड मेखां कही उस्तवार, पैदा किया दुनियां नर नार ॥ ८

कुरानमें इस पृथ्वीको बिछौना कहा है और इस पर तीन प्रकारकी सृष्टियोंको

उत्पन्न किया है. यहाँके पर्वतोंको पृथ्वीकी दृढ़ कीलें (मेखा) बताया गया है. इस प्रकारकी पृथ्वीमें खुदाने नर-नारियोंको उत्पन्न किया है.

तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बडे कर कहे ।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे ॥ ९

तुम्हारी वंश परम्परा चलती रहे ऐसा सोच कर किसीको काला, किसीको गोरा तो किसीको छोटा, बड़ा बनाया गया है. खुदाकी सृष्टिमें कुछ लोग अच्छे हैं तो कुछ लोग बुरे हैं. उन्होंने रातको सोनेके लिए बनाया जिससे लोग उठकर स्फूर्तिका अनुभव कर सके.

रात निकोइयों को भांने, कूबत हैवानी की आने ।
बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर ॥ १०

अज्ञानमयी रात्रि सद्व्यवहार (निकोई) का हरण कर देती है और लोगोंके हृदयमें पशुवृत्तियाँ उत्पन्न कर देती है. इसलिए वे लोग खुदाकी बन्दगीसे दूर रहते हैं. जिसके कारण सर्वत्र अज्ञानमयी वार्ताएँ छा जातीं हैं.

साहेब फतुआत का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे ।
इनकी नजरों न छिपे दुसमन, जो कोई हैं साहेब के तन ॥ ११

'साहेब फतुआत' के लेखकने इस प्रकार लिखा है कि इस लैलतुलकद्रकी रात्रिके स्वामी ब्रह्मात्माओंके चरणोंमें ऐसी अज्ञानमयी रात्रियाँ दबी रहतीं हैं. उनकी दृष्टिमें अन्तरके शत्रु छिपे नहीं रह सकते. परमात्माकी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माएँ अन्दरके शत्रुओंको भगा देतीं हैं.

रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम ,
करें परदा दुनियां सों चलें आराम ।
दिन के तांई कह्या बाजार, इत बेइन्साफी चलन हार ॥ १२

अज्ञानरूपी अन्धकारयुक्त रात्रिमें भी सन्मार्ग पर चलने वाली धर्मनिष्ठ आत्माएँ (सेख उल इस्लाम) हैं. वे दुनियासे परदा कर (विमुख होकर) अपना व्यवहार शान्तिसे चलातीं हैं. दिनके समयको कोलाहलयुक्त बाजार कहा गया है जिसमें अन्यायका व्यवहार चलता है.

ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार ।
कह्या जो साहेब का दिन, वह बखत तलब करें मोमिन ॥ १३

ब्रह्मात्माएँ महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में यात्रा करनेवाली परमात्माके मित्र कहलातीं हैं. मैं स्वयं इन पवित्र आत्माओं पर समर्पित होता हूँ. कतेब धर्मग्रन्थोंमें कयामतके समयको परमात्माके आगमनका दिन कहा है. ब्रह्मात्माएँ उसकी प्रतीक्षा करतीं हैं.

इनहीं में ढूंढें हासिल, इस दिन उमत की फसल ।
इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान ॥ १४

इन ब्रह्मात्माओंमें खोज करने पर इमाम महदीकी प्राप्ति होगी. कयामतका समय ब्रह्मात्माओंके लिए उपजका समय है अर्थात् तारतम सागररूप वाणीकी आयका समय है. कुरानके अनुसार सातों आसमानके फरिश्ते इनके नीचे हैं अर्थात् वे सब इनकी चरणरज प्राप्त करना चाहते हैं. ये ब्रह्मात्माएँ इन सभीसे ऊपर दिव्य परमधाममें रहतीं हैं.

और खलक जो इनके तले, तिन खलक को होए जुलजुले ।
पैदा किया आफताब रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन ॥ १५

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है कि जीवसृष्टि इन ब्रह्मात्माओंसे निम्नस्तरकी हैं. उनको नरकाग्निका ताप प्राप्त होगा. परब्रह्म परमात्माने इस जगतमें ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलाया जिससे ब्रह्मात्माओंके लिए नवप्रभातका उदय हुआ.

इनके साथ उतर्‌या बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल ।
तिनकी पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास ॥ १६

इन ब्रह्मात्माओंके साथ बादलका अवतरण हुआ है. वे बादल प्रकाशरूप जलकी वर्षा करते हैं. उस वर्षासे इस पृथ्वीके दाना-घासरूपी जीव सृष्टिको लाभ प्राप्त हुआ. इस प्रकार कुरानमें सङ्केत मात्रमें तीन सृष्टियोंकी बातें कही है. [यहाँ पर बादलका तात्पर्य सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजीसे हैं जिन्होंने इस नश्वर जगतमें तारतम ज्ञानकी वृष्टि की है.]

गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फिरस्ते रूहें उमत खास ।
फिरस्ते जौ गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम ॥ १७

कुरानमें गेहूँ, जौ तथा घासके रूपमें ब्रह्मसृष्टि ईश्वरीसृष्टि एवं जीवसृष्टिका उल्लेख है. वहाँ पर ईश्वरीसृष्टिको जौ, धर्मनिष्ठ ब्रह्मसृष्टिको गेहूँ तथा अवज्ञाकारी जीव सृष्टिको घासकी संज्ञा दी गई है.

मोती दरियाव से काढ्या महंमद, इन विध इत लिख्या सबद ।
घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो दोऊ उतरी दरियाव से जान ॥ १८

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि परमात्माने इस भवसागरसे मोतीके रूपमें मुहम्मदको खोज निकाला. वहाँ पर घास अर्थात् जीवसृष्टिको पशुओंका चारा अर्थात् पाशवी वृत्तियोंसे ग्रस्त कहा है. उनके अतिरिक्त ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टियोंका समुदाय परमधाम एवं अक्षरधामसे अवतरित हुआ कहा है.

याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप के लपेटे गए ।
इनों के बीच चले हुकम, रोज क्यामत को जाहेर खसम ॥ १९

इनको ही अन्य स्थानोंमें परमधामके उपवनोंके वृक्ष कहा है. उनकी निकटतासे ईश्वरीसृष्टिको भी परमधामके आनन्दका अनुभव हुआ. कयामतकी घड़ीमें इन्हीं ब्रह्मात्माओंके मध्य प्रकट होकर परब्रह्म परमात्मा अपना आदेश चलाएँगे.

बरकरार किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही क्यामत ।
ए फसल परहेजगार मोमिन, काफरों के तंबीह के दिन ॥ २०

परमात्माने अपने आदेशसे कयामतका समय निश्चित रखा है. ये सङ्केत कयामतकी इस घड़ीको प्रकट करते हैं. इस समय ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टिको लाभ प्राप्त होगा और जीवसृष्टिको ताड़ना मिलेगी अर्थात् उनको नरकाग्निमें जलकर शुद्ध होना पड़ेगा.

इस रोज फूंके करनाए, असराफील सूर कुरान के गाए ।
एक सूरें आखर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन ॥ २१

हदीसोंमें उल्लेख है कि इस्राफील फरिश्ता इस समय प्रकट होकर दुन्दुभी

बजाएगा और कुरानका गायन करेगा. उसकी दुन्दुभीके एक स्वरसे जगतमें प्रचलित बाह्य आडम्बर तथा दम्भ उड़ जाएँगे, दूसरे स्वरसे ब्रह्मात्माएँ जागृत होंगी एवं जगतके जीवोंको अखण्ड स्थान प्राप्त होगा.

सब उठें कबर थें अपनी, कायम किए क्यामत के धनी ।
इमाम सालबी कहे यों बनी, रसूल पूछें उमत अपनी ॥ २२

उस समय ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर सभी प्रसुप्त आत्माएँ शरीररूपी कब्रसे उठ जाएँगी अर्थात् जागृत हो जाएँगी. कयामतके समयके स्वामी इमाम महदीने प्रकट होकर नश्वर जगतके सभी जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थलोंमें प्रतिष्ठित किया. इमाम साल्हवीने अपने पुत्रसे इस प्रकार कहा, उस समय रसूल अपने समुदायके लोगोंसे कुछ प्रश्न करेंगे और उनका उत्तर चाहेंगे.

कहे क्यामतमें सबे उठाए, दस विध फैल पूछे जाए ।
बांदर सूरत होसी सुकनचीन, जिनों हिरदे में नहीं यकीन ॥ २३

कतेब ग्रन्थोमें कहा है, कयामतके समयमें सब जीवोंको उनकी कब्रोंमें-से उठाया जाएगा और उनके दस प्रकारके कर्मोंके विषयमें पूछा जाएगा. जो लोग अत्यन्त स्वार्थी तथा अविश्वासी (सुकनचीन) होंगे उनकी आकृति (वृत्ति) बन्दरकी जैसी होगी. ऐसे लोगोंके हृदयमें लेशमात्र भी विश्वास नहीं होगा.

सुअर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल के ढिग ना गए ।
गधे सूरत कहे हरामकार, जिनके बुरे फैल रोजगार ॥ २४

दूसरोंको कष्ट देकर अनधिकारसे धन प्राप्त करने वाले (हरामखोर) लोगोंकी आकृति सूअर जैसी होगी. ऐसे लोग कभी भी सत्य और परिश्रमके निकट नहीं जाते हैं. जो लोग अनधिकार चेष्टा करनेवाले तथा निषिद्ध व्यवहार एवं व्यवसाय करनेवाले होंगे उनकी आकृति गधोंके समान होगी.

सूद खानेवाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजक फंदे ।
न किया सेजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे पडे दोजक मार ॥ २५

व्याजकी सम्पत्तिका उपभोग कर अन्य लोगोंका शोषण करनेवाले लोग अन्धे

माने जाएँगे. उनका लोभ ही उन लोगोंको नरकके बन्धनोंकी ओर आकृष्ट करेगा. जिन लोगोंने इस समय प्रकट हुए इमाम महदीको नमन नहीं किया और उनकी पुकार नहीं सुनी वे बहरे होंगे और उनको नरककी यातना भोगनी पडेगी.

गूंगे कहे जालिम हुकम, वे सब के तले न ले सकें दम ।
पढे जुबां काटे पीब लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे ॥ २६

जो लोग अत्याचारी बन कर अन्याय पूर्ण शासन करेंगे वे गूँगे होंगे अर्थात् उनकी जिह्वा काटी जाएगी. ऐसे लोग सभ्य लोगोंके साथ बात नहीं कर पाएँगे. धर्मग्रन्थोंका मात्र बाह्य अर्थ कर धूर्त बने हुए लोगोंकी जिह्वा काटी जाएगी. उससे रक्त और पीव (मवाद) बहेगा. इस प्रकार निषिद्ध आचरण कर अच्छा दिखाने वाले लोगोंकी स्थिति इस प्रकारकी होगी.

मले दोजकी हाथ पाऊं दोए, ताए देखें भिस्ती अचरज होए ।
उडन वाले कहे मोमिन, मुतकी भी परोसी कहे तिन ॥ २७

ऐसा होने पर नरकमें पड़े हुए लोग हाथ मलकर पश्चात्ताप करेंगे. उन लोगोंकी इस दशाको देख कर बहिश्तोंमें रहनेवाले जीवोंको आश्चर्य होगा. ब्रह्मात्माओंको प्रेम और विश्वासके पङ्खोंके द्वारा उड़ान भरने वाली कहा है. ईश्वरीसृष्टि भी उनके निकट अक्षरधाममें रहने वालीं हैं.

ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन ।
चुगलखोर काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलोंको लगे घाउ ॥ २८

इन दोनों समुदायोंकी आत्माओंको जिन्होंने हर प्रकारसे दुःख दिया है उनको आगमें जलाकर शूली पर चढ़ाया जाएगा.चुगलखोरोंके हाथ-पाँव काट दिए जाएँगे एवं कठोर हृदयवालोंको भी बड़ा आघात पहुँचेगा.

ए दस भांतकी कही दोजक, जो बेफुरमान हुए हक ।
जिनहूं फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए ॥ २९

इस प्रकार सत्यसे विमुख बने हुए अवज्ञाकारी लोगोंके लिए (इमाम साल्हवीने) दस प्रकारके नरकका वर्णन किया है. जिन लोगोंका जैसा कर्म होगा उनको उसी प्रकारका फल प्राप्त होगा.

फुरमाए केतेक फेर उठाए, तकबरों दोजक हमेंसगी पाए ।
और जो कहे मोतीन के घर, सो खासी गिरो साहेबके दर ॥ ३०

जिन लोगोंने एक बार आदेशका उल्लंघन कर पुनः उसे स्वीकार किया उनको नरककी अग्निमें शुद्ध करके बहिश्तोंमें लिया जाएगा. वहाँ पर जिस स्थानको मोतियोंका घर कहा है परब्रह्म परमात्माके उस दिव्य परमधाममें ब्रह्मात्माओंका श्रेष्ठ समुदाय रहेगा.

उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे ।
जिनों इनोंकी दोस्ती लई, साहेबें पातसाहीं तिनको दई ॥ ३१

ऐसी आत्माओंकी सेवामें जो लगे रहेंगे उनको ईश्वरीसृष्टि कहा गया है. उन्होंने इन ब्रह्मात्माओंकी मित्रता प्राप्त की है, इसलिए परब्रह्म परमात्माने उनको इतना बड़ा साम्राज्य दिया है.

और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर ।
ए जो दुनियां का कह्या आसमान, दो टूकडे दिल कह्या जहान ॥ ३२

अब दूसरी कड़ीको सुनो एवं उस पर हृदयपूर्वक विचार करो जिससे क्षीर और नीर अर्थात् सत्य और असत्यका निर्णय हो सके. कतेब ग्रन्थोंमें इस प्रकार उल्लेख है कि कयामतके समय आकाश फट कर दो टुकड़ोंमें विभिक्त होगा. वस्तुतः यह नश्वर जगतके जीवोंके हृदयरूपी आकाशके लिए कहा है (हृदयके फट जाने पर इन लोगोंमें अखण्ड सम्पदा टिक नहीं पाएगी).

ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी कयामत बखत ।
बीच हवाके पहाड उडाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए ॥ ३३

निश्चय ही कयामतकी यह घड़ी अत्यन्त कठिन है. इस समय नरकाग्निकी ज्वालाएँ सबको सन्तप्त करेंगी. नश्वर जगतमें जो लोग पर्वतकी भाँति ऊँचा अभिमान रखते हैं वे हवामें उड़ जाएँगे.

बुजरकों धोखा क्यों ए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए ।
फितुए इनोंके जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब ॥ ३४

तथाकथित ज्ञानियोंका भ्रम किसी भी प्रकार दूर नहीं होता है. इसीलिए कयामतके समयको इस प्रकार कठिनाई पूर्ण कहा गया है. इन लोगोंके मनकी

भ्रान्तियाँ तभी दूर होंगी जब वे ऐसी कठिन घड़ीको प्रत्यक्ष देखेंगे.

ठंडे बजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखे आए ।
सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार ॥ ३५

नरककी अग्निमें जल कर शुद्ध होने पर इनके मनमें शीतलता छा जाएगी तभी वे यथार्थताको समझ पाएँगे. सभी अभिमानी लोग अपराधी बन गए. ऐसे नरकगामी लोगोंने ही इस कठिन समयको देखा.

अब जो सुनो खास उमत, खडे रहो दोजक एक बखत ।
जिन भागो गोसे रहो खडे, देखो दोजकियों खजाने बढे ॥ ३६

जो श्रेष्ठ आत्माएँ हैं वे अब सुनें, उनको अपने प्रेम और विश्वासमें दृढ़ रहना चाहिए. सब अधर्मी लोगोंके लिए नरककी अग्निकी लपटें चारों ओर छा जाएँगी. ऐसे समयमें अपने धैर्य एवं विश्वास पर खड़े रहो. अपने कर्तव्य पथसे विचलित नहीं होना. देखो, नरकगामियोंके लिए यातनाएँ बढ़ रहीं हैं.

भिस्त रजवान मोमिन निगेहवान, दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान ।
तहां ताहीं बखत पोहोंचे सबन, पैदरपें जले अगिन ॥ ३७

जिन जीवोंके ऊपर ब्रह्मात्माओंकी कृपा होती है उनको सबसे उच्च बहिश्त प्राप्त होगी. जो लोग अवज्ञाकारी होंगे उन्हें नरककी यातनाएँ प्राप्त होंगी. वे लोग जब तक परमात्मा पर विश्वास नहीं लाएँगे तब तक नरककी अग्निमें बार-बार जलते रहेंगे.

गुजरे हैं हदसों काफर, दूर दराज जानी थी आखर ।
दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखीयों हाल इन ॥ ३८

ऐसे अवज्ञाकारी लोग पापकी सीमाएँ पार कर चुके हैं. उनको कयामतकी घड़ी दूर लग रही थी. इसीलिए उनके दुःख दीर्घ काल तक चलते रहे. इस प्रकार अवज्ञाकारी लोगोंने नरककी अनेक सम्पदाएँ (यातनाएँ) प्राप्त कीं हैं.

करे मोअलिम नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए ।
जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल ॥ ३९

धर्मग्रन्थोंके अध्येता विद्वान् लोग अपने मुखसे दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि

परमात्माका नाम ही सत्य है उसीको याद करना चाहिए. जब वे कुरानके गूढ़ रहस्योंको ग्रहण करेंगे तब उन्हें कयामतके इन सङ्केतोंकी जानकारी प्राप्त होगी.

साखी-

दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे माहीं ।
सात हजार साल चालीस, नीके देखियों तांहीं ॥ ४०

इस दुनियाँकी आयुके विषयमें कुरानके पहले सिपारेमें सङ्केत किया है. वहाँ पर दुनियाँकी आयु सात हजार चालीस वर्षकी बताई गई है. इस पर भलीभाँति विचार करना चाहिए.

तैतालीस जुफ्त जो कहे, हर जुफ्त सतर बहार भए ।
हर बहार सातसौ बरस लए, हर बरस तीनसौ साठ दिन दए ॥ ४१

कुरानके तीसवें सिपारेमें अमेतसालून सूरतमें तैंतालीस जोड़े (जुफ्त) कहे गए हैं. प्रत्येक जुफ्तके सत्तर बहार एवं प्रत्येक बहारके सात सौ वर्ष कहे गए हैं. प्रत्येक वर्षमें तीन सौ साठ दिन गिने जाते हैं.

याके एकइस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन ।
ए रसूलके आएकी मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल ॥ ४२

इस प्रकार एक्कीस लाख सात हजार वर्ष होते है (प्रेम और सेवाके कारण ब्रह्मात्माओंको एक वर्ष एक दिन जैसा लगता है). यह गणना आदम (सफीअल्लाह) के पश्चात् रसूल मुहम्मदके अवतरण तककी है. यह घड़ी रसूल मुहम्मदके आगमनके लिए कही गई है. इस गणनाको तुम हृदयपूर्वक समझ लो.

पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे ।
त्रेसठ बरस उमरके लिए, छे हजार नबे कम किए ॥ ४३

उन इक्कीस लाख सात हजार दिनके पाँच हजार आठ सौ सैंतालीस वर्ष होते हैं. रसूल मुहम्मद त्रिसठ वर्ष तक रहे हैं. उसको मिलाकर छः हजार वर्ष पूर्ण होनेमें नब्बे वर्ष शेष रहते हैं.

इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर ।
अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस ॥ ४४

जब रसूल मुहम्मदने जगतसे प्रयाण किया अब तदुपरान्तकी चर्चा करते हैं. ग्यारहवीं सदी मुहम्मदीके दस वर्ष शेष रहने तक दुनियाँकी आयुके सात हजार वर्ष व्यतीत होते हैं.

इतथें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम ।
जोडा पर जोडा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे ॥ ४५

अब यहींसे इमाम महदीका समय आरम्भ होता है. चालीस वर्ष साम्राज्यके बाद ब्रह्मज्ञानके प्रभातकी लीला पूर्ण हुई. जब बीस-बीस वर्षके दो जोड़े अर्थात् चालीस वर्ष व्यतीत हुए तब इमाम महदीने ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलाया. यहीं तक दुनियाँकी उमर मानी गई है अर्थात् इससे आगे उन्होंने जगतके जीवोंको कर्मके विधानसे मुक्त कर भक्तिके पथ पर चलनेका उपदेश दिया.

तिनमें जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर ।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखर ॥ ४६

चालीस वर्षकी प्रभात लीलामें दस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मात्माओंकी जागनीलीला मानी गई है. उस समय सारी दुनियाँ बुद्धनिष्कलङ्ककी शरणमें आईं. मुहम्मदी ग्यारहवीं सदीके पश्चात् (बारहवीं सदीके) तीस वर्ष व्यतीत होने पर दुनियाँके लिए कयामतकी घड़ी सुनिश्चित हुई.

सतर बरस पुल सरात के कहे, सो उठने कयामत बीचमें रहे ।
पुल सरात दुख कहीये क्यों कर, काफर जलें जुलजुले आखर ॥ ४७

तदुपरान्त बारहवीं सदीके शेष सत्तर वर्ष पुलेसिरातके कहे गए हैं. कयामतके समयमें जागृत होने तथा इस्राफील फरिश्ताके दुन्दुभी बजानेका यही समय है. इस समय अवज्ञाकारी लोग तलवारकी धार सदृश पुलेसिरातसे कट कर नरकमें गिरेंगे. इस प्रकार अन्तिम समयमें अवज्ञाकारी लोग विभिन्न आपदाओंसे पीड़ित होंगे.

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं क्यामत के पूरे भए ।
ए तीसरी बडी फिरस्तों की फजर, पीछे उठ खडी दुनियां नूर नजर ॥ ४८

कुरानमें दस और दो अर्थात बारह गुर्ज कहकर बारहवीं शताब्दी समाप्त होने पर कयामतकी घड़ीकी बात की है. वह समय पूर्ण हो गया है. तदुपरान्त तेरहवीं सदीमें फरिश्तोंकी जागृतिकी चर्चा की गई है. इसके उपरान्त जगतके सभी जीव अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें अङ्कित होकर मुक्तिस्थलोंका सुख प्राप्त करेंगे.

प्रकरण २२ चौपाई ५१६

दिन क्यामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालों ने लहे ।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनोंकी सक ॥ १

इस प्रकार कयामतके दिनोंकी गणना पूर्ण हो गई. ब्रह्मात्माओंके समुदायने इस घड़ीको पहचान लिया. जिन लोगोंके भाग्यमें नरककी अग्नि लिखी गई है उनके मनसे कयामतकी घड़ीके विषयमें शङ्काएँ दूर नहीं होतीं हैं.

पुरसिसका दिन साहेब देखावे, क्यामत कौल दूजा कोई न पावें ।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझे पाक दिल उजीयारे ॥ २

परब्रह्म परमात्मा इमाम महदीके रूपमें प्रकट होकर सबको न्याय देनेका (पुरसिसका) दिन दिखा रहे हैं. कयामतकी इस घड़ीको ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त कोई नहीं जान सकता है. कुरानके अम्म सिपारेके छत्तीसवें अध्यायमें पाँच स्वरूपों (व्रज तथा रासके स्वरूप आदेशके स्वरूप श्रीदेवचन्द्रजी एवं श्रीप्राणनाथजी) का वर्णन है. पवित्र एवं उज्ज्वल हृदयवाली ब्रह्मात्माएँ ही उसके तात्पर्यको समझ सकतीं हैं.

ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें ।
और झूठा काम बदफैली करें, सो दोजख की आगमें परें ॥ ३

इन पाँचों स्वरूपोंको पहचान कर जो आत्माएँ इनके आदेशका पालन करतीं हुईं शुभ कार्य करतीं हैं वे मुक्तिस्थलोंमें वास करतीं हैं. जो लोग इनको नहीं पहचानते हैं एवं भ्रममें पड़ कर मिथ्या आचरण करते हैं वे नरककी अग्निमें पड़ते हैं.

हमेंसां दोजकी बदकार, रोज क्यामत के हुए खुवार ।
ए दिन किने ना किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर ॥ ४

दुराचारियोंको सर्वदा नरकके दुःख प्राप्त होते हैं. कयामतके दिन भी वे मुक्तिफलसे वञ्चित रह कर हानि प्राप्त करते हैं. कयामतका यह दिन आज तक कोई भी निश्चित नहीं कर पाया. जिन्होंने इस दिनकी सूचना दी है उन इमाम महदीको परमात्माके रूपमें पहचानो.

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन ।
उस दिन बदला होवे अती जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर ॥ ५

आज तक कोई भी अखण्डका मार्ग नहीं जानता था एवं कयामतकी घड़ीसे भी परिचित नहीं था. इस समय सद्गुरुने प्रकट होकर तारतम ज्ञानके द्वारा सभीको सचेत किया. कयामतके दिन सब जीवोंको अपने-अपने अच्छे कर्मोंका फल प्राप्त होगा. सद्गुरु अपने ज्ञानके वचनरूपी हाथोंसे सबके अन्तःकरणको दुनियाँसे मोड़ कर परमात्माकी ओर लगाएँगे.

तित पोहोंचके सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन ।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे ॥ ६

परमधाममें पहुँच कर जिन्होंने परमधामकी सुधि दी है और तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत कर इस जगतमें भी महत्ता प्रदान की है, उनको पहचानो. निश्चय ही कयामतकी इस घड़ीको आज तक कोई समझ नहीं पाया. सभी जीवोंको अपने-अपने कर्मोंके अनुसार फल देकर उन्हें अखण्ड सुख प्रदान करनेवाले सम्राट इमाम महदी (श्रीप्राणनाथजी) कयामतकी इस घड़ीको प्रत्यक्ष दिखा रहे हैं.

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसीके दाखिल होए ।
कूवत तिन समें कहूंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए ॥ ७

न्यायकी इस घड़ीमें कोई भी किसीको लाभ नहीं पहुँचा पाएगा एवं कोई भी किसीके दुःख सुखमें सहयोगी नहीं हो पाएगा. उस समय किसीका भी चातुर्य अथवा अहङ्कार कहींका कहीं उड़ जाएगा. इसलिए कोई भी किसीको

लाभ नहीं पहुँचा सकेगा (सबको अपने ही शुभाशुभ कर्मोंका यथायोग्य फल प्राप्त होगा).

हुकम हादिका साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान ।
मोमिन यकीनदारोंको चाहें, हकमें भी उन ही को मिलाए ॥ ८

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके आदेशसे इमाम महदी श्रीप्राणनाथजी सभीको यहाँ सन्देश दे रहे हैं और ब्रह्मात्माओंको परमात्माकी पहचान करवा कर उनकी अनुशंसा (सिफारिश) कर रहे हैं. परब्रह्म परमात्मा (उनके प्रति) विश्वास करने वाली ब्रह्मात्माओंसे प्रेम करते हैं और उनको ही दिव्य परमधामकी अपनी लीलाओंमें सम्मिलित करते हैं.

जब जोहर हुआ रोजा और हज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज ।
ए बात साहेबें छत्रसाल सों कही, घर इमाम बिलंदी छताको दई ॥ ९

कुरान और हदीसोंमें कहे अनुसार जब रोजा और हज्जका दिन प्रकट हो गया अर्थात् ब्रह्मात्माओंको परब्रह्मके स्वरूपकी पहचान कर उनके प्रति समर्पित होनेका समय प्रकट हो गया तब स्वयं परमात्माने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर न्यायाधीश बनकर कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर दिया. महामति श्रीप्राणनाथजीने ये बातें छत्रसालको बताईं एवं दिव्य परमधाममें रहने वाली ब्रह्मात्माओंके मध्य उनको सम्मान दिया.

प्रकरण २३ चौपाई ५२५

नौमी आगे अरफा इद कही, ले दसमी आगूं सब लीला भई ।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कै विध ॥ १

कुरानमें नौवीं सदीके आगे दसवीं सदीको अरफा इद कहा है. (इसी समय सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी एवं ब्रह्मात्माओंका अवतरण हुआ). दसवींसे लेकर ग्यारहवीं सदी तक इस जगतमें ब्रह्मात्माओंकी जागनीलीला हुई (विभिन्न स्थानोंमें तारतम ज्ञान पहुँचनेसे ब्रह्मात्माएँ जागृत हुईं). ग्यारहवीं सदीके अन्तर्गत अनेक पड़ाव हुए (श्रीतारतम सागरका अवतरण हुआ). कुरानमें इस प्रसङ्गको विभिन्न प्रकारसे उल्लेख किया गया है.

ए अग्यारहीं बीच बडो बिस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार ।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आएते जो उस्तबार ॥ २

इसी ग्यारहवीं सदीमें तारतमसागररूप ब्रह्मवाणीका विस्तार हुआ. इसी सदीमें परब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर श्रीदेवचन्द्रजीको तारतम ज्ञान दिया एवं श्रीप्राणनाथजी सहित ब्रह्मात्माएँ तथा अनेक अवतारीपुरुष प्रकट हुए. इसी समय परब्रह्म परमात्माने परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदाएँ एवं शोभा प्रदान की. जिसके फलस्वरूप तारतम सागररूप ब्रह्मवाणीका विस्तार हुआ.

छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत ।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जलें बदकार ॥ ३

परब्रह्म परमात्माके साक्षात्कार एवं ब्रह्मात्माओंके मिलनकी दिव्य घड़ी आज तक गुप्त (अज्ञात) थी. श्रीप्राणनाथजीने विभिन्न धर्मग्रन्थोंके प्रमाणोंको स्पष्ट कर कयामतका दिन दिखा दिया. ग्यारहवीं सदीमें ब्रह्मात्माएँ इस नश्वर खेलमें भी परमधामके अपार सुखोंका अनुभव कर परमधामकी ओर चल पड़ीं. तदुपरान्त बारहवीं सदीमें दुष्कर्म करनेवाले जीवोंको नरककी अग्निमें तपाकर शुद्ध किया.

जिन पाई रोज क्यामत, सो उठे फजरके नूर बखत ।
फजर पीछे जब उग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥ ४

जिन लोगोंने कयामतकी घड़ीको पहचान कर धर्मका मार्ग ग्रहण किया वे ब्रह्मज्ञानके प्रभातमें अपने मूल घर दिव्य परमधाममें जागृत हुए. ब्रह्मज्ञानके प्रभात होने पर जब दिनका उदय हुआ तब तो सभी जीवोंने हाय, हाय करते हुए पश्चात्ताप किया कि हम अभी तक परब्रह्म परमात्माको पहचान नहीं पाए.

तब तो दरवाजा मूंदके गया, पीछे तो नफा काहूं को न भया ।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील ॥ ५

बारहवीं सदीके पश्चात् पश्चात्ताप कर एक बन्दगीके बदले हजार बन्दगीका फल प्राप्त करनेका द्वार बन्द हो गया. (सभीको अपने कर्मोंके अनुसार फल प्राप्त करनेका समय पुनः आ गया). तदुपरान्त किसीको भी विशेष लाभ प्राप्त

नहीं हुआ. (जिन्होंने जैसे कर्म किए थे उनको उसीके अनुसार फल प्राप्त होने लगा.) सभी जीवोंके हृदयमें स्थित अजाजील फरिश्ता भी नरककी अग्निमें जलकर शुद्ध हो गया अर्थात् परब्रह्म परमात्माकी पहचान न होनेसे पश्चात्ताप कर पुकार करने लगा. तब इस्त्राफील फरिश्ताने तारतम्य ज्ञानके द्वारा सबको जागृत कर मुक्तिस्थलोंमें प्रतिष्ठित किया.

एक सूरें उडाए के दिए, दूसरे तेरहींमें कायम किए ।
यों क्यामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन ॥ ६

कुरानके अनुसार इस्त्राफील फरिश्ताने अपनी दुन्दुभीके एक स्वरसे नश्वर जगतके जीवोंके अभिमान एवं मिथ्याचारको उड़ा दिया तथा तेरहवीं सदीमें अपनी दुन्दुभीके दूसरे स्वरसे सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें प्रतिष्ठित किया अर्थात् बुद्धजीने तारतम्य ज्ञानके द्वारा अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटाकर जीवोंको जागृत कर उनको मुक्तिस्थलका सुख दिलाया. इस प्रकार कयामत अर्थात् आत्मजागृतिका दिन प्रकट हुआ. कुरानमें वर्णित महदी मुहम्मद अर्थात् श्रीप्राणनाथजीने ब्रह्मात्माओंको जागृत कर उन्हें इस जगतमें प्रकट कर दिया.

प्रकरण २४ चौपाई ५३१

श्री कयामतनामा ग्रन्थ (बड़ा) सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर